नेता जी का गौ प्रेम ।



नेता जी श्री सुभाषचन्द्र बोस
कष्ट पीडित गायों में खड़े हैं

गाय ही क्यों ?



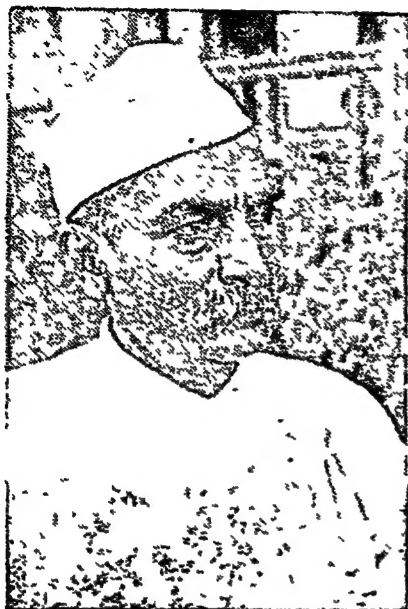
—हरदेव सहाय

प्रकाशकः—
गो वंश रक्षिणी सभा,
हिसार

द्वितीयावृत्ति ५०००
मूल्य एक रुपया

मुद्रकः—
अर्जुन प्रेस, श्रद्धानन्द बाजार,
देहली

भूमिका


देशरत्न डा० राजेन्द्रप्रसाद जी

श्री हरदेवसहाय ने गाय के प्रश्न का बहुत विस्तृत और गहरा अध्ययन किया है। इतना ही नहीं उन्होंने जो अपने अध्ययन में पाया है उसका साक्षात अनुभव भी बहुत अंशों में किया है। इसलिए वह जो कुछ इस सम्बन्ध में कहें आदर पूर्वक सुनने योग्य है। इस छोटी पुस्तिका में उन्होंने "गाय ही क्यों ?" और "भैंस क्यों नहीं" जैसे प्रश्न पर बहुत जानकारी के साथ विवेचना की है और मैं समझता हूँ कि गो सेवकों के लिए यह बहुत उपयोगी पुस्तिका होगी।

राजेन्द्र प्रसाद

विषय-सूची



	पृष्ठ
१ निवेदन	५
२ महत्व	६
३ आवश्यकता	१७
४ गायों की सख्या तथा शक्ति की कमी	१७
५ संसार के अन्यान्य देशों में गोवंश की स्थिति	२३
६ गोवंश के ह्रास से हमारी हानि	२७
७ प्रति वर्ष एक हजार आदमियों पर मृत्यु संख्या	२८
८ हिन्दू, बौद्ध, तथा मुस्लिम समय में गायों की हालत	३२
९ गोवंश को नुकसान क्यों पहुँचा ?	४३
१० गोवंश कैसे बचे तथा उन्नत हो	५४
११ क्या करें ?	६१
१२ नसल सुधार	६३
१३ दुग्ध-शाला या डेयरी-फार्म	७४
१४ गो वध के कारण	८१
१५ गोवध पर कानूनी प्रतिबन्ध	९०
१६ गाय और भैंस	९९
१७ भैंसों का महत्व क्यों बढ़ा ?	११७
१८ सेवा ग्राम का सफल अनुभव	१२१
१९ गो सेवा संघ	१२४
२० गाय और सांड के लिए बछड़ा खरीदने के लिये	१२६
२१ पंच गव्य पदार्थों के गुण	१३१
२२ कुछ विचारणीय आंकड़े	१५१



निवेदन

देश में दिन-दिन दूध की कमी होती जा रही है, जो मिलता है वह भी शुद्ध तथा सस्ता नहीं। आवश्यक तथा अच्छा दूध, घी न मिलने के कारण लोगों की सेहत खराब आयु कम तथा बिमारियां दिन-दिन अधिक बढ़ रहीं हैं वैलों की संख्या पर्याप्त नहीं। अतः खेती की पैदावार भी पुरी नहों होती। नसल-सुधार के लिये अच्छे तथा आवश्यक सांड भी नहीं। विदेशी सरकार को तो न लोगों की सेहत की परवाह और न ही आवश्यक शुद्ध तथा सस्ता दूध, घी उत्पन्न करने की ओर ध्यान। सरकारी रिपोर्टों के अनुसार ही देश में एक अरब मन दूध, दो करोड़ से अधिक वैल और दस लाख सांडों की कमी है। इतनी कमी होने पर भी सरकार ने न हीं गोवंश को कसाई की छुरी से बचाने का कोई वास्तविक उपाय किया है, न बम्बई कलकत्ता इत्यादि बडे-बड़े शहरों में कत्ल होने वाली अच्छी दुधारू गायों को कत्ल से बचाने का काम। सरकारी नसल-सुधार का कार्य भी बहुत कम है जो हैं वह भी लाभदायक नहीं।

विदेशी सरकार से पराधीन देश के लोगों को आवश्यक तथा शुद्ध दूध घी देकर उन्हें बलवान तथा बुद्धिमान बनाने की आशा नहीं की जा सकती। ऐसी सरकार का लाभ तो उस देश

के लोगों को कमजोर बना कर रखने में ही था। रावण ने भी ऐसा ही किया था गोस्वामी तुलसीदास जी रामायण के बालकांड में लिखते हैं—जब रावण का इस देश पर प्रभाव जम गया उसने अपने सैनापतियों को बुला कर कहा—

सुनहु सकल रजनी चरयूथा। हमरे वैरी विबुद्ध बरुथा॥
ते सन्मुख नहीं करहीं लड़ाई। देखि सबल रिपु जाही पराई॥
तिन कर मरन एक विध होई। कहौं बुझाय सुनहु सब कोई॥
द्विज भोजन मख हौम सराधा। सब कर जाय करहु तुम बाधा॥
क्षुधा क्षीन बलहीन सुर सहज ही मिलहि आय।
तब मरिहुँ के छाडि हौं भली भांति अपनाय॥

रावण के इतना कहने पर उसके सैनापतियों ने जिस-जिस जगह गाय और ब्राह्मण मिले वहां-वहां आग ही लगा दी।

जैसा कि—

जेहि-जेहि देश धेनू द्विज पांव ही। नगर ग्राम पुर आग लगावहिं॥

विदेशी सरकार ने चमड़े हड्डी खून इत्यादि का व्यापार तथा व्यवहार बढ़ा कर कत्ल को प्रोत्साहन ही दिया। सरकार ने जो किया वह उसके अपने लिये लाभदायक था। पर यहां के लोगों को तो अपनी सेहत तथा शारीरिक शक्ति को ठीक रखने के लिये गोवंश की उन्नति तथा रक्षा करनी चाहिये थी। दुख है कि उन्होंने उसे भुला ही दिया मुसलमानों को क्या कहें हिन्दुओं के लिये गोरक्षा एक धार्मिक कर्तव्य होने पर भी उन्होंने इधर जितना ध्यान देना चाहिये था नहीं दिया। गाय की उन्नति तथा

रक्षा का सवाल केवल धार्मिक नहीं विशुद्ध आर्थिक तथा शारीरिक महत्व रखता है इसीलिय कितने ही मुसलमान बादशाहों ने गोवश की रक्षा और उन्नति की।

इस पुस्तक की प्रथम वृति हिन्दी तथा उर्दू में प्रकाशित हुई थी। जनता ने इसे पसन्द किया देश भर में सब से अधिक प्रकाशित होने वाले पत्र 'कल्याण' ने मई सन् १९४४ के अङ्क में सारी पुस्तक तथा अन्य पत्रों ने इसके कुछ-कुछ भाग प्रकाशित किये। इस पुस्तक के छापने तथा तैयार करने में भिवानी निवासी रा० ब० पं० श्रीदत्त जी, ला० प्रेमचन्द जी लुहारी वाले ने विशेष सहयोग तथा सहायता दी जिनका आभारी हूँ।

यह दूसरी आवृति कुछ विषय बढ़ा कर प्रकाशित की जा रही है इसमें सेवक के कल्याण गोअङ्क में छपे कुछ लेख श्री धर्मलालसिंह जी मन्त्री गोशाला दर्भङ्गा का लेख, गायों भैंसों की प्रान्तवार संख्या दी, गो-दूध के गुण, पशु चिकित्सा इत्यादि कुछ नये विषय सम्मिलित कर दिये हैं। इस पुस्तक की भूमिका लिखने के लिये बाबू राजेन्द्रप्रसाद जी मन्त्री कृषि तथा खाद्य विभाग भारत सरकार ने अपना अमूल्य समय दिया कागज तथा अङ्क भारत सरकार के कृषि विभागके उपप्रधान सर दातारसिंहजी ने दिलाने की कृपा की। चित्रों के ब्लाक श्री हनुमानप्रसाद जी पोद्दार सम्पादक 'कल्याण' की कृपा से मिले, पुस्तक छपवाने के

लिये श्री कन्हैयालाल जी मित्तल 'शान्तेश', भिवानी ने परिश्रम किया। इन सब सज्जनों का कृतज्ञ हूँ।

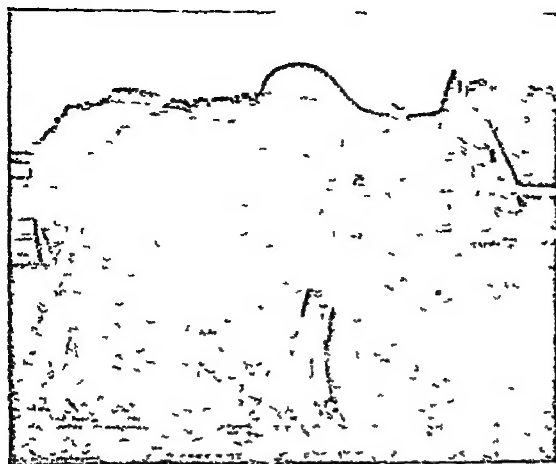
कृपया सहृदय पाठक महोदय मूक तथा उपयोगी प्राणियों के नाम पर दी हुई यह भेंट स्वीकार करें तथा इसे पढ़ कर जो सेवा तथा उन्नति हो सके करें। यह गायों की ही सेवा तथा उन्नति नहीं हमारी अपनी भी है गाय के साथ हमारी ही नहीं आर्थिक शारीरिक तथा सामाजिक उन्नति का सम्बन्ध " ठीक कहा है।

'गाय हैं तो हम हैं। गाय नहीं तो हम नहीं'

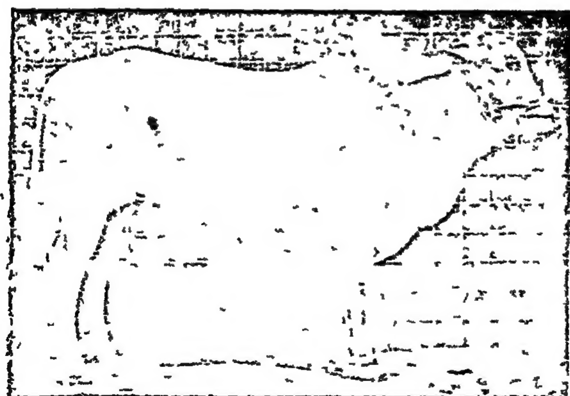
गांव सातरोद छोटी, जि० हिसार
आश्विन कृ० २ सं० २००३
१३-६-१६४६

हरदेव सहाय

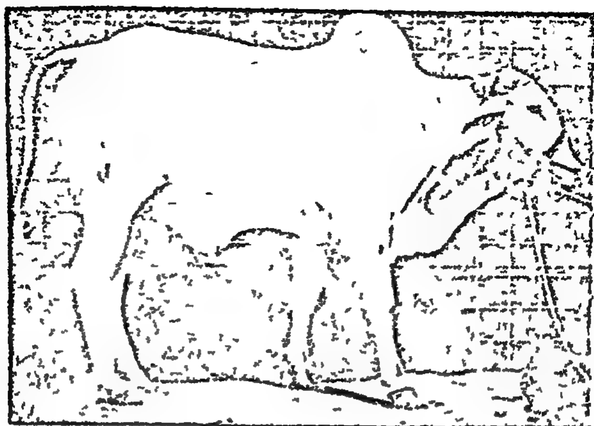




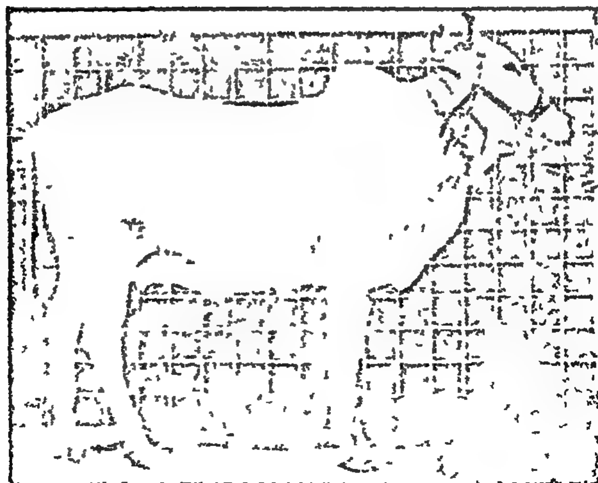
हिसार सांड



राठ सांड



मेवाती सांड



मेवाती गौ

महत्व

माननीय सज्जनों के विचार

[१]

भारत की सुख समृद्धि गौ और उसकी सन्तान की समृद्धि के साथ जुड़ी हुई है। गो-रक्षा मुझे बहुत प्रिय है। मुझे कोई पूछे कि हिन्दू धर्म का बड़ा से बड़ा बाह्य स्वरूप क्या है, तो मैं गोरक्षा को बताऊं। हिन्दुस्तान में गाय ही मनुष्य का सब से सच्चा साथी, सब से बड़ा आधार थी यही हिन्दुस्तान की एक कामधेनु थी। गो रक्षा हिन्दु धर्म की दी हुई दुनिया के लिए बख्शिश है, और हिन्दू धर्म भी तभी तक रहेगा जब तक गाय की रक्षा करने वाले हिन्दू हैं। मेरे विचार के अनुसार गोरक्षा का सवाल स्वराज्य के प्रश्न से छोटा नहीं। कई बातों में तो इसे स्वराज्य के सवाल से भी बड़ा मानता हूं।

—महात्मा गांधी

[२]

यदि हम गौओं की रक्षा करेंगे तो गौएं हमारी रक्षा करेंगी। गांव की आवश्यकता के अनुसार प्रत्येक घर में तथा घरों के प्रत्येक समूह में एक गोशाला होनी चाहिए। गौओं को बिकरी के लिए मेलों में भेजना बिल्कुल बन्द कर देना चाहिये क्योंकि इस से कसाइयों को गायें खरीदने में सुविधा होगी।

—महामना पं० मदनमोहन जी मालवीय

[३]

हिन्दुस्तान किसानों का मुल्क है। खेती का शोध भी हिन्दुस्तान में ही हुआ। गाय बैलों की अच्छी हिफाजत पर हिन्दुस्तान की खेती निर्भर है। हिन्दुस्तानी सभ्यता का नाम ही गोसेवा है। लेकिन आज गाय की हालत हिन्दुस्तान में उन देशों से कहीं अधिक खराब है जिन्होंने गोसेवा का नाम नहीं लिया था। हमने नाम तो लिया पर काम न किया। जो हुआ, सो हुआ। लेकिन अब तो चेतो।

—श्री विनोबाजी भावे

[४]

गोसेवा हिन्दू धर्म का एक विशेष अंग है ऐसा माना गया है। आज के समान कठिन समय में यदि हम सब भारत-वासी एक होकर गोसेवा के राष्ट्रीय धर्म का पालन न करेंगे तो मुझे डर है कि गायें हिन्दुस्तान से मिट जायंगी।

—श्रीमती जानकीदेवी बजाज

[५]

गोसेवा और गोवंश की उन्नति भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। हिन्दू समाज में हजारों वर्षों से गौ का स्थान जननी माता के तुल्य माना गया है। जन्म से लेकर अन्तिम समय तक प्रत्येक पद में हमें गोवंश की सहायता करनी चाहिये। ऐसी अवस्था में सभी भारतवासियों को गोवंश के ह्रास और

अवनति को रोकने और उसकी वृद्धि और उन्नति के उपायों को कार्यान्वित करने में सहयोग देना चाहिये।

युक्त प्रदेश के प्रधान मन्त्री
पं० गोविन्दवल्लभ पन्त

[६]

भारतवर्षमें गोपालन सनातनधर्म है। आज संसार भरमें सबसे अधिक गोवंशकी संख्या इसी देशमें है। पर अधिकांश स्थानोंमें गो-वंशकी अवस्था अत्यन्त शोचनीय और हृदय-विदारक है। अभी समय है, सच्ची सेवा और गोपालनका उपाय सोच निकालना चाहिये।

—देशरत्न बाबू राजेन्द्रप्रसादजी

[७]

हमारे पूर्व पुरुष सदा से ही गोरक्षा का महत्व जानते थे। मानव जीवनके सभी अङ्गोंका अपने अन्दर समावेश करने वाले हिन्दु धर्मने गोके प्रति मनुष्योंके कर्तव्यका विधान विशेष आग्रहके साथ किया है। शास्त्र उसकी रक्षा तथा पूजा करनेको कहते हैं।

—श्री श्यामाप्रशाद मुकर्जी प्रधान हिन्दु महासभा

[८]

यह अत्यन्त आवश्यक है कि नये विधानमें गोरक्षा प्रथम स्थान पाये। तबही राष्ट्र ठीक बन सकेगा। गोरक्षाके

विना राष्ट्र प्राणहीन होगा। हर एक राष्ट्रीय व्यक्ति का कर्तव्य है कि इस ओर ध्यान दे।

—महाशय खुशहालचन्दजी प्रधान आर्य प्रादेशिक सभा लाहौर

[९]

गोशाला और पिञ्जरापोल आदि संस्थायें भारतवर्ष की एक परम्परागत सम्पत्ति हैं। पशुओंके प्रति भारत-वासियोंके प्यार और श्रद्धाके यह जीते जागते उदाहरण हैं।

—सरदारबहादुर सर दातारसिंह जी।

[१०]

प्राय: प्रत्येक हिन्दु गौ को माता कहकर पुकारता है गौके प्राण बचानेके लिये वह अपने प्राणोंकी आहुति दे देगा। परन्तु वे दिन अब चले गये। हिन्दु जाति आज दुर्बल हो गई है। आज हम सभी बातों पर पाश्चात्य दृष्टिकोणसे ही विचार करने लगे हैं। यही कारण है कि हमारी इस पवित्र भूमि में प्रतिवर्ष लाखों करोड़ों की संख्या में गाय और बैल काटे जाते हैं। और इसके विरोधमें उंगली तक नहीं उठाते। हमारी गौशालाओंका बुरा हाल है दूसरी जातियां गोधनकी वृद्धिमें बड़ी तेजीके साथ अग्रसर हो रही हैं। दूसरे देशोंमें प्रति मनुष्य दूधकी खपत भी अधिक है। गाय हमारे लिये बड़े ही आदर और प्रेमकी वस्तु है। हमें सब प्रकार उसकी रक्षा एवं उन्नति के लिये कटिबद्ध होना चाहिये।

—श्री भक्तवर जयदयालजी गोयन्दका
(कल्याण के गो अङ्क से)

[११]

कोई भी जातियां देश गायके बिना उच्च सभ्यता नहीं प्राप्त कर सकी है । पृथ्वी पर सब से अच्छा पोषण गाय पैदा करती है । घास पात खाकर आरोग्यशक्ति और पोषण देने वाले दुग्धान्न देती है । जहां गाय है वहीं सभ्यता बढ़ती है, पृथ्वी उपजाऊ होती है, घर अच्छे बनते हैं और मनुष्योंका ऋण चुक जाता है । (कल्याण के गो अङ्कसे)

—एल्फ ए० ह्वहने

[१२]

गो बिना ताज की महारानी है, उसका राज्य सारी समुद्रवसना पृथ्वी पर है । सेवा उसका विरद है । और जो कुछ वह लेती है, उसे सौ गुना करके देती है ।

(कल्याण गो अङ्क से) —श्री मालक म० आर, पेटर्सन

अमरीका टेनसी प्रान्त के गर्वनर

[१३]

गाय ही सभ्य मानव समाज की धाय है । किसी भी देश की सभ्यता की उन्नति का अनुमान करने के कई साधन बताये जाते हैं । कहीं लोग पुस्तकों पर से ही मानव सभ्यता की कल्पना करते हैं । कहीं धर्म मन्दिरों को ही प्रधानता दी जाती है । किन्तु गाय द्वारा ही संस्कृति का अनुमान लगाया जासकता है । हमारी सभ्यता तो गोप्रधान सभ्यता ही है । जहां गो वंश उन्नत न हो वहां जाति का गुजर नहीं हो सकता । (गोरक्षा)

(कल्याण गो अङ्कसे) —श्री मिलो हेस्टिंगस ।

[१४]

आज भारत का मुख्य प्रश्न है पर्याप्त परिमाण में दूध का मिलना और गौवंश को सुधारना।

(कल्याण गो अङ्कसे) —कर्नल मैककैरिसन

[१५]

जाति के लोगों का भाग्य उनकी गायों के साथ दृढ़ रूप से संकलित है। दुग्धान्नों के बिना वे कभी जीवित नहीं रह सकेंगे।

(कल्याण गो अङ्क से) अमेरिका के प्रेजीडेण्ट हर्बर्ट हुवर।

[१६]

गुरुश्रेष्ठ लोकमान्य तिलक की यह भावना थी कि मुझे चाहे मार डालो, पर गौपर हाथ न उठाओ, यही बात दिल्ली में कांग्रेस के सभापति की हैसियत से पंडित मालवीय जी ने कही थी। हिन्दू मुसलमानों को एक हो जाने के लिये कहते हुए उन्होंने ये मर्मस्पर्शी शब्द कहे थे, मुझे लेलो, अगर चाहो तो मेरे प्राण लेलो, पर गाय को छोड़दो। उसने आपके एक बालक को भी धक्का नहीं पहुँचाया है'। अधिकांश हिन्दुस्तानियों का जब यह भाव है तब हिन्दुस्थान में एक गौ का भी वध कैसे उचित हो सकता है। लेकिन अगर सरकार गौ वध बन्द न रे तो हम को करना होगा।

कल्याण गो अङ्कसे) बम्बई में मि० बैपटिष्टा का भाषण

[१७]

थोड़े से गोमांसाहारियों के लिए गोहत्या जारी रहे और जिनका दूध का स्वार्थ है वे सच्ची चिल्लाहट मचा कर ही रह जावें यह आश्चर्य है।

—कलकत्ता हाईकोर्ट के जज सर जान उडरफ।

[१८]

गोरक्षा इस देश के नर नारी, सबके लिए बड़ा भारी कर्तव्य है। दूध घी पर ही भारतवासियों का जीवन निर्भर है। जब से गाय बैल बड़ी निष्ठुरता से मारे जाने लगे हैं तब से हमें चिन्ता हुई कि हमारे बच्चे कैसे जीवेंगे।

(कल्याण गो अङ्क से) पंजाबकेशरी लाला लाजपतराय जी

[१९]

गाय हमारे दुग्ध भवन की देवी है। वह भूखों को खिलाती है, नंगों को पहनाती है और बिमारों को अच्छा करती है।

(कल्याण से) —सम्पादक होर्डसरीमैन अमेरिका

हमारे गोपालन और गोसेवन का उद्देश्य केवल लौकिक ही नहीं उससे परलोक का भी सम्बन्ध है। पाश्चात्य जगत की गो-सेवा वस्तुतः अर्थसेवा हैं और उनका गौ में प्रेम नहीं है अर्थ में प्रेम हैं। भारतीय जिस पवित्र दृष्टि से गौ को देखता है वह उसका अनादिकालीन सांस्कृतिक स्वभाव है और उसकी रक्षा होनी ही चाहिये। तभी हिन्दू संस्कृति बचेगी। गाय हर हालत में

भारतीय के लिए पूजनीय और सेवनीय है तथा रहेगी।

(कल्याण गो अङ्क से) श्रीहनुमानप्रसाद जी पोद्दार

[२०]

जाको दूध धाई करिपीजै, तामाता को वध क्यूं कीजै।
लहुक थकैं दुहिणियारवीरो, ताका अहमक भखै सरीरो॥
वे अकती अकतिन जानहीं, भूने फिरैं ए लोई॥
दिल दरिया दीदार बिन भिस्त कहां थैं होई॥

भक्त कबीर

आस पूर्ण तुम हमारी,
मिटै कष्ट गौ अन छुटे खेद भारी॥

—श्री १००८ गुरु गोविन्दसिंहजी।

आवश्यकता

हमारे देश से गाय का ऐसा ही सम्बन्ध है, जैसा जीवात्माका शरीरसे। गाय हमारे जीवनका मुख्य आधार है! देशके अनुमान पचासी फी सदी लोगोंका गुजारा खेती के सहारे है। खेतीका प्रधान साधन है गोवंश। बैल न हों, कम या कमजोर हों तो खेती नहीं हो सकती। बोझा ढोने, रहट कुएं चलाने और गांवोंमें सवारीके लिये भी बैलोंकी जरूरत है। देशके लोगोंकी बड़ी संख्या, जो मांस नहीं खाती, उन का स्वास्थ्य तथा शक्ति कायम रखने और बढ़ाने का एकमात्र साधन है दूध और दूधसे बनी चीजें — घी, मक्खन, दही, छाछ आदि। देशके लोगोंकी आर्थिक तथा शारीरिक उन्नति का प्रधान सहारा गोवंश है। गोवंशकी संख्या तथा शक्ति जितनी अधिक बढ़ेगी, देशके लोग उतने ही सुखी, सम्पन्न बलवान् तथा स्वस्थ होंगे। पर हमारे देशमें दिनोंदिन गायों की संख्या तथा उनकी दूध देनेकी शक्ति घटती ही जा रही है।

गायोंकी संख्या तथा शक्तिमें कमी

गायोंकी संख्या मालूम करने का एकमात्र आधार सरकारी रिपोर्ट हैं। १६२० से पहले तो देशभरमें कोई ठीक

ठीक पशु-गणना ही नह हुई। भारतसरकारने १९१९ में सारे देशकी पशुगणना करानेका निर्णय किया। सर्वप्रथम यह गणना दिसम्बर १९१९ से अप्रैल १९२० तक हुई। इसके पीछे पांचवें साल गणना करानेका निश्चय हुआ; पर यह भी सब प्रान्तोंकी ठीक-ठीक नहीं हो सकी। १९३५ में युक्तप्रदेश तथा उड़ीसाकी और १९४० में बंगाल, बिहार एवं उड़ीसाकी ठीक न हुई। पिछले अङ्कोंसे ही काम चलाया गया। पिछली या १९३५ तककी भारतसरकारकी पशु-गणना रिपोर्ट नहीं मिलती, केवल १९४० की मिलती है। पहले के कुछ अङ्क भारतसरकारकी दूध तथा खाल-रिपोर्टों और कुछ अन्य प्रसिद्ध पुस्तकोंसे लिये हैं। इनके अनुसार हमारे देश में जन-संख्या दिन-दिन अधिक तथा गो-संख्या कम होती जा रही है। ब्रिटिश भारत तथा देशकी नौ मुख्य रियासतोंके अङ्क इस प्रकार हैं—

	१९२०	१९४०	कम या अधिक
दूध देनेवाली गायोंकी संख्या	४२३६००००,	३८७५००००	१०½ प्रतिशत कम

	१९२१	१९४१	
जन-संख्या	२७४५४००००,	३३३२२००००	२१॥ प्रतिशत अधिक

इस गणनाके अनुसार पिछले २० वर्षोंमें प्रति सैंकड़े १०॥ गाय कम हो गयी तथा मनुष्योंकी संख्या प्रति सैंकड़ा

२१॥ बढ़ी है। मनुष्योंकी बढ़ी हुई संख्याको दृष्टिमें रखते हुए ३२ प्रतिशत गायोंकी कमी हो गयी, जिसे पूरा करनेके लिये १॥ करोड़से अधिक गायें चाहिये। सन् १६३५ में ब्रिटिश तथा रियासती सारे भारतवर्ष में दूध देनेवाली गायों की संख्या ४;५४,६०,००० थी, जो १६४० में केवल ३,६४,००,००० रह गयी। इन पांच वर्षों में ही ६०,६०,००० की कमी आयी। पंजाब प्रान्त, जो देशका सबसे उपजाऊ भाग है। जहां हरियाणा, साहीवाल तथा धन्नि गायोंकी प्रसिद्ध नसलें हैं, इस पाँच दरियाओंके प्रान्तमें भी गायोंकी संख्या कम होती जा रही है, जैसाकि नीचे लिखे अङ्कोंसे प्रकट होता है—

	१६०६*	१६४०	कम या अधिक
ब्रिटिश पंजाब की कुल गायोंकी संख्या	३३,८३,६४२	२४,०७४,६०	२६॥ प्रतिशत कमी
	१६११	१६४२	
जन-संख्या	१,६५,७६,०४७	२८४१८८१६	४५॥ प्रतिशत अधिक

इन तीस वर्षोंमें ६,७६,१५२ या २६॥ प्रतिशत गायोंकी कमी हो गयी, पर मनुष्य ८८,३६,७७२ या ४५॥ प्रतिशत बढ़ गये।

* १६०६ की गो-गणनाके अङ्क सरकारी मिलिटरी फार्म लाहौरके मैनेजर ला० भगवानदासजी की पुस्तक गोपालनके पृष्ट १६८ से लिये गये हैं और शेष सरकारी रिपोर्टों से।

१६३५ से १६४० तककी संख्या—

	१६३५	१६४०	कम या अधिक
ब्रिटिश पंजाब गो-संख्या	६७,६०,०००	६२,५२,५६२	५॥ प्रतिशत कम
	१६३१	१६४१	
जन संख्या	२,३५,८०,८६४	२,८४,१८,८१६	२०॥ प्रतिशत अधिक

सन् १६३५ से १६४० तकके समयमें ही ५,३७,४३८ या ५॥ प्रतिशत गाय या बैल कम हो गये और जन सख्या २०॥ प्रतिशत बढ़ गयी।

हरियाणा नस्लकी गायोंके मुख्य स्थान हिसार जिलेमें तो गोवंशकी बहुत ही कमी हुई, जैसाकि सरकारी हिसार गेजेटियरके पृष्ठ २ तथा ८८ पर लिखे अङ्कोंसे प्रकट है।

	१८६३	१६४०	कम या अधिक
गो-संख्या	१८,१४,८३	६७,२१८	६२॥ प्रतिशत कम
जन संख्या	७,७६,००६	१०,०६,७०६	३०॥ प्रतिशत अधिक

इन पचास सालों में १,१४,२६५ या ६२॥ प्रतिसैकड़ा गायोंकी कमी हो गयी और जन-संख्या २३०७०३ या ३० प्रतिसैकड़ा बढ़ गयी। १८६३-६४ में प्रतिसौ आदमियोंके पीछे २३ गायें थीं, १६४० में केवल ७ रह गयीं। पिछले ७० वर्षोंका हिसाब भी देखिये।

	१६२०	१६४१	कम या अधिक
गाय	१२६५६१	६७२१८	४८ प्रतिशत कमी
बैल तथा सांड	१०६५६४	५६६५७	४४ प्रतिशत कमी
जन-संख्या	८१६८१०	१००६७०६	२३॥ प्रतिशत अधिक

सन् १६२० से १६४० तक ६२३४३ या ४८ प्रतिशत गायों और ४६६३७ या ४४ प्रतिशत बैलों की कमी हुई। इन्हीं २० सालोंमें जनसंख्या १८६८६६ या २३॥ प्रतिशत बढ़ गई।

जो हिसार युक्तप्रदेश, पंजाब तथा देशके अन्यान्य भागोंको खेतीके लिये बैल देता था, वहीं आज उसकी अपनी जमीन के लिए भी काफी बैल नहीं रहे। हिसार जिले में खेती-के लायक अनुमान एक करोड़ बत्तीस लाख कच्चे बंधे या ४४ लाख पक्के बीघे जमीन है। इसके लिए सांडों को छोड़ कर बैल केवल ५८१३७ हैं, जिनसे २६०६८ हल हुए। और २६५५६ ऊंट हैं, उन्हें शामिल कर लिया जाय तो भी इस गणना के अनुसार कुल हल ५५६२४ होते हैं। बैल तथा ऊटों की वर्तमान शक्ति को देखते हुए एक हल पर अधिक से अधिक एक सौ बीघे कच्चे खेती हो सकती है। अतः खेती के लायक जमीनके लिए कम से कम एक लाख बैल और चाहिये।

ऊपर लिखे अङ्कोंसे, जो प्रायः सरकारी रिपोर्टोंसे लिये गये है, पता लगता है कि देश भरमे गायों की संख्या दिन-प्रति-

दिन बहुत कम तथा मनुष्यों की संख्या बढ़ती जा रही है। गोवंश की संख्या तो कम हुई ही। गायों की दूध देने तथा बैलों की हल-गाड़ी खींचने की शक्ति में भी कमी आयी। ३५० वर्ष पहले ही अकबर बादशाह के समय में गाय २० सेर से अधिक दूध देती थी (आईने अकबरी पृ० १६६) तथा बैल घोड़ों से भी तेज चलने वाले होते थे। बैल २४ घण्टे में १२० मील चलते थे (आईने अकबरी पृ० १४६)। उन्हीं दिनों प्रसिद्ध जैन साधू हरिविजयसूरि ने 'हरिसौभाग्यम्' नामक एक संस्कृत महाकाव्य लिखा है, जिसमें गुजरात की ३२ सेर दूध देने वाली गायों का उल्लेख किया है। भारतसरकार की दूध-रिपोर्ट के पृ० २१ पर लिखा है कि भारतीय गायों की दूध देने की शक्ति कम हो गयी। अब से कुल बीस-तीस वर्ष पहले अच्छी गायों तथा भैंसों का मिलना जितना सरल था, आज उतना नहीं। भैंसों की अपेक्षा गायों की शक्ति में अधिक कमी हुई। सरकारी पशु-शालाओं के बड़े अफसर लेफ्टेनेण्ट कर्नल नेटसन साहब लिखते हैं—'पन्द्रह-बीस वर्ष पहले अमृतसरमें काफी तादाद में साहीवाल गायें बिका करती थीं, हरियाना में भी बहुत सी गायें मामूली भाव पर आती थीं। ये दोनों झरने अब सूख गये।' प्रसिद्ध पशु-विशेषज्ञ मि० विलयम स्मिथ महोदय कहते हैं कि 'मैं हिन्दुस्तान में १६॥ वर्षों से हूँ, पशुपालन के धंदे से मेरा निकट सम्बन्ध रहा है। मेरा यह विचारपूर्वक मत है कि मेरे आने के बाद से यहां पशुओं की अवनति हुई है। १६ वर्ष पहले जैसे अच्छे गाय बैल

मिलते थे वैसे अब कितने ही दाम देने पर भी नहीं मिलते।' यह प्रत्यक्ष है कि बीस वर्ष पहले ही १० सेर दूध की गायों का मिलना साधारण बात थी। आज बहुत तलाश करने पर ही कहीं मिलती हैं। सुन्दर-सुडौल और बलवान बैल तो प्रायः देखने में ही नहीं आते।

संसार के अन्यान्य देशोंमें गोवंशकी स्थिति

हमारे देशकी तरह संसारके अन्यान्य देशों में गायों बैलोंकी अधिक जरूरत नहीं, क्योंकि वहां खेती बैलोंसे नहीं; घोड़ों तथा 'मशीनोंसे होती है। वहांके लोग निरामिषभोजी भी नहीं उनका प्रधान आहार मांस है। फिर भी वहां गायों की संख्या तथा शक्ति और दूधका उत्पादन हमारे देशकी अपेक्षा बहुत अधिक है। गोवंशकी उन्नतिके लिये वहांके लोग तथा सरकारोंने बहुत काम किया है। १६३५ से १६४० तकके कुछ देशोंके अङ्क भारतसरकारकी पशु-गणना रिपोर्ट १६४० में दिये हैं।

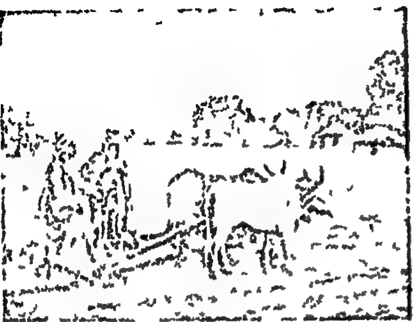
नाम देश	गोवंश १६३५	१६४०	कम या अधिक
दक्षिणी अफ्रीका	१०५७५०००	१२०६००००	१४ प्रतिशत अधिक
पोलैंड	६७५६०००	१०५५४०००	८ ,, ,,
इंगलैंड	८६५६०००	८८१६०००	१८ ,, ,,
जर्मनी	१८६३८०००	१६६०००००	५ ,, ,,
भारतवर्ष	४५४६००००	३६४०००००	१३ ,, कम

भारतसरकारकी दूध-रिपोर्टके पृ० ६४ पर डेनमार्क देशकी गायोंकी वाबत ये अङ्क दिये हैं।

	१९००	१९३४
दूध देने वाली गायोंकी संख्या	१०७५०००	१७१६०००
प्रति गाय वार्षिक दूध	४८५० पौंड	७०५५ पौंड

इन अङ्कों के अनुसार डेनमार्क में ३४ वर्षों में ६४१००० गायों की संख्या वढ़ी, और प्रत्येक गाय सालाना २२०५ पौंड या ११०२॥ सेर अधिक दूध देने लगी। इसी सरकारी रिपोर्ट के पृ० ६४-६५ पर लिखा है कि १९२३ में लिनलिथगो कमीशन की रिपोर्टके अनुसार इङ्गलैण्डमें दूध की पैदावार पिछले चालीस वर्षोमें दुगनी हो गयी, दूध इतना अधिक हुआ कि सन् १९३७ में इंगलैंडकी सरकारने 'अधिक दूध पीयो' आन्दोलन करनेके लिये ही ६ हजार पौंड यानी १ लाख रुपये खर्च किये (पृ० ७६)। अमेरिकामें सालानाप्रति मनुष्य दूधकी खपत ८४७ पौंडसे वढ़कर १००० पौंड हो गई। लेटविया जैसे छोटे देशमें १९३० से १९३५ तक दूधकी पैदावार ३० प्रतिशत वढ़ी, जव कि जन-संख्या केवल २॥ प्रतिशत ही अधिक हुई।

आस्ट्रेलियाने गोवंशके इतिहासमें एक अनोखी ही वात कर दी। अठारहवीं शताब्दीके आरम्भमें वोटानीके गवर्नरने वाहर से एक सांड, चार गायें और एक वछड़ा मंगवाया। सन् १९०६ में गणना हुई तो वहां ८१७८०० गायें थीं, और आज वहां सव तरहकी अच्छी नसलकी गायोंका पालन होता है तथा दूसरे देशों की मांग रहती है। इंगलैंडने तरह-तरहकी गायोंकी नस्ल वनाने



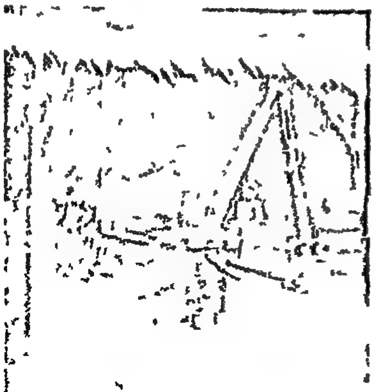


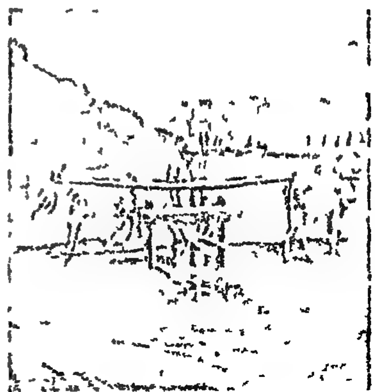
भाइयों



इनकी माता के







श्रीकृष्ण जी का गौ प्रेम



तथा सुधारनेका काम किया। वहांके बादशाह तकने अपनी निजी गायें तथा सांड रखे और इन्हें नुमायशोंमें भेजा। अमेरिका में कितने ही गोपाल कई-कई हजार गायें रखते हैं। मि० हिटसन के पास ५० हजार, मि० जाननिलसके पास ३० हजार गायें बतायी गई हैं। वहांके अन्यान्य गोपालों के पास भी हजारों गायें हैं।

भारतवर्षके मुकाबलेमें अन्यान्य देशोंका गोवंश तथा दूधका उत्पादन

अन्यान्य देशोंकी जन-संख्या तथा गायें कितने वर्षोंमें कितनी बढ़ी या कम हुईं, इसके तो ठीक २ अङ्क नहीं मिले; पर दूधकी खपत तथा कुछ देशोंकी पशु संख्याके जो अङ्क मिले उनसे अनुमान लगाया जा सकता है। दूध- रिपोर्टके पृ० ६२ पर संसारके प्रायः देशोंमे प्रति मनुष्य प्रतिदिन जितने दूधकी खपत है, उसकी बाबत नीचे लिखे अङ्क दिये हैं—

देश	प्रतिदिन प्रति मनुष्य दूधकी खपत
कैनाडा	२८ छटांक
न्यूजीलैंड	२७॥ ,,
स्विजरलैंड	२४॥ ,,
आस्ट्रेलिया	२२ ,,
इंगलैंड	२० ,,
जर्मनी	१७॥ ,,
अमेरिका	१७॥ ,,
भारतवर्ष	३ ,,

·221

इन अङ्कोंसे प्रकट है कि संसार के प्रायः देशोंमें हमारी अपेक्षा बहुत अधिक दूध पीया जाता है। जैसे कैनेडा प्रति आदमी १॥ सेर, इंगलैंड १। सेर, अमेरिका १ सेर से अधिक पर भारतवर्ष केवल ३ छटांक ही। जिस देशमें अधिक दूध खपता है, वहां दूध देने वाली गायोंकी संख्या तथा शक्तिका अधिक होना जरूरी है। उन देशोंमें दूध केवल गायोंका ही होता है। हमारी तरह पशुओंके आधार पर गुजारा करने वाले हालैंड तथा डेनमार्ककी पशुसंख्या तथा दूधकी उत्पत्तिका वर्णन इसी रिपोर्ट के पृ० १२५ पर निम्नलिखित हैं—

देश	दूध देनेवाले पशुओंकी संख्या प्रति वर्ग मील	प्रतिदिन दूधका उत्पादन प्रति वर्ग मील
भारतवर्ष	४२	१ मन ३ सेर
हालैंड	१०६	२७ मन १८ सेर
डेनमार्क	६७	२२ मन २६ सेर

हमारे देश से इन देशों में दुगने से अधिक गायें हैं तथा बीस गुणा से अधिक दूध उत्पन्न होता है। प्रति गाय सालाना दूध की औसत इसी रिपोर्ट के पृ० २६७ पर इस प्रकार लिखी है—

देश	प्रति गाय दूध की सालाना औसत
डेनमार्क	८७ मन २२॥ सेर
स्वीजरलैंड	८१ मन ६ सेर

वैलजिअम	७६ मन ४॥ सेर
इंगलैंड	६६ मन २८ सेर
जर्मनी	६६ मन १२॥ सेर
भारतवर्ष	६ मन २२॥ सेर

अन्यान्य देशों में प्रत्येक गाय औसतन सालाना हमारे देश की अपेक्षा १० गुने से १४ गुनेतक अधिक दूध देती है।

गोवंश के ह्रास से हमारी हानि

दूध और दूध से बनी चीजें घी मक्खन, दही, छाछ इत्यादि मनुष्य के मुख्य तथा पूर्ण भोजन हैं। जिन देशों के लोग मांसभोजी हैं, उन्हें भी दूध की आवश्यकता रहती है। जो मांस नहीं खाते, उनके शरीर तथा स्वास्थ्य को कायम रखने का साधन तो एकमात्र दूध ही है। दूध भैंस, गाय तथा बकरी, भेड़ इत्यादि पशुओं का भी होता है; पर स्वास्थ्य की दृष्टि से गाय का दूध ही सबसे अच्छा होता है। दूध के अतिरिक्त गाय से ही बैल होते हैं; इसलिये गाय के दूध की प्रधानता है। संसार के प्रायः सभी देशों में गाय का ही दूध होता है। भैंस तो वहां हैं ही नहीं, या कहीं हैं तो नाम मात्र को। गायों की संख्या तथा दूध देने की शक्ति कम होने के कारण हमारे देश के नवयुवकों को तो क्या, बच्चों को भी पूरा दूध नहीं मिलता। छाछ की भी कमी है। दूध कम पीने या न पीने के कारण शरीर में रोगों को रोकने की शक्ति नहीं रहती। कमजोरी के कारण भांति-भांति की

बीमारियां कष्ट देती तथा मृत्यु के मुख में डालती रहती हैं। दिनों दिन तपेदिक, संग्रहणी, जिगर बढ़ना इत्यादि रोग बढ़ रहे है। एक बुखार ही लाखों आदमियों को सालाना काल के गाल में पहुँचा देता है। कलकत्ता हाईकोर्ट के जज सर जान उडरफ महोदय ने गो-दूध की कमी के कारण केवल तपेदिक की बाबत लिखा है कि १६०२ में तपेदिक के ३८४३५ रोगी रजिस्टर हुए थे, १६१६ मे बढ़कर उनकी संख्या १००१६२ हो गयी। कोई घर नहीं, जिसमे किसी न किसी रोग का रोगी नहीं। दूसरे देशों की अपेक्षा हमारे यहां मृत्यु संख्या भी अधिक तथा आयु कम होती जा रही है, जैसे कि नीचे के अङ्कों से प्रकट है—

प्रतिवर्ष एक हजार आदमियों पर मृत्यु संख्या

देश	एक साल से कम आयु के बालक	कुल मनुष्य
भारतवर्ष	२६१	३८
जापान	०	२१
इंगलैंड	१७२	१७
डेनमार्क	१३६	१५
न्यूजीलैंड	३२	९

दूध न मिलने या कम मिलने के कारण, हमारे देश में संसार के सब देशों से अधिक मृत्यु संख्या है। उम्र भी कम होती जा रही है। 'आयुर्वै घृतम्' घी आयु है, वह मिलना दुर्लभ हो गया है।

जब इस देश के लोगों को काफी घी-दूध मिलता था तब आयु अधिक होती थी। गांव-गांव में बड़े-बूढ़ों की संख्या अधिक थी। सौ वर्ष पहले ही हमारे देश में प्रति मनुष्य आयु की औसत ४० वर्ष से अधिक थी, पर आज २३ साल से भी कम रह गयी। जब कि संसार के लोगों की औसत आयु हमसे कहीं अधिक है, जैसे इंगलैंड ५३ वर्ष, जापान ४४ वर्ष। हमारे देश में भी जिन इलाकों मे अब भी कुछ अच्छी गायें हैं, जहां कुछ अधिक घी-दूध होता है, वहां के लोग अन्य प्रान्तों की अपेक्षा अधिक बलवान तथा स्वस्थ होते हैं। सरकारी दूध-रिपोर्ट के पृ० ५६ पर लिखा है कि सिन्ध, पजाब, राजपूताना, मध्यभारत की रियासते काठियावाड़, गुजरात तथा युक्तप्रदेश में देश की कुल संख्या के ४२ प्रतिशत आदमी बसते हैं। पर यहाँ देश के कुल दूध की पैदावार का ७४ प्रति सैकड़ा होता है। बम्बई, मध्यप्रदेश, हैदराबाद, मद्रास, मैसूर और दक्षिणी भारत की अन्य रियासतों में देश की कुल जनसंख्या के ३७ प्रतिशत आदमी बसते तथा दूध केवल १७ प्रतिशत होता है। बगाल और आसाम में १८ प्रतिशत आदमी बसते हैं तथा दूध ६ प्रतिशत होता है। सिन्ध पंजाब, राजपूताना इत्यादि में जहां अधिक दूध होता है, लोग देश के दूसरे प्रान्तों की अपेक्षा अधिक स्वस्थ तथा बलवान हैं। यह सिद्ध है कि इस देश के लोगों की शक्ति तथा स्वास्थ्य का एकमात्र आधार दूध है और दूध गाय से मिलता है। गायों की

जितनी उन्नति होगी, देश के लोगों का स्वास्थ्य, शक्ति तथा आयु उतनी ही अधिक बढ़ेगी।

दूसरे देशों के अधिकांश लोगों का आधार खेती नहीं, उनकी प्रधान आजीविका दस्तकारी है इंगलैंड के केवल २७ और जर्मनी के ३५ आदमियों का खेती पर निर्वाह है, पर हमारे देश के सौ में ८५ के करीब आदमियों का निर्वाह खेती के सहारे है। अन्य देशों में घोड़ों तथा मशीनों से खेती होती है; पर हमारे देश में खेती का आधार बैल ही है। बैलों की शक्ति कम होती जा रही है। संख्या भी इतनी नहीं कि जिसमें अच्छी तरह खेती की जा सके। सन् १६४० के अङ्क नहीं मिले, पर सरकारी संख्या-रिपोर्ट १६३१ के अनुसार ब्रिटिश भारत में २२,११,१५,२३६ एकड़ (एक एकड़ ४॥ बीघे कच्चे) में खेती बोयी गयी। १५,४०,१६,७२६ एकड़ जमीन, जो खेती के योग्य थी, पड़ी रही। कुल ३८ करोड़ एकड़ जमीन, खेती के लिये थी। इन दस सालों में हवेली थल प्रोजैक्ट तथा शारदा नहर के कारण और भी खेती बढ़ी होगी पर १६४० की सरकारी पशुगणना के अनुसार इसमें खेती करने के लिये भी काफी बैल नहीं। बैलों ऊंटों, भैंसों के कुल हलों की संख्या १६४० में १८७३६०४६ है। देश के अधिकांश भागों में केवल हिसार की तरह एक सौ बीघे कच्चे जमीन खेती करने की शक्ति नहीं। वहां की जमीन सख्त है। वहां के कमजोर बैलों की शक्ति तथा सख्त जमीन इत्यादि बातों का विचार करते हुए प्रति हल १० एकड़ या ४५॥ बीघे

कच्चे से अधिक अच्छी तरह खेती नहीं की जा सकती। ब्रिटिश भारत की कुल खेती के लायक जमीन के लिये तीन करोड़ अस्सी लाख हल चाहियें। पर हैं एक करोड़ सतासी लाख। अनुमान दो करोड़ हलों या चार करोड़ बैलों की कमी है। बीज बोने से पहिले जितनी बार हल चलाकर जमीन का जोतना जरूरी है, बैलों की शक्ति कम होने के कारण वह नहीं हो पाता। जमीन की पूरी पैदावार नहीं मिलती, जितनी मिलनी चाहिये। जब गाय ही कम होती जा रही है तो काफी तथा अच्छे बैल कहां से मिलेंगे ? जिन दिनों खेती के लिये काफी तथा अच्छे बैल मिलते थे, ठीक तरह पर खेती होती थी। तब इस देशके लोग इतना अधिक अन्न पैदा करतेथे जो उनके लियेही काफी नहीं होता था, अन्यान्य देशों के लोगों का पेट भी भरता था। पर आज अन्न की कमी के कारण इसी देश के लाखों मनुष्य भूखों मरते हैं। अन्यान्य देशों ने दूध के लिए गायों की संख्या तथा शक्ति बढ़ाने का यत्न किया, पर हमारे अभागे देशमें गायों की न काफी संख्या है, न दूध देने की शक्ति और न खेती के लिए काफी और बलवान बैल ही। जिन देशों में जमीन जुताई तथा खाद का ठीक प्रबन्ध है, वहां अन्न हमसे बहुत अधिक उत्पन्न होता है — जैसे बैलजियम में प्रति एकड़ ३८ मन, डैनमार्क में ३६ मन, जर्मनी में २३ मन, इग्लैंड में ३२ मन, फ्रांस मे २० मन; पर हमारे अभागे भारतवर्ष में ८॥ मन ही !

हिंदू, बौद्ध, जैन तथा मुस्लिम समय में गायोंकी हालत

गाय की इन्हीं दिनों में बुरी हालत हुई है या पहले भी ऐसी ही थी ? इस प्रश्न का उत्तर प्राचीन पुस्तकों में तथा इस समय के अंग्रेज और दूसरे लेखों द्वारा दिया गया है। मुस्लिम समय तक गाय का असाधारण महत्व था। हिंदुओं के ईश्वरीय अपोरुषेय ग्रन्थवेद हैं — वेदों में गाय और बैल की प्रशंसा और उपयोगिता के मन्त्र भरे पड़े हैं। ऋग्वेद में कहा है —

गौर्मे माता वृषभः पिता मे दिवं शर्म जगती मे प्रतिष्ठा।

गाय मेरी माता, और सांड मेरा पिता है। ये मुझे इस संसार और स्वर्ग का सुख प्रदान करें।

आ गावो अग्मन्नुत भद्रमक्रन्त्सीदन्तु गोष्ठे रणयन्त्वस्मे।
प्रजावतीः पुरुरूपा इह स्युरिन्द्राय पूर्वीरुषसो दुहानाः॥
(ऋ० ६।२८।१)

विविध रंगों की गायें हमारे घरों में आकर हमारा सब प्रकार का कल्याण करें तथा हमारी गोशाला में बैठ कर सुख से रहें। वे बहुत से बछड़े-बछड़ी उत्पन्न करें और यज्ञादि कर्मों के लिए सदा दूध देती रहें।

यूयं गावो मेदयथा कृशं चिदश्रीरं चित्कृणुथा सुप्रतीकम्।
भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचो बृहद्वो वय उच्यते सभासु॥
(ऋ० ६।२८।६)

गौओ ! तुम दुबलों-पतलों को मोटा बनादो । कुरूप और कुलक्षण को भी सुरूप एवं सुलक्षण बनादो । अपने मङ्गल-मय रम्भारव से हमारे घर को भी मङ्गलमय बनादो । बड़े-बड़े यज्ञोंमें लोग तुम्हें बहुत-सा अन्न और चारा आदि देकर प्रसन्न करते हैं ।

प्रजापतिर्मह्यमेता रराणो विश्वैर्देवैः पितृभिः संविदानः ।
शिवाः सतीरुप नो गोष्ठमाकस्तासां वयं प्रजया सखदेम ॥
(ऋ॰ १०।१६९।४)

प्रजापति हमलोगोंको गायें दें और सारे देवताओं तथा पितरोंसे एकमत होकर हमारी गोशालाके समीप कल्याणमयी गौओंको उपस्थित करें । जिससे हम उनके और उनके बछड़े-बछड़ियोंके साथ हमारा प्रेम और ममता व्यवहार हो—उन्हें पाकर हम सुखी हों ।

महाभारतको पांचवां वेद कहते हैं । उसमें तो गायोंकी महिमा, महत्ता और उपादेयतापर अध्यायों के-अध्याय लिखे गये हैं । कुछ वचन देखिये—महर्षि च्यवन महाराज नहुषसे कहते हैं—

गोभिस्तुल्यं न पश्यामि धन किंञ्चिदिहाच्युत ॥
(अनु॰ ५१।२६)

राजन ! मैं इस पृथ्वीमें गायके समान और कोई भी धन नहीं देखता ।

गावो लक्ष्म्याः सदा मूलं गोषु पाप्मा न विद्यते ।
अन्नमेव सदा गावो देवानां परमं हविः ॥
अमृतं ह्यव्ययं दिव्यं क्षरन्ति च वहन्ति च ।
अमृतायतनं चैताः सर्वलोकनमस्कृताः ॥
गावः कामदुहो देव्यो नान्यत् किञ्चित् परंस्मृतम् ॥

(अनु० ५१। २८, ३०, ३३)

लक्ष्मीकी मूल सदा- सर्वदा गाय ही है। गायोंमें कोई भी पाप नहीं है। गायें सदा मनुष्योंको अन्न और देवताओंको श्रेष्ठ हवि देती हैं। गाय नित्य ही अमृत धारण करती, झरती और दूहनेपर बहाती हैं। वे अमृत की भण्डार हैं। इसलिये सब लोग उन्हें नमस्कार करते हैं। गायें समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाली देवी हैं। उनसे श्रेष्ठ और कुछ भी नहीं है।

महात्मा भीष्मपितामह के महाराज युधिष्ठिर के प्रति वचन है—

पयसा हविषा दध्ना शकृता चाथ चर्मणा ।
अस्थिभिश्चोपकुर्वन्ति शृङ्गैर्वालैश्च भारत ॥
नासां शीतातपौ स्यातां सदैताः कर्म कुर्वते ।
न वर्षविषयं वापि दुःखमासां भवत्युत ॥

(अ० ६६। ३६, ४१)

युधिष्ठिर ! गायें जीते-जी दूध, दही एवं घीसे—यहां तक कि अपने गोबर से भी और मरने के बाद अपने चमड़े, हड्डियों, सींगों तथा रोओंतक से हमारा उपकार करती हैं। वे सर्दी-गर्मी

की परवा न करके सदा हमारा काम ही करती रहती हैं-यहां तक कि उन्हें वर्षा से भी कोई कष्ट नहीं होता।

गावों लोकास्तारयन्ति क्षरन्त्यो
गावश्चान्नं संजनयन्ति लोके।
(७१।५२)

गायें दूध देकर मनुष्यों को अनेक कष्टों से उबारती है। गायें ही अपने पुत्र बैलों के द्वारा पृथ्वी में अन्न उत्पन्न करती हैं।

प्राप्त्या पुष्टया लोकसंरक्षणेन
गावस्तुल्याः सूर्यपादैः पृथिव्याम्॥
(७१। ५४)

गाये पृथ्वीपर सूर्य की किरणों की भांति मनुष्यों को अभीष्ट वस्तु प्रदान करती हैं, उनका पोषण करती है तथा समस्त जगत् की रक्षा करती हैं।

मातरः सर्वभूताना गावः सर्वसुखप्रदाः।
वृद्धिमाकाङ्क्षता नित्यं गावः कार्याः प्रदक्षिणाः॥
....।
मङ्गलायतन देव्यस्तस्मात्पूज्याः सदैव हि॥
(६६।७-८)

गायें सम्पूर्ण जीवों की माता हैं, वे उन्हें सब प्रकार के सुख देती हैं। जो मनुष्य अपना अभ्युदय चाहता हो, उसे नित्य

गौओं की प्रदक्षिणा करनी चाहिये तथा सदा इनके अनुकूल आचरण करना चाहिये।......... " गायें सम्पूर्ण मङ्गलों की खान हैं, उनका सदा देवताओं की भांति पूजन करना चाहिये।

ऊर्जस्विन्य ऊर्जमेधाश्च यज्ञे
गर्भोऽमृतस्य जगतोऽस्य प्रतिष्ठा।
क्षिते रोहः प्रवहः शश्वदेव........................ ॥

(७६।१०)

गायें हमारा बल एवं उत्साह बढ़ाने वाली, प्रज्ञावर्धिनी, यज्ञ में यज्ञ साधन घृतरूप अमृत को उत्पन्न करने वाली तथा सम्पूर्ण जगत् की आधारभूता हैं। वे अपने गोबर द्वारा पृथ्वी को उपजाऊ बनाती हैं तथा जगत् में सुख शान्ति की धारा बहाती हैं।

इमांल्लोकान् भरिष्यन्ति हविषा प्रस्नवेण च।
आसामैश्वर्यमिच्छन्ति सर्वेऽमृतमयं शुभम् ॥

(७७।२६, २७)

गायें दूध एवं घीसे मनुष्यों का भरण-पोषण करेंगी—इस आशा से सभी लोग इनकी वृद्धि चाहते हैं, क्योंकि इनकी वृद्धि से ही हमारा कल्याण होता है तथा हमें अमृततुल्य घी की प्राप्ति होती है।

गावः प्रतिष्ठा भूतानां गावः स्वस्त्ययनं महत्।
गावो भूतं च भव्यं च गावः पुष्टिः सनातनी ॥

गावो लक्ष्म्यास्तथा मूलं गोषु दत्तं न नश्यति।

.... ।

गावो यज्ञस्य हि फलं गोषु यज्ञाः प्रतिष्ठिताः।

(७७ । ५ । ६, ८)

गायें ही सम्पूर्ण जीवों की आधारभूता हैं, वे हमारे लिये महान् मङ्गल की खान हैं। जितने जीव पहले हो चुके हैं तथा जो आगे होने वाले हैं, उन सब का जीवन गायें ही हैं। गायें ही सदा हमारा पोषण करती हैं। गायें ही ऐश्वर्य की जड़ हैं. गौओं के निमित्त, उनकी रक्षा के लिये दिया हुआ दान अक्षय हो जाता है, वह कभी निष्फल नहीं जाता। यज्ञ के फलरूप में गायों की वृद्धि होती है और यज्ञ गायों पर ही निर्भर करते हैं।

पितामह ब्रह्माजी देवराज इन्द्र से कहते हैं—

धारयन्ति प्रजाश्चैव पयसा हविषा तथा।
एतासां तनयाश्चापि कृषियोगमुपासते॥
जनयन्ति च धान्यानि बीजानि विविधानि च।
ततो यज्ञाः प्रवर्तन्ते हव्यं कव्यं च सर्वशः॥
पयो दधि घृतं चैव पुण्याश्चैताः सुराधिप।
वहन्ति विविधान् भारान् क्षुत्तृष्णापरिपीडिताः।
मुनींश्च धारयन्तीह प्रजाश्चैवापि कर्मणा॥

(अनु० ८३ । १८-२१)

गायें दूध और घी से प्रजा को जीवनदान देती रहती हैं। इनके पुत्र बैल भी खेती के भिन्न-भिन्न कार्यों को चलाते हैं और नाना प्रकार के अनाज तथा खाद्य पदार्थों को उत्पन्न करते हैं, उन्हींसे यज्ञ सम्पन्न होते हैं तथा दूध, दही, घी आदि देवकर्म और पितृकर्म के लिये उपयोगी सामग्रियां प्राप्त होती हैं। देवराज ! ये गायें बड़ी पवित्र हैं ये तथा इनके पुत्र बैल भूख-प्यास से पीड़ित रहकर भी हमारे भारों को ढोते हैं और अपनी सेवाओं से मुनियों का तथा सारी प्रजा का पालन-पोषण करते हैं।

विक्रयार्थं हि यो हिंस्याद्भक्षयेद्वा निरंकुशः ।
घातयानं हि पुरुषं येऽनुमन्येयुरर्थिनः ॥
घातकः खादको वापि तथा यश्चानुमन्यते ।
यावन्ति तस्या रोमाणि तावद्वर्षाणि मज्जति ॥

(अनु० ७४। ३-४)

जो मनुष्य (गाय या उसके शरीर से बनी हुई चीजें) बेचने के लिये गायकी हिंसा करता है, जो निरङ्कुश होकर खाता है और जो धनके लोभ से इनका अनुमोदन करते हैं। वह गाय को मारने वाला, खाने वाला और गोहत्या का अनुमोदन करने वाला— ये सभी गाय के शरीर में जितने रोम होते हैं, उतने वर्षोंतक नरक में पचते रहते हैं।

अर्जुनने गोरक्षा के लिये बारह वर्ष वन के कष्ट सहे, राजा दुर्योधन, विराट और नन्दके पास हजारों-लाखों गायें थीं जिनकी

वर्ष में गिनती होती। बड़े-बड़े राजा भी गायों की उन्नति तथा इलाज तरीके जानते थे। सहदेवजी जब विराट के यहां भेष बदलकर रहे तब उन्होंने कहा था, 'राजन्! मैं सांड़ों के अच्छे लक्षण जानता हूं, जिनका मूत्र सूंघने से बांझ गाय बच्चा पैदा कर देती है।' गाय किसी मूल्य पर भी देने का रिवाज न था। महर्षि जमदग्निने सहस्त्रार्जुन को गाय नहीं दी, पर प्राण दे दिये, महर्षि वशिष्ठने अनेक कष्ट उठाये पर विश्वामित्र को गाय न दी। गाय के मुकाबले की कोई चीज नहीं, कहा है कि 'धनं तु गोधनं धान्यं स्वर्णादीनि वृथैव हि' गाय और अनाज दो ही धन हैं, सोना आदि तो व्यर्थ है। महाराजा दिलीपने नन्दिनी गौ की सेवा के लिये अपने राजपाट तथा प्राणों तक की परवा न की। भगवान् श्रीकृष्ण ने स्वयं गायों को चराया।

हिंदुओं के गोत्र उन्हीं महापुरुषों के नाम पर चले, जिन्होंने गाय की रक्षा की। आर्य शब्द तो बना ही है गाय के सम्बन्ध से। हिंदुओं की बड़ी संख्या गाय के शरीर में देवताओं का निवास तथा बैल के सींग पर पृथ्वी का भार मानती है। हिंदू समय में गायों का बड़ा महत्त्व रहा।

महात्मा बुद्धने कहा है 'जिस प्रकार मां, बाप, भाई और मित्र हैं, इसी प्रकार गाय हमारी परम मित्र है जि मृतसंजीवनी औषधियां मिलती हैं। देव, पितर, इन्द्र राक्षस सभी गायकी विपत्ति देखकर बोल उठे यह'

अधर्म है। पहले तीन रोग थे—इच्छा, भूख तथा बुढ़ापा पर पशुको मारना शुरू किया इस लिये ६६ रोग हो गये।'

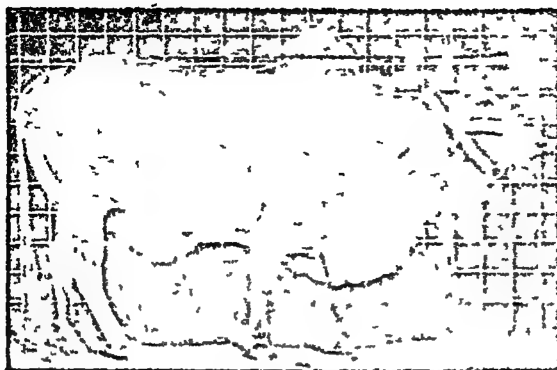
भगवान् बुद्धके समय गायें इतनी अधिक थीं कि बुद्ध महाराजके शिष्य धनञ्जय सेठने अपनी पुत्री विशाखाके विवाहमें तीन कोस लम्बी तथा एकसौ चालीस हाथ चौड़ी जगहमें जितनी गायें आ सकती थीं, दहेजमें दे दी, जिसमें लाखों गायें थीं।

जैनधर्मके चौबीसवें तथा अन्तिम तीर्थङ्कर श्रीमहावीर स्वामीके दस मुख्य उपासकोंमेसे राजग्रहीके महाशतक और वाराणसीके चूलनी पिताके पास अस्सी-अस्सी हजार गायें थीं। चम्पाके कामदेव, वाराणसीके सुदेव, काम्पिल्यके कुण्ड और मैलिक तथा आलफिया के चूल शतक के पास साठ-साठ हजार, वाणिया ग्राम के आनन्द श्रावस्ती के नन्दिनी पिता तथा शालिनी पिता के पास चालीस-चालीस हजार गायें थीं। आनन्द श्रावक ने महावीर स्वामी के पास जब श्रावकव्रत लिया, तब उसके परिग्रह परिमाण में उसका गोधन ही चालीस हजार गायों का माना गया था।

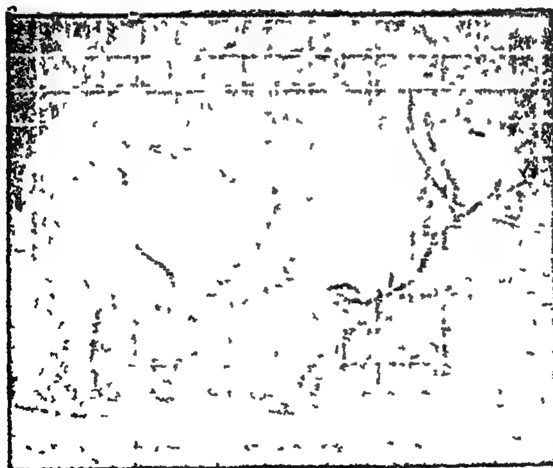
मुसलमानोंके समय में भी गायों की कुछ अच्छी हालत रही। सन् १२६७ के निकट जब इलाउद्दीन खिलजी का ला— था, जो अच्छा नहीं कहलाया, फिर भी, उस समय गौतक की अधिकता के कारण एक पैसे का १४॥ छटांक या

अर्जुनको एक मन अठारह सेर मक्खन बिकता था।

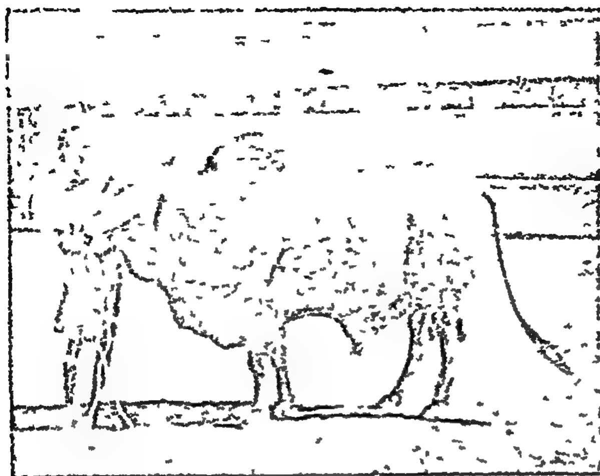
दुर्योधन, विरा-



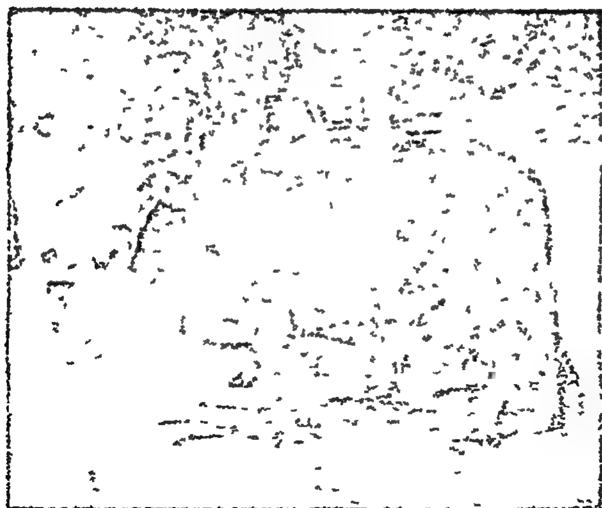
साहीवाल सांड



साहीवाल गौ



सिन्धी सांड



सिन्धी गौ

गेहूं एक पैसे के दो सेर आते थे, जैसा कि बरणी ने तारीखे-फिरोजशाह में लिखा है। कितने ही मुसलमान बादशाहों के समय गो-हत्या कतई बन्द रही। भोपाल के पुस्तकालय में प्रसिद्ध मुगल बादशाह बाबर का एक फरमान मौजूद है जो बादशाह ने अपनी औलाद को लिखा है। 'तुम को चाहिये कि अपने हृदय को धार्मिक पक्षपात से रहित करके प्रत्येक धर्म के नियम के अनुसार इनका न्याय करो और विशेष कर गो-हत्या से परहेज करो।' अकबर बादशाह ने तारीख जिलहिज सन् ३१ शाही को एक फरमान जारी करते हुए आज्ञा दी कि—"सब पशु ईश्वर के बनाये हुए हैं और सबसे एक न एक लाभ होता है। इन सब में गाय की जाति, चाहे वह मादा हो या नर, असख्य लाभ देने वाली है, क्यों कि मनुष्य सब अन्न खाकर जीते हैं। अनाज बिना खेती किये पैदा नहीं हो सकता। खेती हल चलाने से ही हो सकती है और हलों का चलाना बैलों पर ही निर्भर है। इससे स्पष्ट है कि सब संसार और मनुष्य तथा पशुओं के जीवन का आधार यह गो-जाति है। इसलिये हमारे साम्राज्य में गोहत्या की रस्म बिल्कुल न रहे।" मोहम्मदशाह और जहांगीर ने भी गो-हत्या बन्द करने के फरमान निकाले। शाहआलम ने १३ जीहलहजा ३१ मोल्ला को फरमान निकाला कि 'गाय और बैल बेशुमार फायदा और लाभ रखते हैं। मनुष्य और पशुओं का जीवन अन्न, घास और चारे पर निर्भर है और ये दोनों चीजें

खेतीके विना मिल नहीं सकतीं। खेती गाय वैल के विना कठिन है। वस, गाय वैल पर संसार की जन संख्या और मनुष्य का जीवन निर्भर है। इस बात को ध्यान में रखकर मेरे अधीन साम्राज्य में गोहत्या का रिवाज बिल्कुल न हो और वह सर्वथा मिटा दिया जाय।' इन फर्मानों के पालन के सबूत में प्रसिद्ध इतिहासकार सर विलियम हंटर महोदय ने लिखा है कि मुगल राज्य के दो सौ साल में भारत में गौ-वध नहीं हुआ।' मि० विन्सैएट स्मिथ साहेब 'भारत के प्राचीन इतिहास' नामक पुस्तक में लिखते हैं कि 'अकवर ने अपने बड़े साम्राज्य में गो-वध करने वालों के लिये प्राणदण्ड की व्यवस्था की थी। पहले के बड़े। बड़े बादशाहों ने ही नहीं, अठारहवीं शताब्दी में ही मैसूर के नवाब टीपू सुलतान ने बड़ी कोशिश करके वहां की प्रसिद्ध गायों को नस्ल 'अमृतमहल' को कायम रक्खा तथा उन्नत किया। 'अमृतमहल' नाम रक्खा। यह ठीक है कि कुछ मुसलमान बादशाहों के समय गो-हत्या होती रही, पर बहुत ही कम। अबकी तरह बढ़ी हुई व्यापारिक हत्या नहीं होती थी। गायों की अधिकता तथा अच्छाई के कारण मुसलमानों के समय में दूध घी की अधिकता रही, जिसके कारण मुस्लिम राज्य काल के अन्तिम दिनों में भी एक रुपये का ४५ सेर दूध तथा एक रुपये में १०॥ सेर घी मिलता था। इतिहास तथा हालात से यह सिद्ध होता है कि मुसलमान बादशाहों के समय आजकी अपेक्षा

गायों की संख्या और हालत कई गुना अधिक तथा अच्छी थी।

गोवंश को नुकसान क्यों पहुँचा ?

जब तक हमारे जीवन से जीवित गाय का ही सम्बन्ध रहा तथा गायों को चरने के लिए जमीन खाली मिलती रही, तब तक गोवंश को नुकसान नहीं पहुँचा पर जब हमारे नित्य के काम में अपने-आप मरी हुई नहीं, कसाई द्वारा मारी हुई गाय के चमड़े, चर्बी, खून और हड्डी का व्यापार बढ़ा। मारी हुई गाय का मूल्य जीवित गाय से अधिक हो गया। वनस्पति घी, दूध, पाउडर तथा मक्खन निकले, सप्रेटे का प्रभाव पड़ा। घरेलू दस्तकारियों के बरबाद होने तथा अफीम चाय, तम्बाकू आदि की बढ़ी हुई खेती से गोचर भूमि रुक गयी। सरकारी जंगल विभाग की नीति से गायों का खुला चरना रोक दिया गया। देश के पढ़े-लिखे तथा समझदार कहलाने वाले लोगों ने और सरकार ने गाय की परवा न की। तब से गाय को नुकसान पहुंचना शुरू हुआ। १५० वर्ष पहले तक हमारे भोजन-वस्त्र तथा नित्य व्यवहार की कोई चीज ऐसी न थी जिसके लिए मारी हुई गायों के चमड़े इत्यादि की जरूरत पड़े, यहां तक कि किसी समय खड़ाऊ का तो आम रिवाज था ही, जूते भी मूंज के बनते थे, जैसे कि व्याकरण-ग्रन्थ अष्टाध्यायी के 'अप गोरान होर्यः, (५ १-१५)

सूत्र से 'औपानह्यः मुञ्जः, (मुञ्ज का जूता) पद की सिद्धि की गयी है। व्याकरण प्रायः उन्हीं शब्दों को बताता है जिन का सर्वसाधारण में रिवाज हो। जब जूते तक के लिये चमड़े का व्यापार नहीं था तो खून चर्बी इत्यादि का उपयोग कहां? चमड़ा भी अपने आप मरी हुई गाय का ही काम में लाया जाता। पर आज तो चमड़ा सिर तक पहुँच गया। सभ्य कहलाने वाले लोगों का कोई ऐसा घर न होगा जहां दर्जनों जूते और सूटकेस, अटैचीकेस आदि न हों। जहां मनों चमड़ा मोटरकार, घोड़ागाड़ी के सामान में न लगा हो। भारत सरकार की खाल रिपोर्ट १६४३ के पृष्ठ ५० के अनुसार यहां सालाना गाय की २ करोड़ १० हजार खालें तैयार होती हैं; जिनमें से ५२ लाख ७० हजार कसाई खानों में मारी हुई गायों की हैं। यह सरकारी अङ्क हैं। जो गायें विना लाइसेन्स के कसाई खानों या घरों में मारी जाती हैं, वे इन में शामिल नहीं हैं। उन्हें शामिल कर लिया जाय तो यह संख्या और भी बहुत अधिक हो जाती है। इसके अतिरिक्त ५७ लाख १० हजार भैंसों की खालें होती हैं, जिनमें से १३ लाख ३० हजार कसाइयों द्वारा मारी हुई हैं; सरकारी हिसाब से सालाना २५७२०००० खालें तैयार होती हैं; जिनका मूल्य इस समय छः करोड़ रुपये है। इन सब की हमारे देशके लिये जरूरत नहीं। १०३४४००० खालें, जिन का मूल्य ४ करोड़ २५ लाख हैं, अन्य देशों मे भेजी जाती हैं; सिर्फ १ करोड़ ६० लाख रुपये की यहां काम आती है। इस रिपोर्ट के पृ० ३८ पर लिखा है कि सन् १६२३-२४ में बछड़ों की आठ लाख खालें बाहर गयीं। सरकारी खाल रिपोर्ट के

पृ० ८८ पर लिखा है कि भारतीय खालें बाहर भेजने का काम सबसे पहले सन् १६४३ में शुरू हुआ, सन् १८३० तक मामूली रहा। केवल एक लाख खालें ही बाहर गयीं, पर १८५० से खालें बाहर भेजने का व्यापार तेजी से बढ़ा, इसी साल बगाल से ४४ लाख खालें बाहर भेजी गई। पृ० ५८ पर लिखा है इन दिनों गाय की हलकी खालों को देने वाला सब से बड़ा देश भारतवर्ष ही है। भैंस की खालें प्राप्त करने का तो यही एक मात्र साधन है। हमारे देश में गाय यहां की चमड़े की बढ़ी हुई आवश्यकता के लिये ही नहीं, विदेशों को चमड़ा भेजने के लिये भी मारी जाती हैं। * चमड़े के अतिरिक्त गायकी हड्डी, चर्बी, मांस, खून सींग तथा खुरोंकी भी कम मांग नहीं हैं। हड्डी, खुर, तथा

---

* सन् १६३६ में रोशनलाल आनन्द एम० ए० ने महकमा इन्डस्ट्री के डाइरेक्टर आज्ञानुसार पञ्जाब में चमड़े के रकने के कारबार पर एक रिपोर्ट लिखी है। जिसमें लिखा है कि जिस प्रकार भेड़ और बकरियों के गर्भ गिराकर उनके बच्चों की खालो का व्यापार जारी है, इसी प्रकार गर्भिणी गायों को मारकर उनके पेटके बच्चों का चमड़ा, जिसकी मांग रोज बढ़ रही है, भेजा जा रहा है। इन चमड़ों को गोबला कहते है। आप लिखते है कि यह कारबार देशके लिये भारी हानि पहुंचाने वाला है। देहली में एक आढ़ती की दुकान में मैंने ८०० ऐसे बच्चों की खालें देखी हैं। और इस प्रकार दूसरे गोदामों में इससे भी कहीं अधिक होंगी। आढ़ती ने यह नहीं बतलाया कि यह कहां से आती है, परन्तु एक कसाई ने बतलाया है कि उत्तम-से-उत्तम गायों को इस प्रकार मारकर भी लाभ उठाया जा सकता है। आठ-दस सेर दूध देने वाली गर्भवती गाय को कत्ल करके भी नफा उठाया जा रहा है। जब हमने यह पैरा पढ़ा तो रोंगटे खड़े हो गये। बहुत-से आदमी इस खबरे को सुन कर बेचैन हो जाते हैं।

सींग प्रायः खाद के काम आते हैं, मारी हुई गाय के अन्य भागों से सरेस, कुनैन तथा अन्य दवाई की गोलियों को वेसवाद वनाने के लिये सामान, अनेकों दवाईयों तथा फोये के लिये जैलटीन, पेपसीन, दवाई तथा पनीर तैयार करने की रैनट नामकी चीज गाय की आँतसे तैयार होती है। चीनी साफ करनेकी चोजें तथा प्रसियन व्लूनाम स्याही वनती है। मोमवत्तियों के अतिरिक्त लाखों मन चर्वी कपड़ेमें मांड़ी देनेके काममें आती हैं। 'गोरक्षा-कल्पतरु' पुस्तक (जिसकी भूमिका महात्मा गाधीजीने लिखी है) के पृष्ठ १५ पर लिखा है कि कसाईखानों में लहू को पकाकर उसकी बुकनी तैयार की जाती है। वह शायद आसाम में चाय तथा काफी के खेतों में खाद के तौर पर काम में लायी जाती है और वाकी वची हुई विदेशों को भेजी जाती है। सन १६२२ में २२४०० मन बुकनी सिलोन भेजी गयी। वह बुकनी यूरोप में भी भेजी जाती है और वहां उससे आल्वुमन खाद के पदार्थ और पोटाशियम सामनाइक वनाने का काम लिया जाता है। मांस सुखाकर वाहर भेजा जाता रहा है। यहां भी उसकी वहुत खपत है। चमड़े, हड्डी आदि के वढ़ते हुए खर्च के लिए दिनों दिन गोहत्या अधिक होती जारही है। 'सनातनधर्म-प्रतिनिधि-सभा' के लेख के अनुसार पंजाव के मन्त्री सरदार वलदेवसिंहजी ने एक सवाल का उत्तर देते हुए पंजाव में गो-हत्या के अङ्क इस प्रकार वतलाये हैं—

	सन १६३६-४०	१६४१-४२	कितनी	अधिक
गाय मारी गयीं	७७७७१	८८४१५	१०६४४	,,
वैल मारे गये	६७७७	१६१८७	६४१०	,,

दो सालों में ही पंजाब में २० हजार अधिक गाय, बैल मारे
गये। चमड़े चर्बी आदि की बढ़ी हुई खपत से तो जीवित की
अपेक्षा मारी हुई गाय का मूल्य अधिक बढ़ा। वनस्पति घी,
५ दूध पाउडर और कच्चे दूध से मक्खन निकाल कर बचे सप्रेटे
के प्रचार और व्यवहार ने भी जीवित गाय की जरूरत और
मूल्य कम कर दिया। वनस्पति घी आदि की मिल
शुद्ध घी दूध को मुकाबले में न ठहरने दिया। गाय रखना जब
लाभदायक न रहा तो गाय का रखना कठिन हो गया।
महात्मा गांधीजी ने 'हरिजनसेवक' पत्र जनवरी सन १९५०
में लिखा था, भारत के पशुधन की रक्षा का सवाल एक बड़ी
पेचीदगियों से भरी हुई आर्थिक समस्या है। इन पेचीदगियों
में से एक घी की मिलावट सदा से रही है। पिछले कुछ वर्षों
से यह खतरा बढ़ता जा रहा है। इसका कारण देश में सस्ते
वनस्पति तेल का आना है। असली घी बाजार से जाता रहा
तो गाड़ी और हल चलने के लिए पशुओं की नस्ल सुधारे और
घी का काम किये बगैर खेती का धन्धा असम्भव हो
जायगा, फिर तो पशुपालन कमाई के धन्धे की बजाय दिल
बहलाने की चीज रह जायगी।' भारत सरकार की दूध-रिपोर्ट
के पृ० ५३ पर लिखा है कि वनस्पति घी के कारण शुद्ध घी
के भाव नीचे गिर रहे हैं, यह वनस्पति अधिकतर मिलावट के
काम आता है। शुद्ध घी की रक्षा के लिये सरकार को मिलावट
बंद करने का सख्त कानून बनाना चाहिये। पृ० ११२ पर लिखा

है। उस समय जब सरकारी तजर्बे के फार्म पर दूध ~)॥;सेर तथा घी एक रुपया साढ़े दस आने सेर पड़ता था, तब गांव के दूध पैदा करने वालों को दूध का मूल्य सवा आने सेर तथा घी के दाम एक रुपये सेर मिलते थे, इस से यह सिद्ध है कि वनस्पति घी आदि के मुकाबला होने के कारण शुद्ध दूध, घी के पैदा करने वाले को नुकसान पहुंचता है, जो पशुओं की हानि का एक प्रधान कारण बनता है।

मोटर-लारियों और बोझ ढोने के मोटर-ठेलों ने बैल गाड़ियों के रोजगार को धक्का पहुंचाया। हल चलाने से बचे हुए दिनों में बैलों की जो कमाई थी, जिससे बैलों को लाभ पहुँचता था, वह न रही। बैलों को रखने का खर्च बढ़ गया। यह भी एक नुकसान का कारण बन गया।

गायों के नुकसान का तीसरा कारण गोचरभूमि की कमी है। देश तथा विदेश के बड़े-बड़े कारखानों से बनी सस्ती चीजों के मुकाबले में यहां की घरेलू देहाती दस्तकारियां नहीं ठहर सकीं। जो लोग दस्तकारी के द्वारा गुजारा करते थे, खेती ही उन के जीवन का एकमात्र आधार रह गया। देश में खेती पर गुजारा करने वालों की तादाद बढ़ी। खेती के लिए जमीन चाहिये, अतः गोचरभूमि की जमीन भी जोत ली गयी। १५० साल पहले तो आधे से भी कम लोग खेती पर गुजारा करते थे। सरकारी हिसाब से सन् १८८१ में ही ५८ प्रतिशत लोगों का गुजारा खेती

पर था। पर आज तो १०० में ८५ से अधिक खेती के सहारे हैं। ससार के अन्य स्वतन्त्र देशों में जमीन से गुजारा करने वालों की संख्या बढ़ी नहीं, वर कम हुई है। जर्मनी में जमीन पर निर्वाह करने वाले १८७५ और १९१६ के बीच ६१ से ३८, तथा इंगलैंड में १८७१ और १९२० के बीच ३८ से २० ही रह गये। जिन देशों में खेती पर निर्वाह करने वालों की संख्या घटी तथा दस्तकारी से निर्वाह करने वालों की बढ़ी, वहां तो खेती करने और पशु चरने के लिए काफी जमीन मिली और हमारे देश मे खेती पर निर्वाह करने वालों की तादाद बढ़ने के कारण गुजारे लायक भी जमीन नहीं रह गई। गोचरभूमि के लिए तो नाममात्र ही बची। संसार के अन्यान्य देशों में गोचर-भूमि के लिए हम से बहुत अधिक जमीन है—जैसे अमेरिका में १६ एकड़ जमीन पीछे एक एकड़, जर्मनी तथा जापान मे ६ पीछे एक २, इंगलैंड तथा न्यूजीलैंड में ३ के पीछे १ एकड़ गोचर है, पर हमारे देशमें तो २७ एकड़ पर केवल १ एकड़ ही है। अमेरिका में प्रति पशु १२ एकड़, न्यूजीलैंड में ८, जापान में ७, तथा इंगलैंड में ३॥ एकड़ जमीन है। पर अभागे भारत मे प्रति पशु पूरा एक एकड़ भी गोचर नहीं। प्रसिद्ध इतिहासकार सर विलियम हण्टर साहब लिखते हैं—'यहां खेती बढ़ती और गोचर घटता जाता है। बेचारे पशु के लिए दिन-पर-दिन मुश्किल के दिन आते जा रहे हैं। गोचर तथा पशुओं के चारे की कमी का दूसरा बड़ा कारण उन चीजों की खेती है, जो यहां के लोगा

के लिए जीवनोपयोगी नहीं। जैसे जूट, अफीम, चाय, काफी, तम्बाकू आदि। भारत सरकार की १६३१ की अङ्क रिपोर्ट के अनुसार हमारे देश में जूट की खेती ३४०२२५४ एकड़, अफीम ४२५६२ एकड़, काफी ६२३४६ एकड़, चाय ७७४६८३ एकड़, तम्बाकू १११२१८३ एकड़, अन्य २२१८३ एकड़ हुई। इस अनुमान से ५६॥ लाख एकड़ में इन्हीं चीजों-जैसी जमीन ठीक करके अन्न बोया जाय तो वह ५॥ करोड़ मन से कम न होगा, जिस से वार्षिक ५० लाख मनुष्यों और १० लाख से अधिक गायों के प्राण बच सकते हैं। इन चीजों की खपत भी प्रायः इस देश में नहीं, बाहर के अन्य देशों में ही रहती है। जैसे भारत सरकार की अङ्क रिपोर्ट के अनुसार १६३०-३१ में ही २३॥ करोड़ रुपये की चाय, एक करोड़ का तम्बाकू, ४४६ करोड़ रुपये का जूट और २ करोड़ रुपये की काफी बाहर विदेशों में भेजी गयी।

गोवंश की कमी का चौथा कारण है बड़े-बड़े शहरों में अच्छी गायों का ले जाया जाना और दूध देना बन्द होने पर उनका कसाइयों के हाथ बिक कर खतम हो जाना। कलकत्ता कारपोरेशन के प्रधान मि० पेइन लिखते हैं कि "कलकत्ते के ग्वाले देश की उत्तम गायों का सत्यानाश करते हैं। गायों पर ऐसे जुल्म किये जाते हैं कि वे छः से आठ मास तक दूध देने में पूरे तौर पर बांझ बन जाती है। जो बाँझ नहीं होती वह कमजोरी के कारण ग्याभिन नहीं हो सकती। इसलिए कसाई

के घर पहुँच जाती हैं। फल यह होता है कि आठ-दस वर्ष तक उपकारी जीवन बिताने की जगह ये गायें केवल दो ही वर्ष बछड़े देती हैं, जिन में से एक तो अवश्य कसाई के हाथ लगता है। यह अत्याचार देश की उत्तम गायों पर निरन्तर होता रहता है।" सरकारी दूधशालाओं के विशेषज्ञ मि० स्मिथ कहते हैं कि पिछले १५ सालों में इस तरह चार बड़े शहरों में ढाई लाख जवान गाय-भैंसों का वध हुआ है।

मि० आई साटिवड—"भारत में गाय रखना" नामक पुस्तक में लिखते हैं कि हिन्दुस्तान के शहरों में ढोरों की बड़ी छिछालेदर हो रही है। ऐसी दुर्दशा संसार के किसी देश में नहीं होती। इस कारण से स्थिति गम्भीर हो गयी है। 'जीव दयामण्डली' बम्बई द्वारा प्रकाशित "गाय का महत्व" नामक पुस्तक में पृष्ठ ५४ पर बड़े शहरों में होने वाले गोवधके अङ्क दिये हैं। कलकत्ता, जो भारत का सबसे बड़ा नगर है यहां और उस के निकटवर्ती हवड़ा को मिलाकर सालाना ६६७७५ गायों और ४४५७ भैंसों की हत्या होती है। दूसरे दर्जे के नगर बम्बई में सालाना ३३७२३ गाय और १३०२५ भैंसें मारी जाती हैं। हरियाने, शाहीवाल तथा देश की अन्यान्य नस्लों की अच्छी से अच्छी गायें कलकत्ते जाकर तथा अच्छी भैंसों और गायों की बड़ी संख्या बम्बई जाकर यों समाप्त हो जाती है। ऐसा ही हाल दूसरे बड़े-बड़े शहरों का है। जो नगर किसी समय देश की

जनता के सम्मुख सभ्यता तथा संस्कृति का आदर्श रखते थे वे ही आज उत्तम गायों, भैंसों को समाप्त करने के अड्डे बने हुए हैं।

गायों के नुकसान का पांचवां कारण है अच्छी नस्ल के सांडों और गायों की कमी या अभाव। दूध की कमी या नस्ल की परवा न करते हुए गाय का प्रायः सारा दूध निकाल लिया जाता है। बछड़े बछड़ी को उनका अपना हक भी नहीं मिलता। कम दूध मिलने के कारण बछड़े-बछड़ी कमजोर होते जा रहे हैं और नस्ल दिन-प्रति-दिन खराब होती जा रही है ! जिन दिनों दूध की अधिकता थी, बछड़े-बछड़ी आवश्यक दूध पीते थे और नस्ल अच्छी होती थी। हिसार के सरकारी फार्म में जिन दिनों आज की तरह दूध का व्यापार न था, बछड़े-बछड़ी पर्याप्त दूध पीते थे, तब यहां की नस्ल देश भर में प्रसिद्ध थी। बछड़े तो इतने बलवान होते थे कि फार्म की दीवार को फांद जाते थे। इसी कारण सरकार को फिर से दीवारें ऊँची करानी पड़ी थीं पर आज उसी फार्म के सांड उतने अच्छे नहीं हैं।' नस्ल की खराबी दूध के न मिलने या कम मिलने से बछड़े-बछड़ी कमजोर हो गये। बछड़ी गाय बनकर कम दूध देती हैं और बछड़े भी अच्छे सांड तथा बलवान बैल नहीं बनते।

गोवंश के ह्रास या कमी का सब से बड़ा कारण है सरकार तथा देश के पढ़े-लिखे समझदार कहलाने वाले लोगों

को गोवंश के प्रति लापरवाही। जहां की सरकार ने पशुओं की उन्नतिपर ध्यान दिया, वहाँ गायों की संख्या तथा दूध देने की शक्ति बढ़ी। उन सरकारों ने गाय की उन्नति पर खर्च भी अधिक किया। सरकारी खाल-रिपोर्ट पृ० १७ पर लिखा है कि अमेरिका तथा अन्यान्य राज्यों ने अपनी गाय की उन्नति पर सालना प्रति गाय एक रुपया खर्च किया, पर भारतसरकार ने सालाना प्रति पशु खर्च किए केवल दो पैसे। अन्यान्य सरकारों ने घी-दूध में नकली चीजों की मिलावट कड़े-कड़े कानून बनाकर बंद की। सरकारी मूंगफली रिपोर्ट मे लिखा है कि केनेडा तथा दक्षिणी अफ्रीका की सरकारों ने तो वनस्पति घी-जैसी चीजों का बनाना तथा बिकना कतई बन्द कर दिया। डेनमार्क की सरकार ने तो जब आवश्यकता हुई, अखबारों मे वनस्पति के विज्ञापन छपना तथा प्रचार तक बन्दकर दिया। यहां की सरकार परवा करती तो गायों की इतनी बुरी हालत न होती। शिक्षित और समझदार लोगों का तो गाय से मानो कोई सम्बन्ध ही नहीं रहा। भगवान श्रीकृष्ण का नो गाय चराते तथा राजा दिलीप का गाय के पीछे-पीछे फिरते जरा भी महत्व न घटा। पर आजके समझदार शिक्षित सज्जन गाय चराना तो दूर रहा, उसकी देख रेख रखने से भी नफरत करते है। उन्हें गायों को चारातक डालने मे लज्जा आती है। गाय की रक्षा और सेवा तो एक ओर रही। चमड़ा, चर्बी, हड्डी इत्यादि जिनके लिए प्रायः गायें मारी जाती हैं या चाय, काफी, वनस्पति घी, आदि चीजों का जिनके

अभाव से गाय को नुकसान पहुँचता है, अधिक व्यवहार भी ये समझदार और शिक्षित कहलाने वाले सज्जन ही करते हैं। यदि देश के प्रभावशाली समझदार तथा शिक्षित लोग गाय की परवा करते तो आज गोवंश की यह दुर्दशा न होती।

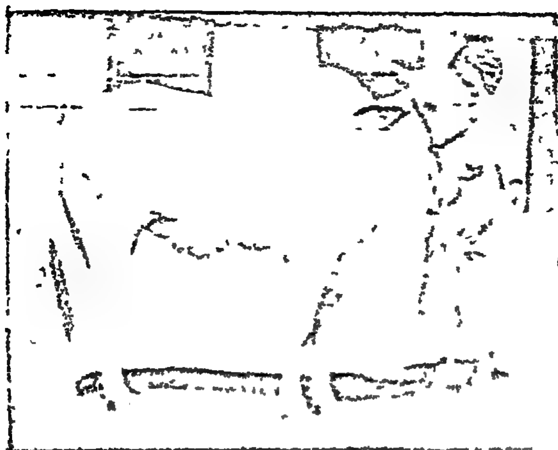
गोवंश कैसे बचे तथा उन्नत हो

गाय के नुकसानको देखकर देशके गोभक्त लोगोंमें गोरक्षा के कुछ विचार उत्पन्न हुए हैं। बीकानेर, जयपुर, जोधपुर, अलवर, पटियाला, जींद आदि रियासतों ने अपने किसानों तथा पशुओं के लाभ को दृष्टि में रखते हुये पशुओं का अपनी रियासत से बाहर जाना रोक दिया है। जगह-जगह गाँवों के लोगों ने गायों को बाहर के व्यापारियों के हाथ न बेचने के लिये पंचायतें की। हिसार तथा रोहतक के डि० बोर्ड ने अपने मेलो में दो साल से कम आयु के बछड़ों को बेचना बंद किया। शहरों में भी कुछ लोग स्वयं गाय रखने लगे। सरकार ने भी एक ढीला-सा कानून बनाया, ये सब ठीक हैं। इनसे कुछ-न-कुछ लाभ ही होगा, पर जब तक हम लगातार गायों की रक्षा तथा सेवा के काम पर न लगे रहेंगे यह भावना भी बहुत दिन, न ठहरेगी। इसलिये जरुरी है कि जो लोग धार्मिक आर्थिक या अन्य किसी भी दृष्टि से गाय की रक्षा और उन्नति चाहते हैं, वे गो रक्षा का असली काम करने के लिए नीचे लिखी बातों पर विचार करने की अवश्य कृपा करें।

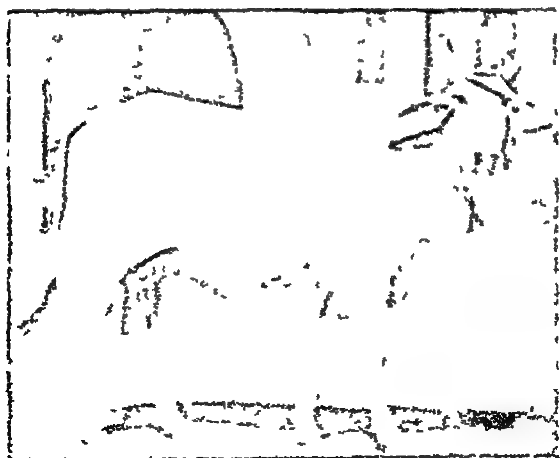
(१) गोवंश की जो संख्या आज है वह कम न हो वरं बढ़े। इसके लिये गॉव-गॉव और शहर-शहर में पंचायतें करवाकर गायों बछड़ो का बाहर के व्यापारियोंके हाथ बेचना बंद किया जाय। जान-पहचानके उन्हीं ग्राहकों को गाय बेची जायं जो अपने घर रखें। एक बार ही पंचायत करवाने से स्थायी लाभ न होगा, इन पंचायतों के फ़ैसले पर अमल होता रहे। इसके लिए भजन मडलियों तथा प्रचारकों द्वारा गोरक्षक तथा व्यापारीके हाथ गाय न बेचने का प्रचार लगातार जारी रक्खा जाय। साल में एक बार जिले या इलाके के प्रभावशाली सज्जन कई-कई गांवो की किसी बड़े बीच के गांव में पचायत करके लोगों को गो रक्षा के लिये समझावे और प्रेरणा करें। पूरी कोशिश हो कि एक भी गाय या बछड़ा बाहर के व्यापारियों को न बेचा जाय। व्यापारी जो गाय ले जायेगा वह अवश्य ही कसाईखाने पहुंचेगा। पशुओं के व्यापारी के हाथ या कसाई को सीधा बेचना बराबर है। धनाढ्य लोग गायों की संख्या बढ़ाने के लिये स्वयं गायें रखें। अच्छी गायों की पूरी-पूरी कीमत दें, जिससे कि वे व्यापारी या कसाई के हाथ न जा सकें।

(२) गायों की केवल संख्या बढ़ाने से ही काम न चलेगा नसूल अच्छी बनाने के लिये भी पूरी-पूरी कोशिश करनी होगी। अधिक दूध देने वाली गायों तथा बलवान् सांड और बैल मालिक के लिये नुकसान नहीं पर लाभ देने वाले होते हैं। आज-कल तो अच्छी गायें और अच्छे बैल भी मारे जाते हैं। पर अधिकतर

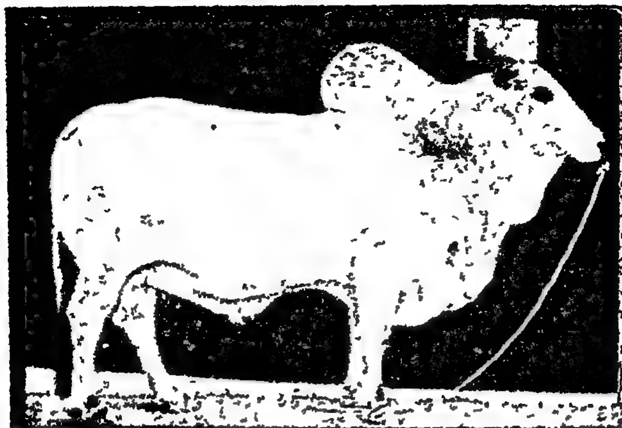
कम दूध देने वाली गायें और कमजोर बछड़े ही कसाईखाने पहुंचते हैं। मद्रास में सालाना प्रति सैकड़ा २१॥ तथा बङ्गाल में १६ गायें मारी जाती या मरती हैं, क्योंकि वहां बहुत ही कम दूध की गायें हैं। पर पञ्जाब में जहां अधिक दूध देने वाली गाय हैं, प्रति सैकड़ा ८ ही मारी जाती या मरती हैं। इसलिये जरूरी है कि गायों की दूध देने की शक्ति बढ़े, बैल और सांड़ बलवान् हों। अच्छे सांड़ रखने का प्रचार तथा प्रबन्ध किया जाय। अच्छी नसूल के बछड़े तथा बछड़ियों को उनकी माताओं का जितना दूध उन्हें चाहिये, पिलाया जाय। गोशालाएं अच्छी नसल की गायो का दूध उनके बच्चों को ही पिलावें, धनवान लोग जिस तरह स्कूल, कालेज, अस्पताल तथा अन्यान्य सेवा के कार्यों में रुपये खर्च करते हैं, उसी तरह गायों की रक्षा और उन्नति के लिये भी खर्च करें। गायों की नसूल सुधारने के लिये गोशालाओं के द्वारा या अलग स्वयं अपनी देख-रेख में अच्छी नसूल की गाय तथा सांड़ रखने, बछड़े तथा बछड़ियों को पूरा दूध पिलाने, उसके बाद बचे हुए दूध को निज के व्यवहार में लाने या बेचने का प्रबन्ध करें। जो बछड़ी इस तरह पूरा दूध पियेगी, वह बड़ी शक्ति-शालिनी होगी। ऐसी बछड़ी अच्छे सांड़ से,—जो अच्छे सांड़ की औलाद है और अपनी मां का पूरा दूध पी चुका है, मिलाई जायगी तो गाय बनकर अपनी मां गाय से कम-सेकम सवाया दूध देगी और उसकी औलाद डेढ़ा दूध देगी, जैसे पहली गाय दस सेर दूध देती होगी तो उसकी बेटी साढ़े बारह सेर और



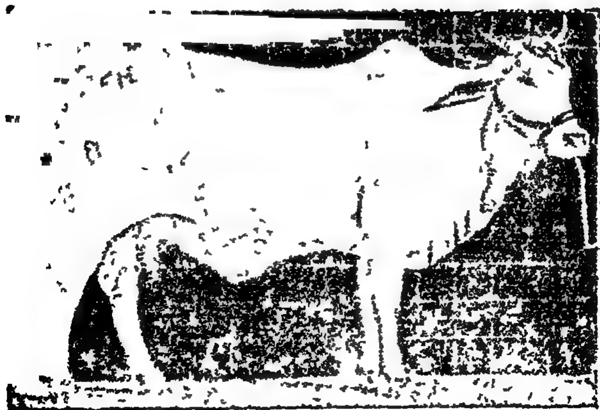
नागौरी सांड



नागौरी गौ



थार्परकर सांड



थार्परकर गौ

पोती सोलह सेर के करीब देगी। इसी तरह आगे की नस्लों में दूध बढ़ता जायगा। अन्यान्य देशों मे भी गायों की दूध देने की शक्ति बढ़ाने के लिये नसूल अच्छी करने की ही कोशिश की गई। अमेरिका में सन् १८५० में प्रति गाय सालाना ७१८ सेर दूध देती थी, वहां की सरकार ने तथा लोगों ने नस्ल सुधारने की कोशिश की, फल यह हुआ कि सन् १६२५ मे प्रति गाय सालाना दूध की औसत २२५० सेर हो गई। पूरा दूध पिला कर अच्छी नसूल के जो बछड़े तैयार किये जावें, उन्हें जहां तक हो, सांड़ ही छोड़ने का प्रबन्ध हो। गांव के लोगों की अच्छी हालत हो तो वे मूल्य देकर खरीद लें, अन्यथा इलाके मे धनाढ्य लोग उस बछड़े को खरीद कर सांड़ छोड़ दें। उस सांड़ के दाने-चारे का पूरा प्रबन्ध हो। हमारे शास्त्रों मे लिखा है 'वृपोत्सर्गादृते नान्यत्पुण्यमस्ति महीतले' अर्थात् संसार में सांड़ छोड़ने से बढ़ कर अन्य पुण्य नहीं है सांड़ के छोड़ने का पुण्य 'अश्वमेध यज्ञ' जैसा माना गया है। वृद्ध आदमी के मरने पर १७ वें दिन सांड छोड़ने की विशेष विधि है, जिसे 'वृपोत्सर्ग यज्ञ' कहा जाता है। पारस्कर गृह्यसूत्र के तीसरे काण्ड की नवीं कण्डिका मे अच्छे सांड के लक्षण लिखे है। सांड़ बहुत अच्छा ही छोड़ना चाहिये। बहुत-से लोग वृपोत्सर्ग के नाम पर कमजोर बछड़ोंको छोड़ देते हैं, जिनका पुण्य नहीं, पाप होता है। उन कमजोर सांड़ों द्वारा पैदा हुई गाय बहुत कम दूध देती तथा बैल हल चलाने, बोझा ढोने की शक्ति नहीं रखते। उनकी बड़ी संख्या कसाई खाने ही जाती

है। इस लिये पचायती तौर पर कमजोर सांड़ों का छोड़ना वन्द किया जाय। जो कमजोर, बूढ़े या बीमार साड़ हों वे उचित खर्च देकर गौशाला में रखे जायें। एक भी कमजोर सांड़ ग्याभिन होने वाली गायों में न रखा जाय। अच्छे सांड का जितना लाभ या पुण्य है, कमजोर सांड से उतना या उससे भी अधिक नुकसान या पाप समझना चाहिए। बड़े बड़े शहरों को जो आज गोहत्या के अड्डे बने हुए हैं, गोरक्षा के केन्द्र बनाने के लिए गोशालाएं या गोभक्त सज्जन दूध के व्यापार को अपने हाथ में लें और शहर के लोगों को शुद्ध दूध देने के लिये दुग्धशालाएं खोलें। धनवान् या जिन लोगों के पास साधन हों, वे निजकी गाय रक्खें। जब गाय दूध से सूख जावे तो उन्हें शहर से बाहर रखने का प्रबन्ध किया जावे। जब तक गाय बच्चा न दे —वहीं रहे। सब खर्च गाय का मालिक दे। गोशालाएं अलग, यह प्रबन्ध कर सकें तो अच्छा है। शहर के लोगों को शुद्ध दूध मिले तथा गोहत्या भी न हो, यह आवश्यक कार्य है। वरतन में छेद हों तो उस में जितना ही पानी डालते जाओ, कोई लाभ न होगा, इसी तरह जिन चीजों या कार्यों के लिये गोवध होता है, उनका भी जहां तक हो सके, व्यवहार वंद करना अति आवश्यक है। लाखों गाय केवल चमड़े, चर्वी आदि के लिये ही मारी जाती हैं। उनका व्यवहार कभी न किया जावे। यह ठीक है जिन लोगों को स्वार्थवश देश के लोगोंकी

भलाई नहीं चाहते या जो गोहत्या को धार्मिक पाप नहीं समझते उनकी गोहत्या बन्द करने में हम असमर्थ हैं। पर इतने पुरुष, जो गाय का आर्थिक ही नहीं धार्मिक महत्व भी मानते हैं, या गाय में देवताओं का निवास मानते हैं तथा उनके लिये मरने पर वैतरणी पार करने का एक मात्र सहारा गाय ही है—वे जिन चीज़ों के लिये गाय मारी जाती है उनका व्यवहार तथा व्यापार न करें, चमड़े के सामान तथा अन्यान्य चीजों का, जिनके लिये भी गाय मारी जाती हो, उपयोग न करें। वनस्पति घी आदि जो गोवध के नुकसान के कारण हैं, उनका व्यवहार तथा व्यापार न करें। संदेह हो कि इस चीज के लिए गाय मारी जाती है, तो विशेषज्ञों द्वारा जांच करा ली जाय। सरकारी कानून की तरह धर्म तथा व्यापार का कानून सन्देह का लाभ चीज व्यवहार करने वाले को नहीं देता। जैसे हम कुत्ते या अन्य किसी के द्वारा भोजन की चीज जूठी होने या जहर का संदेह होने पर नहीं खाते, इसी तरह जिन चीजों के बारे में हमारा यह संदेह भी हो कि इस चीज के व्यवहार-व्यापार या इस काम के करने से गायें मारी जाती हैं, उनका व्यवहार हमें कदापि नहीं करना चाहिये। पर जिन चीजों में संदेह नहीं, प्रत्यक्ष जानते हैं कि इनके तैयार करने में गोहत्या होती है, उनका व्यवहार तो हमें भूल कर भी कभी नहीं करना चाहिये। जैसे चमड़ा न आकाश से गिरता है न वृक्षों से फलता है और न पृथ्वी से उत्पन्न होता है, चमड़ा होता तो है पशुओं से,

अच्छे-बढ़िये जूते तथा अन्य चमड़े के सामान के लिये तो गाय का चमड़ा ही आवश्यक होता है। क्रोम (Chrome) चम । तो गाय को खास तरीके पर मारने से बनता है । काफ लैदर या बछड़े के चमड़े के जूते इसी नाम से बिकते हैं। इतना होने पर भी हमें न चमड़े के व्यवहार से परहेज है, न उसके व्यापार से। जो लोग स्वयं गोहत्या का कारण बने हुए हैं, उन्हें चाहिये कि स्वयं गोहत्यारे कारणों का व्यवहार-व्यापार तथा कार्य बंद करें। जिन-जिन चीजों के तैयार करने में गोहत्या होती है या जिनसे गायों को नुकसान पहुँचता है, उनका व्यवहार तथा व्यापार न करने के लिये पूरा—पूरा प्रचार करना अति आवश्यक है।

पांचवां तथा सब से आवश्यक उपाय हैं देश के पढ़े लिखे समझदार महानुभाव सज्जन गोरक्षा तथा गोसेवा के काम को अपनायें। देश के खेती करने वाले तथा गोशालाओं को चलाने वाले तथा गोभक्त, जिन्होंने इस बुरे समय में भी कष्ट उठा कर गायों को रक्खा, गोरक्षा की भावना बनाये रक्खी, उनका उत्साह बढ़ाया जाय। उनके साथ मिल कर ऐसा न हो सके तो अलग जिस तरह आज हाईस्कूल, कालेज, अस्पतालों के चलाने तथा अनेक संस्थाओं के प्रचार पर रुपया तथा शक्ति खर्च की जाती है, उसी तरह या उससे भी अधिक धन, शक्ति तथा परि-श्रम गायों की उन्नति तथा देश में गोरक्षा के प्रचार पर लगाया जावे। गोवंशकी उन्नति का कार्य देश के लिये आज के कलेज

अस्पताल आदि से कम आवश्यक नहीं है। इन अंग्रेजी स्कूल कालेजों से तो सम्भव है देश के लोगों की संस्कृति, सभ्यता तथा आचार-व्यवहार को लाभ के बदले कुछ हानि ही पहुंचती हो, पर गायों की उन्नति से तो लाभ ही लाभ होगा। देश के लोगों की आर्थिक तथा शारीरिक अवस्था सुधरेगी, संस्कृति सभ्यता बचेगी, और सच्ची धार्मिक भावना बढ़ेगी।

क्या करें ?

गाय मनुष्य के बिना जीवित रह सकती है पर मनुष्य का जीवन तो गोवंशपर ही निर्भर करता है। इसलिये प्राचीन काल से सब देशों मे गाय का महत्त्व रहा है। हमारे देश में पहले के ऋषि मुनि महात्माओं ने ही नहीं, इस सदी के महापुरुषों ने भी गाय के महत्त्व की ओर लोगों का ध्यान दिलाया। स्वामी दयानन्द जी सरस्वतीने गोरक्षा के लिये 'गोकरुणानिधि' नामक पुस्तक लिखी थी, जिसमे एक गोवंश के दिये हुये दूध तथा अन्न से ४१०४४० मनुष्यों का पालन एक बार के भोजन से लिखा है। गाय के लाभ बतलाते हुए इन्होंने 'गोरक्षिणी सभा' कायम करने का आदेश दिया था। वैदिक यज्ञोंका तो सदा का नाता ही है घी, दूध अन्नादि हविके पदार्थ, जिनके लिये गाय चाहिये। महात्मा गांधीजी ने २६ जनवरी सन १९२५ के 'यंग इंडिया' में लिखा है- 'मैं गोरक्षा के सवाल को स्वराज्य के बराबर नाचीज या कम भी नहीं समझता, किन्तु मेरी धारणा है कि गोरक्षा का सवाल स्वराज

से भी अधिक महत्त्व रखता है। जब तक हम गायको बचाने का कोई उपाय ढूंढ़ नहीं निकालते, तब तक स्वराज्य का कोई अर्थ ही न कहा जायगा। गोवध और मनुष्यवध मेरी राय में एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।' महात्माजी ने अपने 'नवजीवन' तथा 'हरिजनसेवक' में कितने ही लेख गोरक्षा के सम्बन्ध में लिखे हैं। दिल्ली के प्रसिद्ध हकीम अजमलखां साहब ने सन् १९१९ में अखिल भारतीय 'मुस्लिमलीग' के अमृतसर अधिवेशन में गाय का महत्त्व बतलाते हुए गोरक्षा के लिये विशेष जोर दिया था तथा गोरक्षाके लिये लीग ने प्रस्ताव भी पास किया था। जिन सज्जनों को भी हमारे देश की अवस्था का कुछ ज्ञान था या है, जो देश की उन्नति चाहते हैं, उन सबने गोवंश की रक्षा तथा वृद्धि की ओर हमारा ध्यान दिलाया है। हमारा कर्त्तव्य है कि गोरक्षा तथा गोसेवा के लिये कार्य करें यदि एक साथ सारी गायों की रक्षा नहीं कर सकते तो जितना हो सके उतना काम करें। एक-एक बूंद मिलकर ही समुद्र भरता है। हम भी हर एक काम को, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, करते हुए गाय के लाभ को दृष्टि में रखें तो गाय को बहुत लाभ पहुंचेगा। साहस, धैर्य तथा परिश्रम से गोसेवा के काम पर लग जावें तो अपने--आप गोसेवा का सीधा तथा सहज मार्ग निकल आयगा। जो स्वयं साहस, धैर्य तथा परिश्रम के साथ कार्य में लगते हैं, भगवान् भी उन्हीं की सहायता करते हैं।

नस्ल-सुधार

सारे संसार की एक तिहाई पशु-संख्या होने पर भी हमारे देश के लोगों को न तो पर्याप्त दूध-घी मिलता है और न खेती के लिए आवश्यक बैल ही। न्यूज़ीलैण्ड में प्रतिदिन प्रति मनुष्य १२२ छटांक, डेन्मार्क में ७४ छटांक, कनाडा में ३३ छटांक, अमेरिका में १८॥ छटांक और इंग्लैण्ड में ७ छटांक दूध उत्पन्न होता है। इन देशों की अधिकांश जनता मांस-भोजी है, किन्तु हमारे अभागे देशमें, जहां करोड़ों लोगों के स्वास्थ्य एवं शक्ति का आधार एक मात्र दूध ही है, आज प्रतिदिन प्रतिमनुष्य २ छटांक से भी कम दूध का उत्पादन रह गया। करोड़ों मनुष्यों को दूध मिलता ही नहीं, लाखों बच्चे दूध के अभाव में बिलख-बिलख कर मर जाते हैं। यों तो उपयोगी पशुओं का वध एवं चारे की कमी आदि भी दूध की कमी के बड़े कारण हैं। किन्तु मुख्य कारण है नस्ल-सुधार के प्रति हमारी उपेक्षा। नस्ल-सुधार की ओर ध्यान देने से अन्य देशों की गायें बहुत अधिक दूध देने लगी हैं, जैसा कि निम्नलिखित आंकड़ों से प्रत्यक्ष है—

देश	वार्षिक प्रतिगाय दुग्ध उत्पादन
डेन्मार्क	८७ मन २२ सेर ८ छटांक
इंग्लैण्ड	६६ मन २८ सेर

जर्मनी	६६ मन १२ सेर ८ छटांक
भारतवर्ष	६ मन २२ सेर ८ छटांक

डेन्मार्क में सन् १६०० में प्रत्येक गाय वार्षिक औसत ४८५० पौंड दूध देती थी, किन्तु नस्ल सुधार के परिणाम स्वरूप सन् १६३४ में प्रत्येक गाय ७०५५ पौंड दूध देने लगी। सन १६२३ में लार्ड लिन्लिथगो कमीशन ने बतलाया था कि ४० वर्ष में इग्लैण्ड के दूध का उत्पादन दुगना हो गया। लैटविया जैसे छोटे से देश में १६३० से १६३५ तक में दूध का उत्पादन ३० प्रतिशत बढ़ गया, पर हमारे देश में सन १६३५ में दूध का उत्पादन प्रति मनुष्य ४ छटांक था जो अब २ घटांक अर्थात् आधा भी नहीं रहा।

प्राचीन समय में नस्ल-सुधार

जिन दिनों देश में अपना राज्य था और लोगों में धार्मिक भावना थी, उन दिनों नस्ल-सुधार एक मुख्य कार्य समझा जाता था। बड़े बूढ़ों के मरने पर तथा विशेष पर्वों पर पंचायत की सम्मति एवं विशेषज्ञों के परामर्श से अच्छी नस्लबनाने के लिए वृषोत्सर्ग अर्थात् सांड़ छोड़ने का विधान था। 'वृषोत्सर्गादृते नान्यं पुण्य-मस्ति महीतले' —इस शास्त्र वचन पर श्रद्धा रखते हुए गांव के लोग अच्छे सांड़ों की पूरी तरह देख-रेख करते थे; खाने-पीने की तो कोई कमी ही न थी। पारस्कर गृह्यसूत्र तथा अन्य शास्त्रों में

अच्छे सांड़ों के लक्षणों का तथा उनके पालन का विशद वर्णन मिलता है। सांड़ों के अतिरिक्त घर-घर ढेरों गायें रक्खी जाती थीं, जिनके दूध का मक्खन नहीं बनाया जाता था वह सारा दूध बालकों एवं बछड़े-बछड़ियों को पिला दिया जाता था। ऐसा दूध पीकर बछड़ी दुधारू गाय और बछड़ा उत्तम बैल या सांड़ बनता था।

मुसलमानी कालमें नस्ल-सुधार

हिन्दूकाल में तो नस्ल-सुधार पुण्यकार्य माना ही जाता था, मुसलमान बादशाहों के समय में भी, जनता ही नहीं, राज्य की ओर से भी, नस्ल-सुधार का कार्य जारी था। मैसूर के नवाब टीपू सुल्तान ने वहां की प्रसिद्ध गायों की नस्ल को उन्नत करके अमृतमहल नाम रक्खा, जो आज भी इसी नाम से प्रसिद्ध है। झज्जर के नवाब ने विशेष सांड़ मंगवा कर हरियाना नस्ल का निर्माण किया था। इस प्रकार मुस्लिम-काल में राजा तथा प्रजा दोनों के सहयोग द्वारा नस्ल-सुधार का काम होता रहा।

अंग्रेजी राज्यमें नस्ल-बिगाड़

अंग्रेजी राज्य में नस्ल के सुधरने की कौन कहे, वह उलटे बिगड़ गयी। पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव से तथा राजा-प्रजा में आन्तरिक सहयोग न रहने के कारण नस्ल-सुधार का स्वाभाविक कार्य बन्द हो गया। सरकार ने नस्ल-सुधार के कार्य को हाथ में

लिया अवश्य पर उससे लाभ के स्थान में बहुत बड़ी हानि हुई। इसके चार मुख्य कारण हैं।

१. नस्ल-सुधार के फार्मों में देश-विदेश की भिन्न-भिन्न नस्लों के सांड़ों तथा गायों को मिलाकर वर्णसंकर नस्ल बनायी गयी। इन वर्णसंकरता से यहां की गायें उन्नत न होकर अवनत ही हुईं। डा० राइट तथा अन्य सरकारी विशेषज्ञों ने वर्णसंकरता की निन्दा की है और इसे यहां के लिये हानिकारक बतलाया है। सिविल वैटिरिनरी विभाग के इंस्पेक्टर जनरल लेफ्टिनेन्ट कर्नल पीज साहब ने 'पंजाब में पशुओं की असली नस्लें' नामक एक पुस्तक लिखी है, जिसमें उन्होंने लिखा है कि देश के सब से बड़े सरकारी सांड़-उत्पादन-फार्म हिसार द्वारा देश की भिन्न-भिन्न नस्लों की वर्णसंकरता के कारण गायों के दुग्धोत्पादन में कमी आ गयी और नस्ल की भी अवनति हुई। सरकार ने यहां की प्राचीन नस्ल-सुधार-प्रणाली को न अपना कर देशों को हानि पहुंचायी है।

२. वर्णसंकरता दोष के अतिरिक्त नस्ल-सुधार का कार्य हुआ भी समुद्र में बून्द के समान, नहीं के बराबर ही! सन् १९२७ को भारतीय कृषि-कमीशन ने अपनी रिपोर्ट में देश के लिये १० लाख अच्छे सांड़ों की शीघ्र तथा दो लाख सांड़ों की वार्षिक आवश्यकता बतलायी है। किन्तु सन् १९३९ तक केवल १० हजार सांड़ों का ही प्रबन्ध हो सका। सरकारी फार्मों में तो १ हजार भी तैयार नहीं हुए।

३. गांव के सांड़ों को अच्छा-बुरा बतलाने तथा रखने या न रखने के लिये सरकार जिन पशु-डाक्टरों को नियुक्त करती है, उन्हें केवल पुस्तक-ज्ञान ही होता है, अनुभव कुछ नहीं। सरकारी वैटिरिनरी कालेजों में, जहां से ये डाक्टर पढ़ कर निकलते हैं, अनुभव या वास्तविक ज्ञान के लिये गो-शालाएं आदि रखने चाहिये, पर वहां ऐसा नहीं होता। यहां बम्बई, लाहौर, मद्रास, कलकत्ता तथा पटना—इन पांच स्थानों में बड़े वैटिरिनरी या पशु-चिकित्सा-शिक्षा के कालेज हैं, किन्तु डा० राइट की रिपोर्ट की अंक-संख्या ४० के अनुसार कलकत्ता और पटना को छोड़कर अन्य किसी भी कालेज में न कोई पशु है और न गोचर-भूमि ही। कलकत्ता में भी केवल २० ही पशु हैं और वे भी वर्णसंकर हैं। जिन डाक्टरों ने अपने कालेज की पढ़ाई में पशुओं की शकल तक न देखी हो और न उनके गुण दोषों का कोई प्रत्यक्ष अनुभव किया हो, उनके हाथों नस्लसुधार का काम देने से तो लाभ के स्थान पर हानि ही होगी और साथ ही धन का अपव्यय भी होगा। इन डाक्टरों की अपेक्षा तो गांव के पुराने लोगों को पशुओं का अधिक ज्ञान है।

४. सरकार की उपेक्षा के कारण हांसी तथा हिसार की नस्ल की गायें बड़े शहरों में पहुँचती हैं और जब उनका दूध सूख जाता है तब सीधी कसाईखाने भेज दी जाती हैं। सरकार ने स्वयं तो नस्ल-सुधार का काम किया ही, किन्तु लोगों द्वारा उत्तम सांड़ रखकर जो अच्छी नस्ल की गायें तैयार की जाती थीं,

उनको भी भविष्य के नस्ल-सुधार के लिये बचने न दिया अर्थात् गो-वध में किसी प्रकार की रोक न लगा कर उन्हें भी कट जाने दिया।

श्रीयुत स्मिथ महोदय, कर्नल मेट्सन तथा अन्य कितने ही उच्च सरकारी अधिकारियों ने इस हानि तथा अन्याय की ओर सरकार का ध्यान दिलाया, पर सरकार के कान पर जूँ तक न रेंगी। इससे यह सिद्ध है कि सरकार ने नस्ल सुधार के प्रति केवल उपेक्षा ही नहीं की, वरं प्रकारान्तर से नस्ल को बिगाड़ने का भी प्रयत्न किया तथा अच्छी नस्ल के पशुओं को अबाधरूप से वध करने की छूट देकर जनता को दुखी और निरुत्साहित किया!

नस्ल-सुधार कैसे हो?

देश में दूध तथा बैलों की कमी होने के कारण जनता का कुछ ध्यान इधर गया है। सरकार ने कुछ करवट बदली, किन्तु जब तक यहां की अवस्था के अनुकूल स्थायी-सिद्धांतों के नस्ल-सुधार का कार्य न होगा तब तक कुछ लाभ होने को कौन कहे, हानि ही होगी। सिद्धान्तों के अतिरिक्त आरम्भ में आर्थिक लाभ की आशा न रख कर कुछ घाटे की ही सम्भावना रखनी चाहिए, क्योंकि देश में अच्छी नस्ल के पशु बहुत कम हैं। इस कार्य में विशेष उद्योग करना पड़ेगा, कुछ समय तक धैर्य पूर्वक प्रतीक्षा भी करनी होगी। नस्ल-सुधार के लिए निम्न-लिखित बातों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है—

१. जिस इलाके में नस्ल-सुधार करना हो उसी इलाके की अच्छी नस्ल की गायों और सांडों का उपयोग इस कार्य में होना चाहिए। भिन्न भिन्न नस्लों की वर्णसंकरता या अन्य इलाके की नस्ल को अन्य इलाके में लाकर स्वयं परिवर्तन करना ठीक नहीं, जैसा कि सरकार कर रही है। करनाल और दिल्ली हरियाना नस्ल के स्थान हैं। यहां हरियाना नस्ल बहुत अच्छी उन्नत हो सकती थी, किन्तु सरकार दिल्ली के निकट मिंटगुमरी की साहीवाल तथा करनाल में सिंध की थारपारकर नस्ल को उन्नत करने का असफल प्रयत्न कर रही है तथा इस काम में बहुत अधिक धन भी व्यय कर रही है जो व्यर्थ ही है। सम्भव है पहले कुछ दिनों तक इस में कुछ लाभ दिखाई पड़े किन्तु परिणाम हानिकर होगा। गोपालकों को तो इससे कोई लाभ हो नहीं। भारत सरकार ने स्कॉटलैण्ड के प्रसिद्ध विशेषज्ञ मि० राइट को बुलाया, उन्होंने अपनी रिपोर्ट पृष्ठ ६६ तथा ६८ में स्थानीय आवश्यकता को महत्व देते हुए हमारी ही जैसी जल वायु के जमैका, ट्रिनीडाड तथा नाइजेरिया का उदाहरण देकर जिस इलाके में जो नस्ल है वहां उसी को उन्नत करना लाभ-दायक बतलाया है।

२. सरकार तथा उसके पश्चिमीय ज्ञान की धाराओं में भटके हुए विशेषज्ञ दूध पर नहीं, वर [illegible] उत्पन्न करने वाली नस्ल तयार करने पर ही जोर देते हैं, किन्तु यह उनकी भूल है। असल में प्रकृति ने जो नस्ल जिस इलाके में

जिस काम के लिये बनायी है, उसे उसी अवस्था में उन्नत करना चहिये। उदाहरणस्वरूप साहीवाल नस्ल दूधके लिये, नागौर एवं धन्नी बैलों के लिये, तथा हरियाना और हिसार दूध एवं बैल दोनों उत्पन्न करने के लिये लाभदायक हैं। हमें दूध और बैल दोनों की आवश्यकता है, अतः हरियाना नस्ल ही सबसे अधिक लाभदायक है, उत्तर भारत मेंप्रायः यही नस्ल होती है, किन्तु अलग-अलग इलाकों में भिन्न-भिन्न आकार-प्रकार की जहाँ जो नस्ल हो, वहाँ उसी की उन्नति करना उपयुक्त है। हिसार, रोहतक और गुड़गाँव में शुद्ध हरियाना, तथा अलवर आदि में छोटे कद की हरियाना गायों की ही उन्नति होनी चाहिये यही बात सभी इलाकों के सम्बन्ध में ठीक पड़ेगी। प्रायः लोग हिसार-रोहतक से गायें ले जाकर नस्ल-सुधार प्रयत्न करते हैं। किन्तु इससे गायों की आयु कम हो जाती है, वेदूध कम देती हैं, गायों की नस्ल को हानि पहुँचती है और ले जानेवाले को भी कोई स्थायी लाभ नही होता।

३. नस्ल-सुधार के लिये उसी इलाके की अच्छी गायें तथा सांड़ रखने चाहिए। गायों की तो पूरी देख-रेख हो ही, साथ ही बछड़े-बछड़ियों को आधा अथवा जितना दूध वे पचा सकें, थनों से ही पिलाया जाय तथा साफ रखने आराम देने और मिट्टी न खाने देने आदि का पूरा-पूरा प्रबन्ध हो। बड़े होने पर भी उन्हें ठीक रक्खा जाय। यदि आवश्यक दूध पिलाया जाय और ठीक समय आनेपर अच्छे सांड़ से संयोग कराया जाय तो ऐसी गाय

अपनी माता से सवाया, उसकी बेटी ड्योढ़गुना से अधिक और चौथी पीढ़ी की गाय लगभग दुगना दूध देगी। बछड़े भी अच्छे बैल तथा सांड़ बनेंगे।

४. गांव में जिन लोगों के यहां अच्छी नस्ल की गायें हों, जिन्होंने बछड़ों को पर्याप्त दूध पिलाया हो तथा जो बछड़े सांड के योग्य हों, उन्हें खरीद कर सांड़ बनाने के लिये पाला जाय।

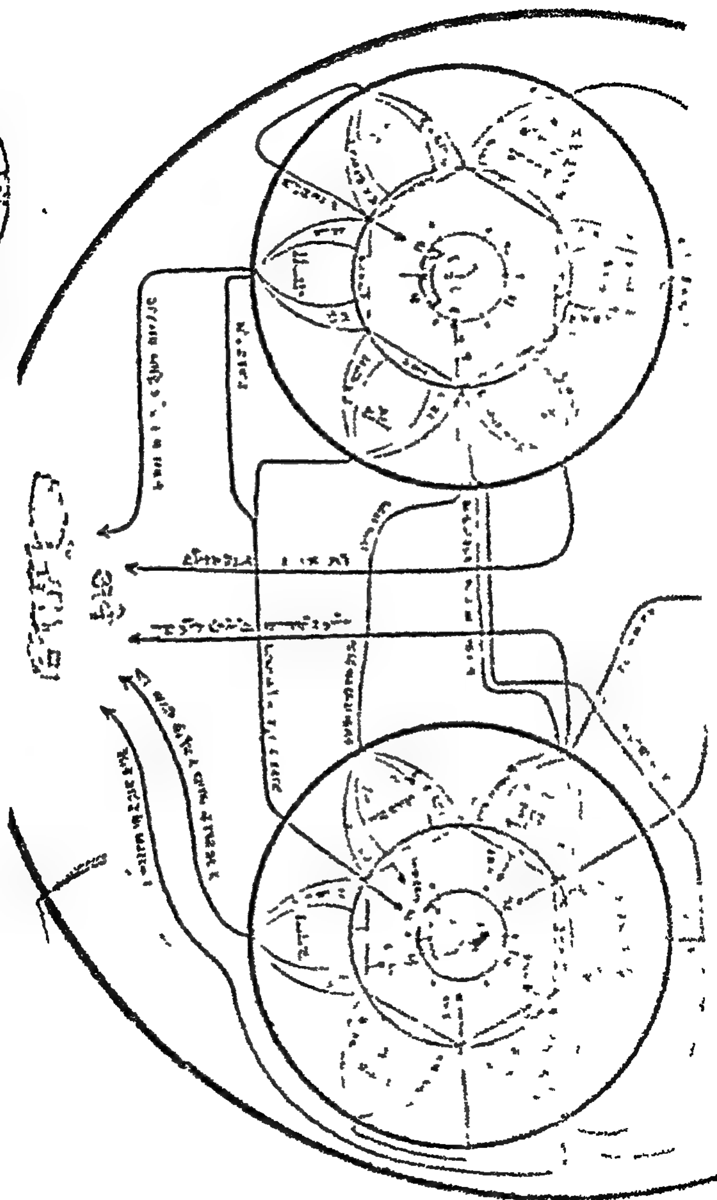
५. नस्ल सुधारके लिए ऐसी गायें खरीदी या रक्खी जाय जो अधिक दिन तक अधिक दूध दें, लंबे और नरम शरीर की हों, कान-सींग बड़े न हों, थन बड़े और एक से हों, छवाना लटकता हुआ न हो और जो तीन महीने के भीतर गाभिन हो जाने वाली हो तथा दूध एक साथ ही उतारती हो। जिनकी दादी और नानी में भी ये ही गुण हों तथा जो ऐसे सांड से उत्पन्न हुई हों, जिनकी बछड़ियां अधिक दूध देने वाली होती हों सांड़ के लिये बछड़ा भी अच्छी नस्ल वाली गाय का तथा अच्छे सांड से उत्पन्न हुआ होना चाहिये।

६ दूध दुहने का काम हर किसी व्यक्ति से नहीं लेना चाहिये बल्कि उसी को यह काम सौंपना चाहिये जो गायों से प्रेम रखता हो, शीघ्रता से दुह सके और दोहनकला में निपुण हो। नस्ल सुधार का काम केवल नौकरों पर छोड़ने की चीज नहीं है, वरं स्वयं सावधानी के साथ ही उसमें लगे रहने की आवश्यकता है।

७. नस्ल सुधार की गायों को चारा पानी ठीक समय पर देना चाहिये। नस्ल सुधार के लिये गाय सांड़ों की उत्तमता की आवश्यकता तो है ही साथ ही चराई और देख रेख का प्रश्न भी कम आवश्यक नहीं।

८. देशकी गोशालाएं नस्ल सुधारका काम हाथ में लें तो अधिक सफलता मिलनेकी आशा है। इस रीतिसे खर्च भी कम पड़ेगा। उनके पास मकान,गोचरभूमि तथा नौकरोंका प्रबन्ध रहता है एवं उनके कार्यकर्ताओंका पहले का कुछ अनुभव भी होता ही है। अवश्य ही पहले पहले उन्हें अच्छी गायों के खरीदने में धन लगाना पड़ेगा तथा बछड़े बछड़ियों को आवश्यक दूध पिलाने से दूध की आय में भी कमी रहेगी। किन्तु कितने ही गौशालाओं के पास तो बहुत सा धन जमा है ही फिर वे अच्छी तरह कार्य संचालन करेंगी तो उन्हें और भी मिल सकता है। गोशालाएं इस काम को करेंगी तो नस्ल सुधार के लिये अच्छे सांड़ और गायें मिलने लगेगी। जब नस्ल सुधर जायगी तब दूध का उत्पादन और फलस्वरूप आय भी बढ़ जायगी।ठीक ढंग से काम किया जायगा तो कुछ वर्षों में गोशाला के ऊपर गायों का बोझ नहीं रहेगा, वरं अपने चारा पानी का खर्च निकालती हुई वे ठाट तथा अशक्त गायों का भी खर्च पूरा कर देंगी और उनकी रक्षा भी कर लेंगी।

९. जो किसान नस्ल सुधार का कार्य करे या अच्छी गायें



गौ-रूप भूमि और भूमि-रूप गौ

चारों पुरुषार्थोंका प्रधान साधन







रक्खे उन्हें विशेष सहायता दी जानी चाहिये। हिसार तथा रोहतक डिस्ट्रिक्ट बोर्ड ऐसी सहायता किसी अंश में दे रहे हैं।

१०. अच्छी नस्ल की दुधारू गायें कलकत्ता बम्बई आदि बड़े शहरों में भेजी जाती हैं और दूध सूख जाने पर कसाई के हाथों बेच दी जाती हैं। ऐसी गायों का इन शहरों में भेजना कतई बंद कर दिया जाय। गांव गांव में पंचायतों द्वारा यह निर्णय कराया जाय कि कोई भी ऐसे ग्राहक के हाथ गाय न बेचे।



दुग्ध-शाला या डेयरी-फार्म

देश में पहले से ही पश्चिमीय ढंग पर कुछ सरकारी तथा निजी डेयरी-फार्म चल रहे हैं। इन दिनों तो दूध-घी की कमी होने के कारण स्थान स्थान पर ऐसे डेयरी-फार्म खोले जा रहे हैं या खोलने की योजनायें बन रही हैं। इनका प्रधान उद्देश्य है—दूध, मक्खन आदि की बिक्री द्वारा तुरन्त अधिक से अधिक धन कमाना। कितने ही पश्चिमीय सभ्यता एवं शिक्षा के उपासक तथा उनके पीछे चलने वाले भोले-भाले लोग देश में होने वाली गायों-बैलों तथा दूध-घी की कमी को दूर करने एवं गोवंश को उन्नत करने का साधन भी इन्हीं डेयरी फार्मों को मानते हैं, इनका समर्थन करते हैं तथा इन को जारी करने का विचार और प्रबन्ध करते हैं। पर वास्तव में, हमारे देश की धार्मिक, आर्थिक, शारीरिक एवं सामाजिक अवस्था को दृष्टि में रखते हुए ये पश्चिमीय ढंग पर चलने वाले डेयरी-फार्म ठीक नहीं हैं, ये गो वंश की उन्नति के लिए उपयोगी नहीं हैं और न ये चलाने वालों के लिये ही स्थायी रूप से लाभदायक हैं।

इन दिनों देश में तीन प्रकार के डेयरी-फार्म हैं—प्रथम फौजी डेयरी-फार्म, जो गाय भैंस रखकर फौजियों के लिए दूध मक्खन आदि का प्रबन्ध करती हैं, द्वितीय, निजी डेयरी-फार्म

जो जनता को दूध-मक्खन आदि बेचने के लिए पशु रखते हैं, तृतीय, डेयरी वाले वे लोग, जो स्वयं पशु नहीं रखते, पर आस पास के पशु पालकों से दूध मोल लेकर दूध के रूप में या दूध से मक्खन-क्रीम आदि निकाल कर स्वयं बेचते हैं या पशु-पालक को वापिस दे देते हैं। जहां तक पशुओं की उन्नति का प्रश्न है, तीसरे प्रकार के डेयरी वालों का तो पशुओं से कोई सम्बन्ध ही नहीं, फौजी और निजी डेयरी-फार्मों में भी तभी तक गाय-भैंसें रक्खी जाती हैं, जब तक चारे तथा देख-रेख आदि का खर्च कम रहे और दूध की आय अधिक हो। जब दूध कम हो जाता है या पशु बीमार हो जाता है या दूध की अपेक्षा चारे दाने का भाव चढ़ जाता है, तो पशु बेच दिया जाता है। दूध से सूखे हुए ऐसे पशु को प्रायः कसाई ही खरीदते हैं। ऐसे पशु को बेच कर डेयरी वाले फिर दूसरा खरीद लेते हैं। इसी प्रकार यह क्रम लगातार चलता रहता है और पशुओं का निरन्तर ह्रास होता जाता है। डेयरी वाले प्रायः अधिक दूध देने वाली गाय-भैंसें ही खरीदते हैं। वही जब दूध देना कम या बन्द करती हैं तो प्रायः नष्ट कर दी जाती हैं। जिसका नस्ल सुधार पर बड़ा बुरा प्रभाव पड़ता है। अच्छी नस्ल न रहने के कारण डेयरी वालों को स्थायी लाभ भी नहीं रहता। बार-बार पशु खरीदने में भी कष्ट होता है तथा पशु के अच्छे-बुरे होने का भी कोई निश्चय नहीं होता। इसलिए डेयरी चलाने में निश्चित रूप से लाभ होगा, यह बात नहीं है। देश में डेयरी फार्म खुलते हैं, पर घाटे

के कारण या तो बन्द हो जाते हैं या हानि उठाकर ही चलाये जाते हैं। सरकारी दुग्ध-रिपोर्ट, सन् १६४२ के पृष्ठ १३० पर डेयरी-फार्मों का वर्णन करते हुए लिखा है—'देशमें पचहत्तर या अस्सी डेयरी-फार्म हैं, जिन में से ६८ के लगभग फौजी या सरकारी हैं तथा शेष जनता के लिये हैं। जो डेयरियां लोग खोलते हैं, वे प्राय: घर मे ही चलती हैं।'

यह सरकारी विशेषज्ञों का मत है। जनता के लिये भी ये डेयरियां अच्छी नहीं। अच्छे पशु फौजी और निजी पशु रखने वाली डेयरियों के द्वारा खतम हो जाने का तो नुकसान है ही। इन डेयरी-फार्मों द्वारा मक्खन-क्रीम आदि निकालने पर जो निर्घृत दूध बचता है, वह सघृत दूध में मिलाकर या उसकी दही, मिठाई आदि चीजें शुद्ध घी की चीजों के नाम से बिकती हैं, जिस से खरीदने वालों को तो बड़ा धोखा होता ही है तथा हानि उठानी पड़ती ही है, साथ ही शुद्ध दूध वेचने वाले ईमानदार पशु-पालकों को भी प्रतिस्पर्धा के कारण पूरे दाम नहीं मिलते। वे बेचारे पशु रखना छोड़ देते हैं या दूध में मिलावट करने को मजबूर हो जाते हैं। यह सिद्ध है कि पश्चिमीय ढंग के इन डेयरी-फार्मों से गोवंश का नाश होता है, डेयरी चलाने वालों का निश्चित तथा स्थायी लाभ नहीं होता, जनता और पशु-पालकों को भी हानि ही उठानी पड़ती है।

अब प्रश्न यह उठता है कि यदि ये डेयरी-फार्म सफल नहीं हो सकते तो जनता को निश्चित रूप से दूध, मक्खन आदि

कैसे और कहां से मिले ? देश की तीन चौथाई से अधिक जनता जो गांव में रहती है तथा पशु रखती है। उसे दूध खरीदने की आवश्यकता नहीं। यदि आवश्यकता होती है तो वहीं से मिल जाता है। शहरों में रहने वालों के लिये दूध की आवश्यकता अवश्य है। वे प्रायः निकट गांव के पशु-पालकों से या नगर की डेयरियों से दूध खरीदते हैं, पर उन्हें जितने दूध की आवश्यकता होती है, उतना नहीं मिलता तथा जो मिलता है वह भी शुद्ध तथा अच्छा नहीं होता। अतः कुछ न कुछ व्यवस्था अवश्य होनी चाहिये। प्राचीन समय में कई कई हजार गायें रखने वाली गोशालाएं थीं तथा नस्ल की उन्नति करने के साधन थे, पर दूध बेचने वाली डेयरियों का वर्णन कहीं नहीं मिलता, बल्कि दूध का बेचना या उसका व्यापार करना तो एक बुरा काम समझा जाता था। कितने ही गांवों में तो आज भी दूध का बेचना अच्छा नहीं समझा जाता और वहां प्रायः लोग दूध नहीं बेचते। सौ वर्ष पहले शहरों में रहने वाले प्रायः लोग दूध घी के लिये अपने पशु रखते थे तथा उनकी देख-रेख करते थे। जो लोग गायें नहीं रख सकते थे, उन्हें शहर के ग्वालों से ही अच्छा, शुद्ध तथा सस्ता दूध मिल जाता था। उस समय आजकल के डेयरी फार्मों की आवश्यकता नहीं थी। पर आज की स्थिति उस से बिल्कुल विपरीत है। पश्चिमीय सभ्यता से प्रभावित तथा अन्य परिस्थितियों से मजबूर होकर प्रायः शहर वाले स्वयं पशु नहीं रखते या नहीं रख सकते। अतः उन्हें शुद्ध दूध मिले, इस

के लिए किसी न किसी साधन की अत्यन्त आवश्यकता है । किन्तु साधन ऐसा होना चाहिये, जिससे गोवंश की अवनति न होकर उसकी उन्नति होवे, लोगों को शुद्ध दूध मिल सके तथा जिस से परिणाम में आर्थिक दृष्टि से भी लाभ हो । हां, एक साधन है—दूध की उत्पत्ति के साथ-साथ नस्ल की उन्नति करने का कार्य किया जाये। इस योजना को सफल बनाने के लिये अच्छी नस्ल की दुधारू गायें तथा अधिक दूध देने वाली नस्ल के सांड रक्खे जाने चाहिये। नस्ल-सुधार को दृष्टि में रखते हुए ये गायें एवं सांड उसी इलाके से खरीदे जायं, जहां कार्य करना है। भारत सरकार के विशेषज्ञ डा० राइट ने भी इसी सिद्धान्त को माना है। इन गायों के बछड़े एवं बछड़ियों को पश्चिमीय प्रथा के अनुसार जन्मते ही माता से अलग न करें, प्रत्युत अच्छी नस्ल बनाने के लिये उन्हें थनों से ही पर्याप्त तथा आवश्यक दूध पिलाया जाय। बछड़े-बछड़ियों को थनों से ही आवश्यक दूध न पिलाना तथा सब का सब या अधिकांश निकाल लेना न्याय के विरुद्ध तो है ही, नस्ल सुधार पर भी कुठाराघात है । जो लोग बछड़े-बछड़ियों को हड्डी या अन्य प्रकार के खाद्य पदार्थ देने की तजवीज करते हैं, उनका मार्ग ठीक नहीं है । यह सर्वसिद्ध है कि दूध सर्वोत्तम खाद्य पदार्थ है, वह भी उनकी अपनी माताओं का तथा थनों से ही निकला हुआ हो तो बछड़े-बछड़ियों की उन्नति के लिये सब से अधिक लाभदायक, पौष्टिक पदार्थ है। बड़े होने पर भी इन बछड़े बछड़ियों की पूरी देख-रेख तथा

चारे-दाने की उचित व्यवस्था की जानी चाहिये । गायों का संयोग अच्छी दूध देने वाली अच्छी नस्ल के सांड से ही कराया जाय, दूसरी नस्ल के सांड से नहीं । इस प्रकार संयोग कराने पर आगामी बछड़ी के सवाया, उसकी सन्तान के ड्योढ़ा तथा चौथी पीढ़ी में अनुमानतः दुगना दूध हो जायगा । गाय के चारे दाने पर कुछ ही अधिक खर्च होगा, पर दूध की आय बहुत बढ़ जायगी, जिस के कारण आरम्भ में ६-७ वर्ष तक तो कुछ घाटा रहेगा पर इसके उपरान्त तीन वर्ष तक बराबर तथा ठीक देख रेख रखने और गायों में कोई बीमारी न आने से आरम्भ कार्य से दस वर्ष बाद यह नस्ल-सुधार एवं दुग्ध-उत्पादन का कार्य एक लाभदायक व्यापार हो जायगा । दूध से तो आय हो ही जायगी, अच्छे सांडों के भी मुंह मांगे दाम मिलेंगे । संसार के जिन देशों में आज डेयरी-फार्म या दुग्धशाला लाभदायक व्यापार बना हुआ है, उस का मुख्य कारण केवल दुग्धशाला नहीं किन्तु अधिक दूध देने वाली गायों की नस्ल तैयार करना है । हमारे अभागे देश में केवल शारीरिक शक्ति तथा स्वास्थ्य के लिये दूध ही नहीं लोगों के जीवन के बड़े आधार खेती के लिये भी बैलों की आवश्यकता है । पिछले डेढ़ सौ वर्षों में अर्थात् अंग्रेजी राज्य काल में गोवंश का सब प्रकार से ह्रास ही हुआ है । मि० सि० स्मिथ कर्नल नेटसन, 'गवर्नमेंट मिल्क रिपोर्ट' तथा अन्य सरकारी शिरोरत्नों ने पहले की अपेक्षा गोवंश का ह्रास होने तथा गायों

की दूध देने की शक्ति कम होने की बात कही है । अधिक दूध प्राप्त करने की दृष्टि से गायों के साथ अथवा केवल भैंसों का रखना लाभदायक नहीं, हानिकारक है । संसार भर में दूध, मक्खन आदि के लिए गायें ही रक्खी जाती हैं, भैंस नहीं । नस्ल-सुधार में भैंस इतनी उन्नति नहीं कर सकती जितनी गाय । गाय के बछड़े और बछड़ियों—दोनों से लाभ पहुंचता है, परन्तु भैंस के पड्डे हल आदि के लिए अधिक उपयोगी न होने के कारण प्रायः मारे ही जाते हैं । भैंस थोड़ी भी भूखी रह जाय तो दूध नहीं देती, कष्ट सहन नहीं कर सकती । पर गाय में यह बात नहीं । वह उचित चारा-दाना देने पर अधिक तथा कम देने पर भी कुछ कम दूध देती है । साधारण अकाल के समय गाय किसी घास की जड़ें, पत्ते तथा अन्य ऐसे ही चारे, पत्ते, झाड़ियां खाकर भी जीवित रहने का प्रयत्न करती है तथा जीवित भी रहती है । वह लगातार अकाल पड़ने पर कोई भी चारा न मिलने पर ही शरीर छोड़ती है । किन्तु भैंस चारा तो क्या, यदि पानी की भी कुछ कमी हो जाय तो सहन नहीं कर सकती । जनता के स्थायी लाभ, गोवंश की उन्नति, धार्मिक भाव, आर्थिक अवस्था आदि को दृष्टि में रखते हुए तात्कालिक लाभ को छोड़ कर दुग्धशाला के साथ साथ नस्ल सुधार का कार्य करना ही आवश्यक तथा सामयिक है ।

गोवध के कारण

बंद करने के कुछ उपाय

जिस देश के लोगों के जीवन का प्रधान सहारा खेती हो, जहां प्रायः बैलों से ही खेती होती हो, निरामिषभोजी होने के कारण जहां के करोड़ों मनुष्यों के स्वास्थ्य एवं शक्ति का आधार दूध ही हो, जहां तीन चौथाई जन-संख्या गो-रक्षा को परम पुण्य तथा गोवध को सबसे बड़ा पाप मानती हो उस देश में गोवध क्यों और कब से प्रारम्भ हुआ? हिन्दुओं के अभ्युदय काल में गोवध नहीं होता था, 'अहिंसा परमो धर्मः' मानने वाले बौद्धों एवं जैनों के समय में तो गोवध का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। मुसलमानों के राज्य-काल में गो-हत्या होती थी पर वर्ष भर में दो चार हजार ही। कितने ही मुसलमान बादशाहों के समय में एक भी गाय नहीं मारी गई। वर्तमान काल में भारतीय पशुओं की खालें बाहर भेजने से ही गोवध प्रारम्भ हुआ। सन् १६५४ में डचों (हालैंडवासियों) ने सर्वप्रथम खालें बाहर भेजना आरम्भ किया। सन् १८३० में एक लाख खालें कलकत्ते से अमेरिका तथा इंग्लैंड भेजी गयीं। सन् १८५० में खालों का व्यापार बढ़ा इस वर्ष अकेले बंगाल से ही ४४ लाख खालें बाहर भेजी गयीं। 'गवर्नमेन्ट हाईड्स रिपोर्ट' १६४३ के पृष्ठ ५० पर लिखा है—

आज भारत संसार को गायों की हल्की खालें देनेवाला सबसे बड़ा देश है। सभी प्रकार की खालें देनेवाला तो यही एक देश है। देश में वार्षिक दो करोड़ गाय की तथा सत्तावन लाख भैंस की खालें तैयार होती हैं, जिनमें से एक करोड़ से अधिक बाहर विदेशों को जाती हैं अंगरेजी राज्य में खर्च होनेवाले चमड़े का एक तिहाई भाग भारत देता है। गोवध का मुख्य तथा बड़ा कारण है— बाहर विदेशोंमें तथा देशमें बढ़ी हुई चमड़े, मांस, चर्वी, खून, हड्डी इत्यादि की मांग। जिस देश के लोग चमडे का जूता पहनना भी अच्छा नहीं समझते थे, खडाऊ तथा मूंज के बने हुए जूते पहनते थे तथा जहां पर अन्य कार्यों में भी चमड़े का व्यवहार करना बुरा समझा जाता था आज उसी देश के लोग चमड़े को सिर पर धारण करने तथा भोजन के समय हाथ में बांधने में लज्जा का अनुभव नहीं करते गायके ही नही बछड़े की खाल काफ लैदर के बूट पहनना तो एक बड़ाई का विषय हो गया है तथा पांच सात जोड़ी बढ़िया चमड़े के जूते रखना तो एक साधारण बात बन गयी है। कपड़े रखने के बक्स भी चमड़े के रखने लगे हैं घड़ी के फीते चश्मे के घर, घड़ी की चेन और छोटे-बड़े बटुवोंमें लाखों मन चमड़ा खर्च होता है तथा यह हजारों मूक पशुओं की हत्या का कारण बना हुआ है। बढ़िया मोटरों और गद्देदार कुर्सियों कोचों आदि के लिए भी चमड़े की काफी मांग है। यह चमड़ा वृक्षों के नही लगता, न पृथ्वी से उत्पन्न होता है और न आकाश से ही बरसता है यह मूक पशुओं —

विशेषकर गायों की हत्या करके ही तैयार किया जाता है। दि बोर्ड आफ इकानामिक इन्क्वायरी पंजाब के प्रकाशन नं० ६१ के पृष्ठ ६५ पर 'मुलायम चमड़ा प्राप्त करने के लिये गाभिन गायों की हत्या करके गर्भस्थ बछड़ों की खाले तैयार करने का वर्णन है। इन खालो को गोखल्ला कहते हैं। इससे अधिक नृशंसता तथा दानवता और क्या होगी ?

चर्बी कपड़े के कारखानों में मांडी लगाने के काम तो आती ही है इससे ग्रीज (Grease) साबुन, मोमबत्ती तथा ग्लिसरीन भी बनाई जाती हैं। चर्बी के हिस्सेमें अनेक जाति के पदार्थ बनते हैं उनसे जिलेटिन (Gelatine) और 'ग्लू' (Glue) तैयार किये जाते हैं। दवा की गोलियां आपस में चिपक न जायं और स्वादरहित हो इसलिये जिलेटिन का व्यवहार किया जाता है और ग्लू जोड़ने तथा कागज लिफाफे आदि चिपकाने के काम में आता है तथा उससे छापेखाने में रोलर भरे जाते हैं। हड्डियां खाद में काम आती हैं। हड्डियों को शोध करके केलशियम फास्फेट निकाला जाता है, जो चीनी साफ करने के काम आता है। हड्डी का कोयला भी बनता है। पशुओं के पांवों को पकाकर उनमें से तेल निकाला जाता है जो घड़ियों और दूसरे यन्त्रों में लगाया जाता है। गाय की आंतें पनीर बनाने के काम में आती हैं और उनसे पेपसिन नामक दवा तैयार की जाती है।

'गो-रक्षा-कल्पतरु, पुस्तक के (जिसकी भूमिका महात्मा गांधीजी ने लिखी है) पृष्ठ १५ में बताया है कि लोहू को पकाकर उसकी बुकनी तैयार की जाती है जो आसाम में चाय काफी के खेतों में खाद के रूप में काम आती है तथा जो बचती है वह विदेशों को भेज दी जाती है। सन् १६२२ में २२४०० मन बुकनी सिलोन भेजी गयी थी। यह यूरोप में भी जाती है वहां इससे अल्व्यूमन, खाद के पदार्थ एवं पोटाशियम साइनाइड (जो फिल्म में काम आता है) तैयार किए जाते हैं।

इसी पुस्तक के पृष्ठ ३६ पर लिखा है — 'प्यूरी नामक पीला रंग बनाने के लिये गडरिये लोग गाय को केवल आम के पत्ते खिलाकर रखते हैं, दूसरी और कोई वस्तु खाने या पीने तक को नही देते। और उस गाय का मूत्र बाजार में खूब दाम लेकर बेचते हैं। बेचारी गाय भूख से तड़प कर मर जाती हैं। इस बात को सुनकर अवश्य ही कल्पना हो सकती है कि हिंदुस्थान के मनुष्य मनुष्य नहीं, बल्कि मनुष्य देहधारी राक्षस ही हैं।'

कुछ ही वर्ष पूर्व जिन चीजों से गोवध का साधारण सम्बन्ध भी होता था, उनका व्यवहार तथा व्यापार करने को चित्त नहीं चाहता था; समाज का भी डर था। पर आज तो पश्चिमीय सभ्यता तथा कल-कारखानों के प्रभाव और प्रचार के कारण नित्य व्यवहार में आने वाली प्रायः चीजें गोवध से ही प्राप्त होती हैं। मुसलमान और ईसाई तथा वे लोग ही नहीं,

जिनके यहां धार्मिक दृष्टि से गोवध वर्जित नहीं है। गाय के शरीर में तैंतीस करोड़ देवताओं का निवास तथा गाय को वैतरणी नदी से पार करने का साधन मानने वाले हिन्दू भी आज लोभ, शौकीनी, सङ्कोच और मूर्खता से चमड़े, चर्बी आदि की बनी चीजों का व्यापार तथा व्यवहार बड़ी शान से करते हैं। चमड़े के बड़े-बड़े कारखाने, मांसमेद-मज्जा तथा जीवित रक्त आदि का अबाध व्यवहार करने वाले केमिकल-वर्क्स (दवा बनाने के कारखाने), हड्डी, चमड़ा, सप्लाई करने की ठेकेदारी आदि सारे धन के लोभ से आज वे लोग कर रहे हैं, जिनके पूर्वज इन वस्तुओं के स्पर्श से नहाते थे !! और जिनके सन्देह से सन् १८५७ में बहुत बड़ी क्रान्ति हो गयी थी। चमड़े-चर्बी आदि की बढ़ती हुई इस मांग के कारण जीवित गाय से मारी हुई गाय का मूल्य अधिक मिलने लगा है। और इस प्रकार अधिक लाभदायक होने के कारण गाय की हत्या भी बढ़ रही है। अन्य देशों में भी चमड़े आदि के लिए गोवध होता है, पर संसार में किसी भी सभ्य देश में हमारे देश की तरह दूध देने वाले एवं काम के योग्य लाभदायक पशु नहीं मारे जाते। इण्डियन गवर्नमेंट हाइड्स रिपोर्ट १९४३ के पृष्ठ ७ पर अपनी मौत मरी हुई तथा मारी गयी गायों का प्रान्तवार हिसाब दिया है। इसके अनुसार सालाना ५८ लाख ७० हजार गायें कसाईखानों में मारी जाती हैं तथा १४७ लाख ६० हजार अपनी मौत मरती हैं। सबसे अधिक गोवध बंगाल में होता है। मद्रास तथा ट्रावनकोर रियासत में भी

अधिक गोवध होता है। उत्तर भारत की अधिकांश रियासतों में गो-वध करना अपराध है। सरकार ने उन्हीं गायों की संख्या दी है, जिनकी खालों के अङ्क महसूल आदि के द्वारा मिले हैं, पर जिन गायों का वध घरों में होता है तथा जिनका चमड़ा वहीं काम में आ जाता है, वे इस संख्या में शामिल नहीं हैं। अनुमान है कि भारत में एक करोड़ के करीब गायों का वध होता है।

गो-वध कैसे बंद हो ?

सरकार का कर्त्तव्य था कि देश की भौगोलिक तथा आर्थिक अवस्था को, तथा यहां के लोगों के शारीरिक स्वास्थ्य की आवश्यकता को दृष्टि में रखते हुए यहां गोवध न होने देते, जिस प्रकार अकबर, हुमायुं, बाबर इत्यादि मुसलमान बादशाहों ने हिंदुओं के धार्मिक विचारों को देखकर गो-वध न होने दिया था अंग्रेजी सरकार भी वैसा ही करती, पर दुःख है कि सरकार के प्रभाव से पनपने वाली पश्चिमीय सभ्यता तथा कल-कारखानों ने गोवध रोकने के लिये नहीं, गोवध को बढ़ाने के लिये ही प्रोत्साहन दिया है। अब जब गो-वध के कारण देश में घी दूध की अत्यन्त कमी हो गयी है, खेती के लिये पर्याप्त बैल भी नहीं रहे हैं, तब भारत सरकार की आज्ञा से पंजाब तथा सीमान्त-प्रदेश की सरकारों को छोड़ कर देश की शेष ६ प्रान्तीय सरकारों ने 'भारत-रक्षा-कानून' के अनुसार पशुवध पर कानूनी प्रतिबन्ध लगाये हैं, पर यह सब स्थायी नहीं अस्थायी ही है।

न सरकारों ने केवल कानून ही बनाये हैं, अब तक अच्छी तरह कार्य नहीं किया है और न गोवध में कोई विशेष कमी हो रही है। सरकार ने तो लापरवाही की ही है, जनता ने भी इस कानून से लाभ उठाने का कोई उपाय नहीं किया।

यदि वास्तव में हम गो-वध को बंद करना चाहते हैं तो केवल सरकार के भरोसे पर न रहें। सरकार गोवध बंद करने के लिये जो कानून-कायदे बनावे, उनसे लाभ उठावें, जहां कानून न बना हो, वहां बनवाने का प्रयत्न करें एवं देशभर में वैध तरीकों तथा कानून द्वारा गोवध बंद कराने के लिये निम्नलिखित बातें सम्मुख रखकर संगठित रूप से कार्य करें—

१. सरकार ने 'भारत-रक्षा-कानून' द्वारा गोवध पर जो पाबंदी लगायी है, उसे स्थायी कानून के रूप में बनवाने का प्रयत्न किया जाय। जब तक स्थायी कानून न बने, बने हुए कानून का प्रचार किया जाय तथा जहां-जहां गैरकानूनी तरीकों से गोवध होता हो, वहां सरकार तथा अधिकारियों का ध्यान उस ओर आकर्षित किया जाय।

२. जिन प्रान्तीय सरकारों ने अब तक गोवध पर प्रतिबन्ध नहीं लगाया है, वहां कोशिश करके लगवाया जाय।

३. लोकमत तैयार करके प्रबल आन्दोलन किया जाय और चेष्टा की जाय कि चमड़े के लिये गाय न मारी जाय, मांस के लिये गाय न मारी जाय, सूखे मांस का व्यापार न हो

और गायों को फूंका देना अपराध माना जाय। यद्यपि इनमें पहली तीन बातें कठिन हैं, फिर भी चेष्टा करने पर सब कुछ सम्भव है। गोहत्या के कारणों में से गोरी फौजों के लिए मांस की आवश्यकता तथा सूखे मांस, खून, चमड़े और हड्डी का व्यापार प्रधान कारण हैं। ये व्यापार बन्द हों या कम हों, इस के लिये धार्मिक और कानूनी दोनों ही प्रकार के प्रतिबन्ध लगाये जाने की आवश्यकता है।

४. चमड़ा, चर्बी, लोहू, हड्डी इत्यादि जिन-जिन चीजों के लिए गौएं मारी जाती हैं तथा जिन कार्यों, कारखानों, मोटरों आदि में ये चीजें काम आती हैं, उनकी पूरी-पूरी जांच करवाकर जनता को बतलाया जाय। जो कारखाने वाले गो-हत्या से बनी हुई चीजों का व्यहार करते हैं, उनसे उन चीजों को व्यवहार में न लाने की प्रार्थना की जाय।

५. कारखाने वाले इन चीजों के स्थान पर किसी अन्य वस्तु का पता लगाकर उसीका व्यवहार करें।

६. अपनी मौत मरी हुई गायों के चमड़े, हड्डी आदि का व्यापार तथा व्यवहार बढ़ा जाय।

७. जिन कारखानों के कपड़ों में गाय की चर्बी या सरेस काम आता है तथा जिन चीनी के कारखानों में गन्ने के रसको साफ करने में गाय की हड्डी से निकली हुई केल्शियम फास्फेट काम में ली जाती है, उन कारखानों के बने हुए कपड़ों तथा चीनी को व्यवहार में नहीं लाना चाहिए। इसी प्रकार गोवध

से सम्बन्ध रखने वाले अन्य कारखानों की चीज़ों का भी व्यवहार नहीं किया जाना चाहिए।

८. लोग बूचड़खानों में मारी हुई गायों के चमड़े इत्यादि से बनी हुई चीज़ें—जूते, बक्स, हैंडबैग, बटुवे, कमरपट्टे, घड़ी के फीते, चश्मे के घर तथा इसी प्रकार की अन्य चीज़ों का व्यवहार न करने की शपथ ले लें।

९. वनस्पति या नकली घी, मक्खन निकाले हुए दूध के चूर्ण से बना हुआ नकली दूध तथा अन्य ऐसी चीज़ों का, जो गोवध को बढ़ाती हैं, व्यापार एवं व्यवहार न किया जाय।

१०. मारी हुई गाय से जीवित गाय का मूल्य बढ़ाने के लिये अधिक दूध देने वाली तथा अच्छे बैल पैदा करने वाली गायों की नस्ल को उन्नत किया जाय।

११. धार्मिक, आर्थिक, शारीरिक तथा देश की भौगोलिक अवस्था एवं सामाजिक व्यवस्था को सम्मुख रखकर देश के लोगों में पुस्तकों, पत्रों, भजन मण्डलियों आदि के द्वारा प्रचार किया जाय।

१२. देश के समाचार-पत्र तथा प्रकाशक चमड़े के सामान, दवाइयों या अन्य चीज़ों, जिन के लिए गायें मारी जाती हैं तथा वनस्पति घी, मक्खन निकाले हुए दूध के पाउडर एवं ऐसी अन्य वस्तुओं के विरुद्ध, जिनके प्रभाव से गो-वंश को हानि पहुँचती है, जोर देकर प्रचार करें, एवं ऐसे इनके विज्ञापन न लें और समर्थन न करें।

१३. नस्लसुधार, संक्रामक रोगों के आक्रमण से रक्षा, भर पेट चारा—दाना और व्यक्तिगत रूप से घर-घर गौ का पालन—इन चार बातों का विशेष रूप से प्रचार करें।



गोवधपर कानूनी प्रतिबन्ध

भारत में इधर बढ़े हुए गोवध के कारण जब देश में दूध तथा बैलोंकी अधिक कमी हुई, तब गत ६ नवम्बर १६४३ को भारत सरकार की केन्द्रीय परामर्श–दातृ–समितिने प्रान्तीय सरकारों को दुधारू तथा गाभिन गायों तथा १० साल तक के काम के योग्य बैलों के वध पर रुकावट करने के लिए लिखा प्रायः प्रान्तीय सरकारों ने उस आज्ञा की उपेक्षा करके उसे कानूनी रूप नहीं दिया, साधारण आज्ञा-पत्र मात्र जारी कर दिये। २६ जुलाई सन् १६४४ को भारत–सरकार ने पुनः निम्नलिखित आज्ञा-पत्र निकाला–'भारत–सरकार ने देश के पशुधन को–विशेषतया कामके योग्य पशु (बैल आदि), दुधारू और गाभिन गायों और बछड़े—बछड़ियों को बचाने या रखने के उद्देश्य से फौजी अधिकारियों ने जो तरीका स्वीकार किया है, उसे दृष्टि में रखते हुए हर सप्ताह बिना मांस के दिन नियत करने तथा साधारण जनता के लिये गो–वध पर प्रतिबन्ध लगाने के लिये

प्रान्तीय सरकारों से प्रचार-पत्र द्वारा सिफारिश की फौजी अधिकारियों ने—

(१) तीन वर्ष के बछड़े-बछड़ियां।

(२) तीन से दस वर्ष तक के काम में आने वाले या काम के योग्य बैल तथा सांड।

(३) तीन से दस वर्ष तक की सब गायें, जो दूध देने के योग्य हों तथा जो नस्ल के काम की भी हों और सब तरह की गाभिन हों या दूध देती हों—इन सबके वध पर [illegible] के लिये बेचने पर प्रतिबन्ध लगाना स्वीकार कर लिया है।

कोई भी सिविल वेटेरिनरी अधिकारी किसी भी विशेष पशु के वध पर, जो फौजी बूचड़खाने में हो, वहां जा कर आपत्ति कर सकता है। फौजी अधिकारी एक ऐसी कमेटी द्वारा, जिसमें फौजी तथा सिविल प्रतिनिधि शामिल हों, पशुओं का कम से कम मूल्य नियत करेंगे।

'भारत-सरकार ने सब प्रान्तीय सरकारों से इस मामले में जल्दी कार्यवाही करने के लिये ऐसे आज्ञा-पत्र जारी करने या जो आज्ञा-पत्र पहले से जारी हों, उन्हें इस तरह सुधार देने को लिखा है।'

'यह निश्चित है कि जन-साधारण के खाने के लिये मद्रास, बम्बई, यू० पी०, सी० पी० बिहार और आसाम के पशु-वध पर कुछ प्रतिबन्ध पहले से ही लगे हुए हैं। पंजाब और आसाम में सप्ताह में कुछ बिना मांस के दिन नियत हैं।

यह है भारत-सरकार का आज्ञा-पत्र, जो ता० [illegible] १४

४४ ता॰ २६-४-४४ को जारी हुआ तथा केन्द्रीय असेम्बली की कार्यवाही रिपोर्ट भाग ४ नं॰ ५ के पृ॰ ३२४ पर ७ नवम्बर सन् १६४४ को प्रकाशित हुआ था।

भारत-सरकार के नवम्बर सन् १६४३ के तथा उपर्युक्त आज्ञा-पत्र के अनुसार संयुक्त प्रदेश की सरकार ने ६।१२।१६४३ को, बिहार-सरकार ने ६।८।४४ को, मद्रास ने ६।६।४४ को, मध्य-प्रदेश ने २६।१०।४४ को, उड़ीसा ने १७।५।४४ को, बम्बई ने २१।१०।४४ को, सिंध ने ४।१२।४४ को, आसाम ने ३१।५।४४ को तथा बंगालने ३।३।४५ को 'भारत-रक्षा-कानून' की धारा ८१ उपधारा (२) के अनुसार भारत-सरकार द्वारा आज्ञा दिये हुए पशुओं का वध अपराध मानते हुए तीन साल तक कैद, जुर्माना तथा पशु-जब्त तक दण्ड देने के नोटफिकेशन जारी किये हैं। ये नोटफिकेशन उन प्रान्तों के सरकारी गजटों में उन्हीं दिनों प्रकाशित हुए तथा अब इन सरकारों के मन्त्रियों और पशु-विभाग के डाइरेक्टरों से मिल सकते हैं। पंजाब तथा सीमान्त प्रदेश की प्रान्तीय सरकारों ने बार-बार ध्यान दिलाने पर भी भारत सरकार की इस आज्ञा को कार्यरूप में परिणत नहीं किया है। इन दोनों सरकारों ने अपने प्रान्त के पशु-धन को बचाने के प्रति उपेक्षा करके लोगों को बड़ी हानि पहुंचायी है।

दीपक-तले अंधेरा

भारत-सरकारकी राजधानी दिल्ली है। फौजों का भी यहां बड़ा अड्डा है। जन साधारण के लिये भी बहुत पशुवध होता है।

दुःख है कि दिल्ली प्रान्त में भारत सरकार की इस आज्ञा का कोई प्रभाव नहीं। दिल्ली के चीफ-कमिश्नर के आज्ञा-पत्र नं० ३ (८१) ४१ एल० एम० जी० ता० २५-१-४१ द्वारा केवल दिल्ली शहर की म्युनिसिपल कमेटी की सीमा में पशुवध पर कमेटी के उपनियम नं० ९ में सुधार किया गया है। भारत सरकार की इस आज्ञा के जारी होने के बाद १ सितम्बर १९४५ को ४२४ गायें फौजियों को मांस देने के लिये दिल्ली जाती हुई गुड़गांवा की सीमा पर 'पंजाब प्रान्त के बाहर बिना आज्ञा पशु न जा सकें' इस कानून के अनुसार गुड़गांवा जिले की पुलिस के द्वारा पकड़ी गयीं। सरकारी पशु-डाक्टर की गवाही के अनुसार इनमें से २ गायें बछड़ों सहित दूध देने वाली, १९ बिना बछड़ों के दूध देने वाली १३२ गाभिन, १२६ बछड़िया नस्ल के काम की तथा शेष १४५ गायें दूध से सूखी हुई थीं, पर नस्ल के काम की थीं। यदि वास्तव में भारत-सरकार अपनी आज्ञा को लागू करना चाहती या उसकी आज्ञा लागू होती तो ये गायें मारने के लिये नहीं ले जायी जाती। नीचे की अदालत ने इस मुकदमे में १-९-४५ को गाय ले जाने वाले १९ आदमियों को दो-दो मास की कैद की सजा दी तथा गायें जब्त कर लीं। परन्तु अपील में डिस्ट्रिक्ट-जज, हिसार ने फौजियों को मांस देने के लिये गायों के ले जाने का समर्थन किया और अपराधियों को छोड़ दिया। जज के निर्णय की ओर सरकार का ध्यान दिलाया गया, पर कोई सुनवाई नहीं हुई। विद्वान जज के फैसले के अन्तिम भाग का [illegible]

जानकारी के लिये नीचे उद्धृत किया जाता है—

'फौजके लिये रंगरूट देनेमें पंजाबका स्थान सर्वोपरि है। उसे इन रंगरूटों के लिये खाद्य-सामग्री भी देनी चाहिये। दिल्ली भारत का सब से छोटा प्रान्त है। गुड़गावाँ जिला दिल्ली छावनी के सब से निकट होने तथा दिल्ली के लिये खाद्य-सामग्री देने के कारण सबसे अधिक कमाता है पब्लिक प्रोसेक्यूटर (सरकार वकील) ने कहा है कि गोवध करना बुरा है। पर मेरे विचार से यह कहना बिल्कुल ठीक होगा कि हिज मैजेस्टीकी ब्रिटिश फौजों का प्रधान भोजन प्रायः गो मांस ही है। अतः पब्लिक प्रोसेक्यूटर का उपर्युक्त तर्क कम-से-कम आज कलके असाधारण समय में अमाननोय है। यह सोचना कि ये तमाम पशु फौज के अधिकार में आ जाते और तुरन्त वध कर दिये जाते अनुचित है। इस अभियोग से फौजी लोग बहुत से पशुओं से वञ्चित रह गये जो उनके खाने के लिये ही थे। सम्भवतया हिज मैजेस्टी के बहुत-से फौजी सिपाहियों को अपने भोजन के इस भागके बिना ही कई दिनों तक काम चलाना पड़ा होगा। यह कितनी दुःखद बात है। पी० डब्ल्यू १. के बयान से यह बिल्कुल स्पष्ट है कि इन बेचारे कुलियों ने उन्हें बता दिया था कि वे इन पशुओं को फौजी अधिकारियों को देने के लिये दिल्ली-छावनी ले जा रहे थे। बेचारे ये कुली (या ले जाने वाले) यह नहीं सोच सके कि मामूली वेतन लेकर गायों को सिपाहियों के खाद्य के लिये फौजी अधिकारियों के पास पहुंचाना एक अपराध है, और उसके बदले

उन्हें इतना कड़ा दण्ड मिलेगा। इस अभियोग से कुछ जवानों पर जो बुरा प्रभाव पड़ सकता था, उसे याद करते हुए दुःख होता है। यदि छावनी के या फौजी विभाग के अधिकारी दफ्तरदार के दवे हुये क्लर्क को यह मालूम होता कि नियमानुसार परमिट लेना आवश्यक ही है तो यह अशुभ घटना नहीं होती मानते हुए कि नियमानुसार यह अपराध है, मेरी राय में उपर्युक्त परिस्थितियों को देखते हुए उनके लिये दण्ड बहुत हल्का होना चाहिये। अपील करने वाले अभियुक्त पहले से ही दो महीनों से जेल में है। अतः मैं उन्हें जो अपराध दिया गया है, उस का समर्थन करता हूँ, किन्तु उनके दण्ड की अवधि कम करके उतनी ही कर दी जाती है, जितनी कि वे कैद में भोग चुके हैं।'

'अपीलकर्ता के वकील ने जिस दूसरे प्रश्न को हाथ में लिया, वह है—जब्ती की आज्ञा के ऊपर। उन्होंने इस बात पर जोर दिया है कि जब्ती के प्रश्न पर नियम ८१ का उप नियम ४ अर्थात् 'यदि आज्ञा में सम्पत्ति के जब्त कर लेने का विधान है तो जिसके कारण अपराध हुआ है, उस वस्तु को जब्त कर लिया जा सकता है' लागू होता है. ए. आई. आर. १९४८ बम्बई २५३ में यह निर्णय किया हुआ है कि जहां दी हुई आज्ञा में जब्ती की व्यवस्था नहीं है, वहां सामान्य विधान अर्थात् धारा ५१७ सी. आर. पी. सी. की शरण लेना अनुमोदित नहीं है। १९४७ के बम्बई का

रिपोर्टर' ५२६ में प्रकाशित बम्बई हाईकोर्ट के 'फुल बेंच जजमेंट (Full Bench Judgment) में भी वही बात दुहरायी गयी है। वहां यह स्वीकार किया गया है कि व्यवस्था विधान में बिना विशिष्ट आज्ञा के जब्ती नहीं की जा सकती। 'यदि आज्ञा में ऐसा विधान हो' ये शब्द अदालत के सी-आर. पी. सी. की धारा ५१७ के सामान्य विधानों के अन्दर जब्ती की आज्ञा देने के अधिकार को सीमित कर देते हैं। विद्वान् पब्लिक प्रोसेक्यूटर के इस तर्क को भी कि अपने दण्डदायक और समाप्तिकारक विधानों के साथ सी-आर. पी. सी की धारा ५१७ इस मामले में लगती है, यह काट देता है। मेरे विचार में धारा ५१७ इस मामले में बिल्कुल नहीं लगती। अतः यह बिल्कुल स्पष्ट है कि पशुओं की जब्ती की आज्ञा नितान्त अविधानपूर्ण है और बड़ी खींचतान करके भी किसी नियम या युक्ति द्वारा इस का समर्थन नहीं हो सकता। अतः अपील कर्ता को जब्त किये हुए 'पशुओं को बैजबाबू (या जो भी उनका मालिक हो) के पास ले जाने के लिए वापिस पाने का अधिकार है और मैं तदनुसार आज्ञा प्रदान करता हूँ।'

आज्ञा सुनायी गयी—
गुड़गावाँ

हस्ताक्षर—लायक अली,
सेशन्स जज, हिसार

ता. २८ अक्टूबर, १६४४

इस पर टीका-टिप्पणी व्यर्थ है। हिज मैजेस्टी की ब्रिटिश फौजों के भोजन के लिये गायें कटनी ही चाहिए, फिर चाहे वे गाभिन हों, दूध देने वाली हों, अच्छी नस्ल की हों और बिना परमिट के ही प्रान्त से बाहर जा रही हों! कानून की रक्षा के लिए अपराधियों को दो मास का दण्ड पर्याप्त है और गायों की जब्ती ही विधान से कानूनी नहीं ठहरती। ब्रिटिश फौजों के दुःख से दुखी लायक डिस्ट्रिक्ट जज श्री लायकअली महोदय का फैसला अवश्य ही तारीफ के लायक है!!

अब भी गुन्जाइश है

यह ठीक है कि 'भारत रक्षा-कानून' द्वारा सरकार ने राजनैतिक आन्दोलन को दबाने का जैसा प्रयत्न किया, वैसा ही या उससे भी कम प्रयत्न यदि होने वाले पशुओं की देख रेख के लिये करती तो लाखों उपयोगी पशु बच जाते। सरकार को तो क्या कहें, जब कि सरकार गो-वध बन्द करने का विशेष प्रयत्न करे, यह सम्भव नहीं है। पर सरकार ने किसी कारण पशुओं को खिलाने के लिए जो प्रतिबन्ध लगाए हैं, उनसे तो लाभ उठाया जा सकता था तथा इसके लिये अब भी गुन्जाइश है। बम्बई की 'जीव-दया मण्डली' तथा अन्य ऐसी ही संस्थाओं के प्रयत्नों से बम्बई में मारे जाने वाले पशुओं की संख्या आधी रह गयी है। इसी प्रकार अन्य प्रान्तों में भी उनका प्रचार

ध्यान देती, गैरकानूनी गो-वध की ओर अधिकारियों का ध्यान आकर्षित किया जाता, उन प्रान्तों में चलने वाले पत्र, गो-रक्षक तथा अन्य सभा-सोसाइटियां आन्दोलन करतीं तो हजारों गायों एवं उपयोगी पशुओं के प्राण बच जाते। अब भी समय है। जो हो चुका, उससे शिक्षा लेकर समय न खोवें, अपने से जो हो सके, करें तथा जो भी कानून कायदे हों, उनसे उचित लाभ उठाने के लिये निम्नलिखित उपायों पर ध्यान दें—

१. पंजाब तथा सीमान्त प्रदेश में भारत-सरकार की आज्ञा लागू कराने का प्रयत्न किया जाय। इसके लिये आन्दोलन हो।

२. जिन प्रान्तों में 'पशु-वध-कानून' लागू है, वहां वध होने वाले पशुओं की देख-रेख का प्रबन्ध किया जाय। जहां गैर-कानूनी वध होता हो, उसकी ओर पशु-अधिकारियों का ध्यान आकर्षित किया जाय। इस प्रकार संभाल करने से सरकारी अधिकारी कुछ सचेत होंगे तथा गो-वध में कुछ न-कुछ कमी अवश्य होगी।

३. यह 'पशु-वध प्रतिबन्ध' नियम स्थायी नहीं है। 'भारत-रक्षा-कानून' जिसके आधार पर यह नियम बना है, युद्ध के कारण लागू किया गया है। जब भी 'भारत-रक्षा-कानून, समाप्त होगा, यह प्रतिबन्ध भी लागू न रहेगा। अतः कोशिश करके गोवध रोकने के लिए कोई स्थायी

कानून बनवाने की पूरी-पूरी चेष्टा की जानी चाहिए । सर-कार ने पहले कभी भी गोवध पर प्रतिबन्ध लगाने के सिद्धान्त को नहीं माना था, पर अब चाहे कागजी कानून ही क्यों न हो, यह सिद्धान्त मान लिया गया । अतः इस सिद्धा-न्त को स्थायी रूप से कार्यान्वित करा देना अत्यन्त आवश्यक है ।

४. जिस जिस प्रांत में गो-रक्षा सम्बन्धी जो जो कानून कायदे बने हैं, उनका समाचार पत्रों तथा विज्ञापनों द्वारा जनता मे प्रचार किया जाय । गो-सेवा एवं गो-रक्षा से सम्बन्ध रखने वाली सभा सोसाइटियां इन कानूनों को कार्य रूप में परिणत करने के लिये प्रयत्न करें । उचित हो तो इस काम के लिए अलग संस्था स्थापित की जाय ।

गाय और भैंस

हमारे रोजमर्रे की बहुत-सी ऐसी क्रियाएं हैं जिनसे राष्ट्र का बड़ा नुकसान होता है । हम इन कुरीतियों तथा कु-क्रियाओं के अनिष्ट-कारक फल को जानने की तनिक परवा नहीं करते । यही बात भैंस पालन के संबंध में है । लोग नहीं जानते हैं कि इससे बहुत भारतवर्ष का कैसा अपकार हो रहा है । गांधी जी ने सब प्रथम इस भयंकर क्षति की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया । गांधीजी राष्ट्रीय नेता हैं, इस लिये वे इस आंदोलन को,

राजनीति की उथलपुथल के सिलसिले में, विकसित नहीं कर सके।

कुत्ता हड्डी चबाता है। उसकी रगड़ से उसका मुंह लहू-लुहान हो जाता है। मूर्ख कुत्ता समझता है कि हड्डी का ही स्वाद है। यही हालत भारतवासियों की है—भैंस पालन के संबंध में। जितना नुकसान गोवंश को तथा कृषि को भैंस ने किया है कदाचित् ही उतना कसाई और अति वृष्टि व अनावृष्टि ने किया हो।

भैंस का पालन किसी भी देश में नहीं होता और न उसका दूध ही कहीं के लोग व्यवहार करते हैं। दक्षिण चीन, फिलीपाइन द्वीपपुंज तथा अभागा भारतवर्ष ही ऐसे देश हैं जहां भैंस भी पाली जाती है॥ प्राचीन भारत में भैंस नहीं थी। वेदों में भैंस-पालन का उल्लेख नहीं है। वेदों ने गाय की बड़ी महिमा गाई है। इसको अघन्या कहा है। गायों की उत्पत्ति के विषय में वेदों में सुन्दर वर्णन है। सृष्टि के निर्माण में सर्वप्रथम गाय उत्पन्न हुई। इसलिये वेद इसको 'अग्रजा' कहते हैं। गाय के पश्चात् मनुष्य आये। गायों के 'म्हां' शब्द के सहारे मनुष्य बोल सके। इसलिये वेदों की टिप्पणी में सयनाचार्य ने लिखा है कि मनुष्य को गाय से बोली मिली। सब से पहले ऋग्वेद आये। उसमें 'ग.मेंमाता' शब्द व्यवहृत है जिसका अर्थ हुआ 'गाय हमारी माता' है। गाय को दुहने वाली को वेदों ने 'दुहिता' कहा है जो हम लोगों की प्यारी पुत्री के लिये पर्याय-वाचक शब्द है।

वेदों ही के समान कुर-आन, बाइबिल, बौध पिटक, जैन ग्रन्थ सिक्खों के गुरुग्रन्थ जिन्दअवेस्ता आदि में भैंस के लिये कोई स्थान नहीं है। सिर्फ आदि मिश्र निवासियों की धार्मिक क्रिया का जहां वर्णन आया है वहां लिखा है कि वैतरनी नदी को गाय की पूंछ पकड़ कर पार जाने वाले हिन्दु विश्वास के समान मिश्र निवासियों का भी विश्वास था कि मरने के बाद आत्मा को स्वर्ग जाने के लिये नील को गाय अथवा भैंस की पूंछ पकड़ कर पार उतरना पड़ता है। बस धार्मिक ग्रन्थों में भैंस का सिर्फ यही वर्णन आया है।

भैंस की उत्पत्ति के विषय में अजीब दन्तकथा है। कहते हैं कि सुदूर प्राचीनकाल में 'नन्दिनी' नामक गाय के लिये वशिष्ठजी और विश्वामित्र झगड़ पड़े। विश्वामित्र हार गये। रंज में आकर घोर तपस्या की। दूसरी सृष्टि की रचना की, प्रत्युत 'गाय' से सामना करने के लिये भैंस का निर्माण किया। तभी से भैंस भारत में आई और शनैः शनैः उसका विस्तार हुआ। अब तो वह भारत के कोने-कोने में छा गई है। गांव-गांव में गायों को हटा रही है। बहुत से गांव तो गाय से एक दम खाली हो गये और वहां भैंस भर गई। भैंस की उत्पत्ति के बारे में दूसरी दन्तकथा भी है। वालजी गोविन्दजी देसाई ने 'गोरक्षा कल्पतरु' नामक किताब में इसकी चर्चा की है। इसमें उन्होंने श्री काका साहेब कालेलकर के उस पत्र का हवाला दिया है जिसमें उन्होंने भैंस की उत्पत्ति के विषय में दक्षिण में प्रचलित दन्तकथा का उल्लेख किया है। वह यों है—

'दक्षिण के गांवों की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी पहले जन्म में ब्राह्मण की लड़की थी। ब्राह्मण ने चारों वेदों के निष्णात और सभी प्रकार ब्राह्मण-सा मालूम पड़ने वाले एक आदमी से उसका ब्याह करा दिया। उस लड़की को पीछे चल कर पता चला कि उसका पति अन्त्यज है। किसी ब्राह्मण के घर झाड़ू देते-देते उसने वेद-मंत्र सुनकर याद कर लिया। सुन्दर और बुद्धिमान होने के कारण उसने ब्राह्मणोचित सब कर्म और संस्कार आदि सीख लिये और अच्छा ब्राह्मण बन गया। यह जान कर लड़की को दुःख हुआ और सीधे पिता के पास आई। पूछा कि यदि कोई मिट्टी का बर्तन अपवित्र हो जाय तो उसे कैसे शुद्ध करना चाहिये। पिता ने जवाब दिया कि ऐसा अशुद्ध बर्तन आग में जला कर ही शुद्ध किया जा सकता है। लड़की घर लौट आई और चिता सजा कर उसमें जल मरी। इस सत्य के प्रताप से वह दूसरे जन्म में लक्ष्मी हुई और घर-घर पूजी जाती है। वह ब्राह्मण मरने पर भैंसा हुआ, इसलिये लक्ष्मी के आगे भैंसा का बलिदान होता है।

काका साहेब ने अपने ग्रन्थ 'जीवन और संस्कृति' में लिखा है—गाय पर महान संकट आया है। उसका स्थान बड़े जबरदस्त रूप से भैंस ले रही है। हमारा धर्म बतलाता है कि राष्ट्र के हित के ख्याल से भैंस की सेवा व वर्धन त्याग देना चाहिये—केवल गो-सेवा की जवाब देही लेनी चाहिये, क्योंकि उसी में धर्मपालन है। भारतवर्ष केवल कृषि प्रधान ही देश नहीं

है बल्कि शाकाहारी भी हैं। घनी आबादी के कारण अन्य देशों की तरह यहां मशीन से खेती का कार्य सम्भव नहीं है, वहां के आधिक्य के कारण घोड़े आदि भी इस कार्य के लिये उपयुक्त नहीं हैं। उष्णता के कारण भैंस से भी सम्यक कार्य नहीं चल सकता। इस लिये अत्यन्त प्राचीनकाल से गोवंश का ही व्यवहार यहां के लिये उपादेय सिद्ध हुआ है अथच गाय भारतकी मजबूत रीढ़ तथा किसानी की कुन्जी है।

भारत सरकार बराबर इस बात की शिकायत करती है कि भारतवर्ष में पशुओं की अवस्था दिनानुदिन गिरती जाती है। फलतः दूध कमता जाता है और अच्छे बैल नहीं मिलते। सरकार इसका कारण यह कहती है कि दुनिया में जितने पशु हैं उनकी एक तिहाई भारत ही में है; इसलिये इतने अधिक पशुओं के लिये यहां उतना पूरा चारा नहीं है जिससे उनका पूर्ण पालन हो सके। यह बात ठीक है कि भारतवर्ष में जितने पशु हैं उनका अनुपात संसार के पशुओं की संख्या की एक तिहाई है। मनुष्य की आबादी के आंकड़े पर विचार करने से यहां बहुत कम पशु हैं। इतने छोटे देश के लिये इतने अधिक मनुष्य और पशु रखना ठीक ही उचित नहीं है। सरकार पांच वर्ष पर पशु-गणना कराती है। पांचवीं गणना सन् १६४० मे हुई थी। उसके अनुसार समस्त भारत में गाय और भैंस की संख्या निम्न प्रकार है। यह भी ख्याल रहे कि इसमें संयुक्त-प्रान्त और उड़ीसा की संख्या सम्मिलित नहीं है, क्योंकि वहां गणना नहीं हो सकी।

गो-वंश	भैंस-वंश
सांड़, बैल—५१६१४२७१	भैंसा—४१७०६८३
गाय—४४७६८७३१	भैंस—१७४०६६४८
बछड़े—३८०५५२७१	पड़वा-पड़िया—१३०७६१८६
१२४७५७२७३	३४७६०५१५

ऊपर के आँकड़े को ध्यान पूर्वक देखिये। वैल-सांड़ तथा गाय की सख्या देखने से मालूम हुआ कि लगभग सत्तर लाख गाय को लोग मारकर खा गये। भैंसा और भैंस की संख्या के मिलान करने से पता लगता है कि लगभग सवा करोड़ भैंसें अपालन व सख्त मिहनत से घुला घुला कर तथा खाने के लिए मारे गये। भैंस की हत्या का कारण वही है जो यूरोप में वैल का है। क्योंकि वहां के खेती और लदनी के काम में नहीं आते और यहां भैंसा उन कामों के लिए निकम्मे हैं। भैंस की संख्या में पूर्व गणना से वृद्धि हुई, क्योंकि उस समय १२१३७७७४ भैंस थी जो अब पौने दो करोड़ हो गईं। पता चला कि गाय घट रही है भैंस बढ़ रही है। इस अनुपात से यदि घटती-बढ़ती चली तो १५-२० वर्ष में गोवंश का नाश हो जायगा।

भारतवर्ष गरीब देश है। उसमें इतने पशु नहीं रक्खे जायं। अनुपादेय पशु को हटाकर चारा बचाया जाय। दूध के लिये और खेती के लिए अलग अलग पशु के पालन में घाटा है उस घाटे से बचने के लिये हम लोगों को एक न एक दिन गाय और भैंसों में से किसी एक ही पशु को रखना होगा। इस लिए विचारना है कि हम को किस एक ही पशु को रखना चाहिये जिस से हमारा दूध और किसानी के कार्य मजे में चले।

गाय के वैल के बिना किसानी नही चल सकती। अनुभव

सिद्ध है कि उसके स्थान पर भैंसा किसानी और लड़नी आदि के कार्य नहीं कर सकते। इसलिए गाय को ही पालना तथा बढ़ाना अच्छा है। क्योंकि वह भैंस से कम खाती है बहुत दिन जीती भी है।

भैंस गाय से दो गुणा से भी अधिक खाती है। उसका पड़वा जल्द मर जाता है, इस लिये यदि हम साढ़े तीन करोड़ भैंस वंश को हटा सकें तो उस का अर्थ हुआ कि हम सात करोड़ गोधन के लायक चारा बचा सकेंगे और फिर हमारी गायों की दयनीय अवस्था बदलते देर न लगेगी।

गाय और भैंस के गुण-दोषों का परस्पर नीचे विश्लेषण करते हैं।

गाय आर्य संस्कृति के पोषक, पुण्य दर्शन तथा दैवी सम्पत्ति है।

भैंस म्लेच्छ संस्कृति के पोषक, अशुभ दर्शन तथा आसुरी सम्पत्ति है।

गाय के शरीर पर हाथ फेरने से उम्र बढ़ती है, तेजस्विता आती है और खुंटे पर बराबर खाती रहे तो सौख्य और शान्ति बढ़ती है।

भैंस के शरीर पर हाथ फेरने से मृत्यु निकट आती है। बराबर खूंटे पर बंधे रहने से दरिद्रता और अशान्ति बढ़ती है। यह बात भी ठीक है। पहले पहल भैंस के पास जाइये तो उसके शरीर से एक प्रकार की तीव्र दुर्गन्ध निकलती मालूम पड़ेगी।

गोवंश बल रूप मृत्युञ्जल (मृत्यु को जीतने वाले महोदय) की सवारी है।

भैंसवंश यमराज (जल्द मार डालने वाले देवता) की सवारी है।

गाय की पूंछ पकड़िये अथाह जल से पार करा देगी, इस लिए वैतरणी पार कराने वाली है।

भैंस की पूंछ पकड़िये जल में नीचे बैठ जायगी, इस लिए यमपुर ले जाने वाली है।

गाय का बछड़ा खेती, लदनी आदि के काम पानी, धूप, बरसात, जाड़ा सभी में बहुत काल तक करता है। वह बलद अथवा बल की सीमा कहलाता है।

भैंस का पड़वा ऊपर लिखे काम में एकदम निकम्मा है। यदि धूप रही तो लदनी की चीज लेकर पानी में बैठ जाता है भैंस के पानी के जीव होने के बहुत प्रमाण हैं। रावण के लिए यमराज का भैंसा पर पानी लाना, हेमचन्द्र का पुरुष चरित्र में भैंसे पर व्यापार मंडली के लिए पानी ढुलाये जाने का वर्णन आदि हमारे ग्रन्थ में हैं। पूरा काम लीजिये तो बरस-छः मास भर जीता है।

गाय कष्ट सहिष्णु जल्दी नहीं बीमार पड़ती।

भैंस तनुक और पानी का जानवर है, इसलिए जल्दी-जल्दी बीमार पड़ती है।

सरकार ने गोवर्धन के ख्याल से जगह जगह डेयरी-फार्म खोल रखे हैं। वहां सिर्फ गो पाली जाती है।

सरकार भैंस इसलिए वहां नहीं पालती कि उसके साल भर के दूध और पालन खर्च का दाम जोड़ने पर बड़ा घाटा है।

भारत सरकार ने एक क्लब (सभ) खोल रक्खा है। उसके रजिस्टर में उसी गाय का नाम दर्ज किया जाता है जो एक ब्यात में दस हजार पौंड दूध देती है।

लेकिन उसमें भैंस की भर्ती के लिये सिर्फ सात ही हजार पौंड रक्खा है। इस से सिद्ध हुआ कि सब मिलाकर गाय भैंस से अधिक दूध देती है, क्योंकि थोड़ा भी दूध देती है, परन्तु बहुत काल तक देती रहती है।

गाय नौ-दस मास में ब्याती है। उसके सूखे काल का पालन खर्च कम है।

भैंस लगभग वर्ष दिन में ब्याती है। इस पर सूखे काल का पालन खर्च बहुत है।

गाय दस ग्यारह मास तक दूध देती है।

भैंस छः सात मास तक दूध देती है। एक दो मास के बाद अधिकतर भैंस एक संभू हो जाती है, क्योंकि उसके बच्चे बहुत मरते हैं।

पूणा के कृषि-कालेज के साथ गोशाला है। उसमें भैंस और गाय की दूध देने की क्षमता का अनुसंधान किया गया था।

३० गाय ने सब मिलाकर ७१०६ दिन दूध दिया। ५५३२१ पौंड दूध हुआ। प्रति गाय ने रोजाना ७ पौंड १२॥ औंस दूध दिया।

४६ भैंस ने १६५६४ दिन में ११८४४ पौंड दूध दिया। प्रति भैंस ने प्रतिदिन ७ पौंड २॥ औंस दूध दिया। इससे भी गाय के दूध देने की क्षमता सिद्ध है।

गाय कम खाती है। भूखे रहने पर भी कुछ न कुछ अवश्य दूध देती है। वह चार-पांच बार दूही जा सकती है। ज्यादा बार दूहने से उसका दूध बढ़ता है। ब्याई गाय को भोजन पचाने की अजीब क्षमता है।

भैंस गाय से दो गुना अधिक खाती है। थोड़ी सी भूखी रहने पर दूध नहीं देती है। जब दो बार भी कठिनता से दूही जा सकती फिर अधिक बार की तो बात ही छोड़िये ब्याई भैंस को अधिक चारा पचाने की शक्ति नहीं है। पेट फूलने की बीमारी का भय रहता है।

गाय का गोबर सुन्दर खाद है। लीपने पर कीड़े को मारता और हवा को शुद्ध करता है—

भैंस का गोबर तम्बाकू के लिए उपयुक्त खाद है। तम्बाकू उपजाने वाले गृहस्थ से पूछ लीजिये। लीपे जाने पर कोई सुन्दर फल नहीं निकलता।

गाय के दूध से साधारण खनिज पदार्थ शुद्ध किये जाते हैं।

संखिया आदि के समान तीव्र जहर को शुद्ध करने के लिये भैंस ही का दूध ठीक है।

गोमूत्र अमृत तुल्य अमोघ दवा है।

भैंस मूत्र विष तुल्य अमोघ जहर है।

गाय से गोरोचन, पंचगव्य, यज्ञ० शुद्धि, प्रायश्चित परिक्षालन, नाना प्रकार को सुमधुर व सुखाद्य पदार्थ मिलते हैं।

भैंस से उपर्युक्त पदार्थों के लिये विपरीत फल मिलता है।

जातिवन्त सांड से संयोग कराने पर गाय के वंश का ही सुधार नहीं होता प्रत्युत उसके दूध देने की शक्ति भी बढ़ती है।

भैंस के साथ ऐसा प्रयोग करके कई बार देखा गया। दूध मे कोई फर्क नहीं पड़ा।

गाय मे असमय में प्रसव कर जाने (बच्चा फेंक देने) की बीमारी बहुत कम होती है।

भैंस मे यह बीमारी अधिक है। यह भी देखा गया है कि भैंस पानी की इतनी प्यासी होती कि उसके भीतर प्रसव कर डालती है और इस प्रकार उसका बच्चा यों ही मर जाता है।

गाय का सात मास का बच्चा मनुष्य के बच्चे के समान जीता बच जाता है—.

परन्तु भैंस का वैसा बच्चा नहीं बचता। तेज, बल, बुद्धि आदि की उपमा जहां जहां दी गई है वहां गोवंश ही के नाम का व्यवहार किया गया है। यथा वृषभ कंध, नरर्षभः (यह मनुष्य सांड के समान है) आदि आदि।

क्रोध; अलढ़पन, बेवकूफी आदि की उपमा भैंस वंश से दी जाती है। जैसे पड़िया के ताऊ, महिशेसा, भैस के अन्डे, भैंस मोढ़, भैंसवार आदि।

मिथिला के गांवों की कहावत हैः—

गायक चरवाह रिमि-झिमि
भैंसक चरवाह चोर
बरदक चरवाह सांझे आंखि निपोर।

अर्थात् गाय का चरवाहा हरिन के समान उछलता है। भैंस का चरवाहा चोर है। बैल का चरवाहा इतना थकता है कि जल्दी सो जाता है। गाय के चराने में बुद्धि विकास की कुछ अजब शक्ति है। तेज पुन्ज, बल आदि सभी गुण इससे प्राप्त होते हैं। इसके अनेक उदाहरण हैं। कृष्ण की बाल लीला, नानक, ईसा, बाप्पा का गोचारण आदि परम उल्लेखनीय हैं

दक्षिण में भी कहावत है। गाय-गायत्री। महिषी सावित्री। बैल ब्राह्मण। रेडा पापी।

अर्थात् भैंसा पापी है इसको मार डालो।

गाय के बच्चे सैकड़े २५ मरते हैं।
भैंस के सैकड़े ७५ मरते हैं।

गाय-भैंस के दूध के वैज्ञानिक विश्लेषण निम्न हैं—

गाय के दूध मधुर, स्निग्ध, शीतल, वायु, पित्त तथा कफ के विकार के नाशक, फेफड़े के लिये लाभकारी, क्षय रोग को दूर करने वाला, मल तथा नाड़ियों को गीला करने वाला है। बराबर सेवन से सभी व्याधियां दूर होती हैं बुढ़ापा जल्दी नहीं आता। शरीर से जहर निकालता है। धारोष्ण पीने से अमृत तुल्य है। वह दो घंटे में पचता है।

भैंस का दूध—मधुर, भारी, गरम वीर्य-वर्धक, चिकना कफ और वायुकारक, आलस्य पैदा करने वाला, मन्दाग्नि तथा छुटी हुई व्याधियों को बुलानेवाला है। धारोष्ण जहर है। नौ घन्टे में पचता है—पीने से नींद सताती है। अनिद्रा रोग में दवा रूप में दिया जाता है उसमें बड़ी गर्मी रहती है।

वैज्ञानिक विश्लेषण

	पानी	चर्बी	चीनी	प्रोटिन	क्षार
गाय	८७।२०	३।६०	४।७१	३।५०—	७५
माता	८८।२०	३।२०	६।८०	१।५६—	२०
भैंस	८२।६३	७।६१	४।७८	४।१६—	६०

ऊपर के आंकड़ों से आपको पता लगेगा कि गाय और माय के दूध में सामन्जस्य है इस लिये गाय के दूध में थोड़ा पानी और चीनी मिला देने से मनुष्य के बच्चे का पालन मजे में होता है। क्यों न हो गाय और मा की प्रकृति में भी तो सामञ्जस्य है। दोनों नौ दस मास में बच्चा देती तथा दोनों के सात मास् बच्चा जीते और आठ मास् मर जाते हैं। इसी लिए प्राचीन काल में गो-दुग्ध पान कर ऋषि लोग संसार का कल्याण कर सकते थे। आज भी पं० रामचन्द्र शर्मा 'वीर' वीस वरसों से सिर्फ धारोष्ण गो-दुग्ध पर ही ऋषिवत् जीवन यापन करते हैं तथा दो-दो मास तक उपवास कर सकते हैं। सादा जीवन और उच्च विचार वाले महर्षियों की सन्तान हम आज चाटुकारिता के अनन्य भक्त हो रहे हैं। हम ताकत के लिये भोजन नहीं करते बल्कि जीभ के स्वाद के लिये।

गाय के दूध के कैसीन (सफेदी) जल्दी पचता है। उसमें वह पीला रंग है जो मुर्गी के अन्डे में कहा जाता तथा जिसके लिये आज नवयुग बेहाल है। हमारी तरफ कमतौल आदि स्थानों में भैंस के माखन में एक प्रकार का पीला रंग मिलाते और उसे बड़े नगरों में भेजकर गाय के माखन के नाम से ऊंचे मूल्य पर बेचते हैं। गो-दुग्ध में ए०, बी०, सी०, डी०, ई०, आदि सभी विटामिन और नाना प्रकार के नमक हैं जिससे पचने में

सुलभता होती है। कारवोहाइड्रेट आदि भी प्रचुर परिमाण में विद्यमान है।

अंग्रेज भी कहते हैं कि गोदूध और मधु सौंदर्य का कारण है। पाँच सौ वर्ष की पुरानी अंगरेजी कविता जो १५४४ के पहले छपी थी—

उसका का सारांश यही है कि गाय के दूध-मक्खन शरीर से जहर बाहर निकालते हैं, लेकिन ये सब गुण भैंस के दूध में कहां।

स्कॉटिस अनाथालय मे इसका प्रयोग करके देखा गया है कि भैंस के दूध पीने वाले बच्चे बराबर बीमार पड़ने लगे।

पूना-कृषि कालेज के अध्यापक राव बहादुर जे० एल० सहस्त्रबुद्धे ने इसका प्रयोग छोटे बच्चों पर करके देखा था। उनकी रिपोर्ट से पता लगता है कि बच्चे मंद बुद्धि और रोगी होने लगे।

गाय और भैंस के दूध का प्रयोग घोड़ों के बच्चों पर करके देखा जा चुका है। जो बच्चे भैंस के दूध पर पले थे वे सुस्त और गर्मी नहीं बर्दाश्त कर सके तथा घोड़े वाले गुण से रहित पाये गये।

डाक्टर एन० एन० गोड बोले ने भी इसका पूरा अनुसंधान किया है और बताया है कि कारबोहाइड्रेट आदि वर्तमान

होने के कारण गाय की मलाई ऐसी सुपाच्य और मनुष्य के स्वभाव के अनुकूल है कि तुरन्त पचकर शौर्य उत्पन्न करती है। उसी का उलटा भैंस के दूध की मलाई पचाने के लिये मनुष्य की अंतरी को बड़ी मिहनत करनी पड़ती है। भोजन पचाने के लिये अन्तरी में नमक है भैंस के दूध पचाने के लिये वह काफी नहीं है। फलतः जिस नमक से हड्डी बनती है अंतरी को उसमें से हटात् भैंस के दूध पचाने में खर्च करना पड़ता है। यही वजह है कि छोटे बच्चे को यह दूध नही पचता तथा इसके व्यवहार से उनकी यकृति बेकाम हो जाती है। साथ ही गाय के घी में आयोडीन है, जो भैंस में नहीं। उसमें विटामीन 'ए' बहुत है। वह जल्द पचता है। दर्द और बीमारी के काम में आता है। ये सब बातें भैंस के घी-दूध में कहां! हम लोग कैसे मूर्ख हैं कि बच्चों को यह दूध पिला-पिला कर बेवकूफ बना रहे हैं।

बहुधा यह प्रश्न भी उठाया जाता है कि भैंस के-दूध में मलाई गाय से दो गुना अधिक होती है तथा भारतवर्ष की दुग्ध उत्पत्ति में ५१ प्रति शत भाग भैंस ही का दूध है। राजकीय कृषि अनुसंधान संघ के पशु जनन विभाग के पांचवां सम्मेलन, १६४२ के नवम्बर मे दिल्ली में हुआ था। उसमें इन पंक्तियों के लेखक ने बिहार सरकार की ओर से गैर सरकारी सदस्य मनोनीत होकर भाग लिया था। वहां गाय और भैंस वाला विषय उपस्थित हुआ। इन पंक्तियों के लेखक की भैंस विरोधी युक्तियों के उत्तर

में उड़ीसा सरकार के डिपुटी वेटरनेरी डाइरेक्टर डा० पीड़ा ने यही बातें कही थीं तथा मद्रास सरकार के भेड़-विशेषज्ञ मि: आर० डब्लू० लिट्ल वुड् ने तो यहां तक कहा था कि ट्रेन में हम आते थे तो एक आदमी ने हमको बतलाया कि देखो, भैंस अनाज का बोरा खा रही है—तात्पर्य कि वह मोटा, खराब और रद्दी चारा खाती है। ऊपर की बात पर यदि ठंडे दिल से विचार किया जाय तो धारणा बिल्कुल गलत निकलेगी। कल्पना कीजिये १) रु० खर्च करने पर एक लगड़ा आम मिला और २) रु खर्च करने पर दो खट्टे आम मिले तो आप ही सोचें कि एक रुपया वाला व्यापार ठीक हुआ या दो रु० वाला। भैंस से गाय के दूध मे आधा मलाई है, परन्तु भैंस-पालन से उस पर खर्च भी गो आधे से कम ही पड़ता है। गाय के दूध-घी के गुण का चौथाई भाग भी तो इसमें नहीं है सोना का भस्म तो रंचक मात्र खाया जाता तो क्या थाली भर भात-रोटी उसकी बराबर कर सकेगी। भैंस को अलग कर हम यदि चारा बचा सकें तो उससे दुगुना हमारी गायें घटोध्नी हो जायगी। फिर पूर्ववत दूध की नदियां बहेगी। युरोप में गाय से सेर पीछे जो मलाई निकलती है पर हमारी गायों की मलाई के अनुपात से आधा है। भैंस के बिना जब उन लोगों का काम चल सकता है तो सिर्फ दूध ही के लिये उनको पालते हैं तो दूध और किसानों के लिये गायका हमारा पालना कितना बड़ा महत्त्व रखता है। दूसरी बात यह है कि भैंस मोटा मोटी रद्दी चारा खाती है। यह भ्रम है। भैंस चाहे जिस प्रकार

अच्छी फसल चोरी करके चरवाते हैं--यह वे ही जानते जो देहात में रहते हैं। साथ ही एक भैंस को चराने के लिये एक खास चरवाहा चाहिये। लेकिन आठ दस गाय के लिये भी एक ही चरवाहे की जरूरत पड़ती है भैंस-पालन कुत्ते का हड्डी चबाना है।

दूसरी बात हत्या की है। अनुपयोगी होने के कारण हम लाखों पाड़े को मार डालते हैं, क्योंकि वह पानी के जीव होने के कारण हमारे कृषिकार्य के लिये उपयुक्त नहीं है। वालजी ने ठीक ही कहा ही कहा है कि भैंस का घी जो हम खाते हैं वह पड़वे की चरबी खाते हैं तथा उसका दूध जो पीते हैं वह पड़वे का आंसू पीते हैं। पाड़ों का बलिदान भी हमारे यहां इसी अनुपयोगिता के कारण पहले से प्रचलित है।

तात्पर्य यह है कि यदि हमें गाय को बचाना है तथा किसानी की उन्नति करना है तो हम भैंस को धीरे-धीरे हटा दें और इसके लिये गये के दूध ही का व्यवहार करें। जब से हमने गाय के दूध का व्यवहार छोड़ रक्खा है, तब से गिरते गये और सौर्य वीर्य गवा कर गुलाम बन गये।

धर्मलालसिंह

मंत्री प्रान्तीय गोशाला तथा पिंजरा पोल कमेटी पटना।

भैंसों का महत्व क्यों बढ़ा ?

इन दिनों लोग गाय की अपेक्षा भैंस पर अधिक ध्यान देते हैं। गायों की अपेक्षा भैंसों की संख्या भी बढ़ती जाती है। सारे देश की संख्या के तो ठीक-ठीक अंक नहीं मिले, पंजाब प्रान्त के मिले हैं जो निम्नलिखित हैं।

	१९१०	१९४५
भैंसों की संख्या	२२ लाख	३२ लाख
गायों की संख्या	३४ लाख	२१ लाख

इन अङ्कों से प्रकट होता है कि पञ्जाब जैसे पशु प्रधान प्रदेश मे भी पिछले ३५ सालों में ही भैंसें ५५ फीसदी अधिक हो गईं तथा गायों की संख्या में प्रति सैकड़ा चालीस की कमी आई।

यह सिद्ध है कि भैंस की अपेक्षा गाय अधिक लाभदायक है फिर भैंस को इतना महत्व क्यों। इस प्रश्न का उत्तर एक ऐतिहासिक सत्य है। अंग्रेजी राज्य से पहले जब [illegible] का अच्छा तथा आवश्यक प्रबन्ध था, चारे तथा गोचर भूमि की कमी न थी। गाय से ही काफी दूध घी तथा बछड़े और आवश्यक बैल मिल जाते, किसान पर एक ही पशु का बोझ था। उन दिनों भैंसों को कोई आवश्यकता ही न थी। अंग्रेजी राज्य में कई सालों [illegible] तक भी भैंस का कहीं विशेष जिक्र नहीं मिलता।

गदर के बाद सन् १८७४ में पंजाब प्रान्त के १६७१ व ७२ के प्रबन्ध की बाबत एक सरकारी रिपोर्ट प्रकाशित हुई, इस रिपोर्ट के जमीमा पृ० १३२ पर जिलेवार पशुओं की संख्या लिखी है। वहां पर गाय, बैल, घोड़े, गधे, ऊटों, की संख्या है भैंस का नाम तक नहीं। १४६ पृष्ठ पर जिलेवार नित्य व्यवहार में आने वाली चीजों के भाव दिये हैं जिले में गाय के घी का भाव है। इस रिपोर्ट से प्रगट होता है कि सन् १८७२ तक गाय का ही महत्व था भैंस को कोई पूछ न थी।

भैंस की आवश्यकता तथा महत्व गाय की नस्ल खराब होने से बढ़ा। सरकार को तोपखानों के लिये ताकतवर बैलों की जरूरत थी सरकार ने गायों की दूध देने की शक्ति ही परवाह न करके केवल मजबूत बैल पैदा करने के लिये दूध तथा बैल दोनों अच्छे देने वाली नस्ल को दोगला करके केवल बैल की नस्ल पर ध्यान दिया। नस्ल खराब होने के कारण गायों का दूध कम हो गया गाय का दूध कम होने से दूध के लिये भैंस को रखना पड़ा। किसान दूध के लिये भैंस तथा बैल के लिये गाय रखने पर मजबूर हुआ। दूध तथा बैल दोनों एक ही नस्ल से न मिलने के कारण गोवंश की उन्नति को बड़ा धक्का पहुंचा। सरकारी दुग्ध-शालाओं के प्रमुख मि० विलियम स्मिथ लिखते हैं, 'सरकारी कृषि विभाग के ऐसे सांड़ों का ही परिवार तैयार करने के कारण कि जिनके बच्चे बहुत दूध देने वाली गायें न हो और उसके ऐसी शिक्षा बराबर देते रहने के कारण कि जो गाय बहुत दुधार होती

है उसका बछड़ा अच्छा बैल नहीं होता है ढोरों का जितना नुकसान हुआ है। उतना और किसी कारण से नहीं क्योंकि इससे तो सारे उद्योग की जड़ पर कुल्हाड़ा पड़ा है। दूध और वहशक्ति दोनों का साथ साथ विकास करना चाहिये। एक के बिना दूसरा असम्भव है और दोनों में कभी विरोध पड़ नहीं सकता।' सर विलियम हण्टर कहते हैं बाकी रही सही कमी सरकार ने खेती-बारी और पशु-वैद्यक विभाग ने बैलों की भी बोझा ढोने की शक्ति बढ़ाने पर ख्याल रख कर गाय की दूध देने की शक्ति का नाश करके गाय की जड़ खोद करके पूरी कर दी। अब दूध के लिये कोई गाय रखता नहीं। फलतः बैल के लिये गाय और दूध के लिये भैंस रखनी पड़ती है। इसलिये एक काम के लिये दो जानवर रखने पड़ते हैं। आखिर एक ओर इससे गाय का और दूसरी ओर पड़वे (कटड़े) का नाश होता है।

हिसार का सांड सुधार फार्म भारतवर्ष ही नहीं एशिया महाद्वीप भर में सब से बड़ा है। सरकार तथा उसके अन्तर्विभागों सरकारी अधिकारी और भोलेभाले लोग इस फार्म के सांडों की बड़ी प्रशंसा करते हैं। पर वास्तव में इस फार्म से गायों की नस्ल को बहुत बड़ा नुकसान पहुंचा है। जहां-जहां भी सांड गये वहां जो गायें दूध और बैल दोनों के लिये प्रसिद्ध थीं उनका दूध इन सांडों से नस्ल पैदा करने के कारण कम हो गया बैल भी अच्छे तैयार न हुये। कर्नल पीज इन्सपेक्टर जनरल पशु विभाग पंजाब के. गायों को स्थानीय नस्लें नाम अपनी पुस्तक लिखते हैं '

हिसार के सरकारी फार्म के कुछ सांड नस्ल-सुधार के लिये रोहतक
जिले में दिये गये। इनसे लाभ नहीं हानि ही हुई। मुझे
जिले के अधिकारियों ने बतलाया लोग इन्हें पसन्द नहीं करते
बहुत तहकीकात करने पर मेरी सम्मत्ति में लोगों का कहना ठीक
है। मैं सरकारी फार्म के निकट की नस्ल को जो कोई नस्ल नहीं
रही पसन्द न करके साधारण स्थानीय नस्ल के लिये सिफारिश
करता हूँ।'

उपरोक्त तीनों वक्तव्य सरकार के जिम्मेवार अधि-
कारियों के हैं जिनसे भी सिद्ध होता है कि सरकार की
नसल सुधार नीति से लाभ नहीं हानि ही पहुँचती है। तीस
चालीस वर्ष पहिले ही जिले हिसार में बारह और पन्द्रह
सेर नित्य दूध देने वाली गायें साधारणतया मिलती थी
पर आज दस सेर दूध देने वाली भी नहीं मिलती।

भैंस की आवश्यकता हुई गायों का दूध देने की शक्ति
कम होने से गायों का दूध कम हुआ सरकारी नसल सुधार
की कुटिल नीति के कारण। संसार के सब देशों में गायों
का महत्व है। भैंस का कोई उपयोग नहीं पर हमारे अभागे
देश में गुलामी के अन्य अभिशापों की तरह भैंस भी सर-
कार का दिया या उत्पन्न किया हुआ एक अभिशाप है
जो इस देश के लोगों की सात्विक बुद्धि तथा बल का नाश
करने के लिए ही गो वश के ह्रासका एक बड़ा कारण बन
रहा है।

सेवाग्रामका सफल अनुभव

बहुत से लोग नस्ल सुधार या दूध का व्यापार करने के लिये साहीवाल थारपार, सिंधी या हरियाना नस्ल की गाय तथा साँड खरीद कर लाते हैं इससे दोहरा नुकसान है। जलवायु तथा चारा दाना अनुकूल न होने के कारण दूसरे स्थानों से लाई हुई गायें कम या प्रायः आधा दूध देती हैं। कम ब्यांत देती तथा आयु कम हो जाती है। दूसरी तीसरी पीढ़ी या सुगत तक तो इन गायों की नस्ल प्रायः ठहरती नहीं या कमजोर हो जाती है। हरियाने के इलाके में जो गायें बाहर ले जाई जाती हैं उनका दूध तथा आयु ही कम नहीं होती कितनी ही अनुकूल जल वायु न होने के कारण अकाल मृत्यु मरती हैं। बाहर की गायों पर ही दृष्टि रखने से दूसरा तथा बड़ा दोष है अपने इलाके की गायों की असली नस्ल की परवाह न करना, जिसके कारण उन की नस्ल दिन प्रतिदिन खराब और कमजोर होती जा रही है। बाहर से लाई हुई गायें जलवायु अनुकूल न होने के कारण कष्ट पाती तथा अकाल मृत्यु से मरती और अपने इलाके की बेपरवाही के कारण कमजोर होकर भूखी रहकर मरती हैं। बाहर से गाय लाना गोवंश पर तो अत्याचार है ही इसमें आर्थिक लाभ भी नहीं होता। इस हालत में

अन्य प्रसिद्ध पशु विशेषज्ञों ने गायों पर होने वाले इस दोहरे अत्याचार को रोकने का एक ही उपाय बतलाया है। वह है स्थानीय नसल को उन्नत करना। पर गैर सरकारी तो क्या सरकारी दुग्ध शालाओं तथा नसल सुधार दुग्ध शालाओं में इसके अनुसार कार्य नहीं किया गया। महात्मा गाँधीजी के तत्वाधान में बने अखिल भारतीय गो-सेवा संघ ने स्थानीय नसल की उन्नति की पद्धति को अपनाया तथा अपनी सेवा ग्राम की गो-शाला में इसका अनुभव किया।

सेवाग्राम या वर्धा के निकट गवालाऊ नसल की गायें होती हैं। सेवाग्राम की गोशाला में चुने हुये गवालाऊ नसल की ही गायें तथा सांड रखे गए। गवालाऊ नसल की गायें साधारणतया नित्य 'औस्तन् डेढ सेर दूध देती हैं पर इस गोशाला में देखरेख तथा नसल सुधार के कारण नित्य चार सेर से भी अधिक दूध देने लगीं। किसी २ गाय ने तो दस सेर तक भी दूध दिया। दूध देने के दिनों की संख्या बढ़ी तथा सूखने की कम हुई। दूध तो बढ़ा ही बैल और साँड भी अच्छे तैयार हुए। गवालाऊ जैसी साधारण नसल सात साल की ठीक देख रेख तथा नसल सुधार के कारण दूध और बैल दोनो अच्छे देने वाली नसल बन गई।

इंगलैण्ड के दूध तथा पशुओं के मुख्य विशेषज्ञ और भारत सरकार के दूध बाजार सलाहकार मि० आर. ए

पेपराल ने सन १९४५ में देश की कितनी ही बड़ी २ सरकारी दुग्धशालाओं को देखा। पर किसी के बारे एक शब्द भी नहीं लिखा पर सेवाग्राम की बाबत अपनी रिपोर्ट के पृ० ४ पर लिखते हैं।

"सेवाग्राम में गवालाऊ नसल की बाबत जो नतीजा निकला वह बड़ा उत्साहवर्धक है अच्छी तरह चुनी हुई गायें कुछ सालों से ही ठीक ठीक चारा दाना देने से बैल उत्पन्न करने के अच्छे गुण कायम रखते हुये ६ से दस सेर तक दूध देने के योग्य हो गईं इस दूध में चिकनाई करीबन छः फी सदी है।"

सेवाग्राम के अनुभव के नतीजे को देखते हुए हमें जहां तथा जिस इलाके में नसल सुधार या दूध व्यापार के लिये गायें रक्खी जावें वह उसी इलाके की चुनी हुई गायें हों। सेवाग्राम के अतिरिक्त वर्धा शहर में निम्न [illegible] दुग्धशालाएं चल रही हैं। जिन से वर्धा शहर को आवश्यक दूध तो मिलता ही है, बचे दूध का घी तथा मक्खन बनता है। दूध उत्पादन के साथ २ नसल सुधार का काम भी होता है इतना कार्य होने पर भी इनमें घाटा नहीं लाभ ही है। देश की गोशालायें तथा नसल सुधार एवं दूध का व्यापार करने वाले सज्जन सेवाग्राम की पद्धति से स्थानीय नसल को उन्नत करें तो उन्हें दूध तथा बैल मिलेंगे। नसल सुधार होगा, घाटा न रहेगा, कितनी ही

गाये जो बाहर से लाई जाती हैं। स्थानीय की जो उपेक्षा की जातीं वह कष्ट से बचेंगी, उनके प्राणों की रक्षा होगी।

हमारे देश के हर एक प्रांत तथा इलाके में स्थानीय गायों की नसलें हैं। आशा है गोवंश की वास्तविक और स्थाई उन्नति तथा रक्षा के दृष्टिकोण को सन्मुख रखते हुये बाहर से गाये न लाकर स्थानीय नसल को ही उन्नत करने की कोशिश होगी।

——

गो सेवा संघ

महत्मागान्धी जीने देश के लोगों को स्वतन्त्र तथा सुखी बनाने का तो प्रयत्न किया ही, राजनीतिक उलझनों तथा कार्यों के रहते हुए भी आपने गायों की उन्नति तथा सेवा पर ध्यान दिया। महात्मा गान्धी जी ने नवजीवन तथा हरिजन सेवक में कितने ही लेख लिखकर लोगों का ध्यान इस आवश्यक कार्य की ओर दिलाया। जनवरी १६४५ में बेलगाम में हुई गो रक्षा परिषद् के अध्यक्ष पद से आपने बड़ा उपयोगी तथा मार्मिक भाषण ही नहीं क्रिया रचना कम कार्य के लिये अखिल भारतीय गो रक्षा मण्डल की स्थापना की, जिसे पंजाब केशरी स्वर्गीय ला० लाजपतराय; काशी के देशभक्त तथा अपूर्व विद्वान डा० भगवानदासजी, श्री केलकर, डा० मुन्जे, अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा महामना भारत भूषण पं० मदन मोहन

मालवीय जैसे देश विख्यात नेताओं का सहयोग मिला। जुलाई १९२८ में यह कार्य गो सेवा संघ के सुपुर्द हुआ।

गो सेवा संघ ने महात्मा गांधी जी के आदेश पर स्वर्गीय सेठ जमनालाल जी बजाज की अध्यक्षता में गो सेवा के रचनात्मक कार्य को अपनाया। सेठ जमनालाल जी ने अपना सब समय संघ को दिया तथा गायों की स्वयं सेवा करने के लिये गोपुरी में झोंपड़ा डाल कर रहने लगे।

गो सेवा संघ ने केवल प्रचार नहीं रचनात्मक कार्य की ओर ही अधिक ध्यान दिया। नसल सुधार तथा लोगों को अच्छा दूध देने के लिये गोशालायें स्थापित की। स्थानीय गवलाव नसल की गायें जो सेर डेढ़ सेर दूध ही दिया करती थी नसल सुधार तथा देख रेख के कारण चार सेर तथा कोई २ गाय दस सेर तक दूध देने लगी गोशाला के साथ साथ गो सेवा के लिये कार्यकर्ता तय्यार करने लिये गोविद्यालय भी जारी किया। गाय के गोबर तथा मूत्र से अच्छी खाद और गोबर गैस प्लांट आदि का उपयोग करने का अमली काम हुआ। यह कोशिश की गई कि गाय को अधिक से अधिक लाभदायक बनाया जाय जिससे गाय का मूल्य तथा आदर बढ़े। गोसेवा संघ ने गोशालाओं को उपयोगी बनाने की ओर भी लोगों का ध्यान दिलाया तथा बढ़ते हुए भैंसों के प्रचार को हानिकारक बताते हुए केवल मात्र गायों की उन्नति पर ही ध्यान देने के लिये जोर दिया।

गोसेवा संघ के मैम्बरों के लिये गाय के ही दूध घी आदि का व्यवहार में लाना तथा चमड़े के स्थान में काटी हुई नहीं, अपनी मृत्यु मरी गाय के चमड़े की बने जूते आदि पहनना आवश्यक है। मैम्बरी का सालाना चन्दा एक रुपया या अपने हाथ का कता दो हजार गज सूत है। इन दिनों मण्डल की अध्यक्षा श्री मती जानकीदेवी जी बजाज हैं।

गोसेवा संघ केवल एक प्रचारक सभा नहीं, बुनियादी तरीके पर रचनात्मक कार्य करने वाली महान संस्था है। जो लोग गो सेवा कार्य से दिलचस्पी या सम्बन्ध रखते है उन्हें गोसेवा संघ के मेम्बर बनना चाहिये।

गाय और सांड के लिये बछड़ा खरीदने के लिये कुछ सुझाव !

गोशालाओं, दुग्ध तथा नसल सुधार शालाओं और निज के लिए गायें खरीदते समय प्रायः केवल शान शकल व तत्काल दूध ही प्रधान परीक्षा मानी जाती है पर यह ठीक नहीं, कितने ही गाय बेचने वाले और प्रायः करके पशु व्यापारी बेचने वाली गाय को शक्कर दूध, चावलों का मांड या ऐसी तत्काल दूध बढ़ाने वाली चीजें पिला कर खरीदार को अधिक दूध का धोखा देते हैं, ऐसे बढ़ाया हुआ दूध थोड़े दिन तो ठहरता है पर फिर गाय दूध ही कम नहीं देती कभी २ तो तरह २ के रोगों का घर भी

बन जाती है। सांड प्रायः नहीं बिकते, सांडों के लिए बछड़े ही खरीदे जाते हैं। यह बछड़े प्रायः पशु मेलों में ही खरीदे जाते हैं जहां नहीं इनके खाने की तहकीकात की जाती है और न गुण दोष देखने का कोई पैमाना होता है। [illegible] में खरीदे हुए यह बछड़े जब सांड बन जाते हैं तो उनमें से बहुत से देखने में सुन्दर तथा बड़े डील डोल के होने पर भी नस्ल के लिये अच्छे नहीं होते, उनमें से कितने ही तो पाल ही नहीं देते। उनकी पैदा की हुई बछड़ियां कम दूध देती तथा बछड़े कमजोर होते हैं। जो नस्ल को उन्नत नहीं अवनत करते हैं।

अच्छी नस्ल बनाने के लिये बहुत जांच पड़ताल करके ही गायें तथा सांडों के लिये बछड़े खरीदने चाहियें। जांच के कुछ तरीके यहां लिखे जाते हैं। भविष्य नस्ल सुधार करने के लिये पूरी २ जांच हो सके इसका विवरण तैयार करने के लिये भी कुछ शीर्षक भी लिखे हैं। गाय तथा सांड के लिये बछड़े खरीदते समय इन से लाभ उठावें।

कैसी गायें खरीदें?

जो अच्छी नस्ल के सांड तथा गाय की बेटी हो जो अधिक तथा अधिक दिन तक दूध देती हो। जल्दी ब्याने वाली हो। ब्याने से तीन महीने के अन्दर २ गाभिन हो जावे। जो एक महीने के अन्दर २ ब्याई हुई हो। जो मारने वाली नहीं शांति प्रिय हो। जिस का बछड़ा अच्छी माता की औलाद हो

दूसरी या तीसरी वार की व्याई हुई हो। शरीर रेशम जैसा मुलायम सुडोल तथा सुन्दर हो। चारों थन अलग अलग यकसां हों लेवा भरा हुआ हो। लटकता हुआ न हो पूंछ लम्बी हो। कान बड़े तथा अन्दर कुछ पीलापन लिये हों। नरम वाल हों। गाय खरीदने से पहिले एक २ वात की पूरी तसल्ली की जावे। यह गाय नसल सुधार के लिए लेनी है। अतः हर एक वात अच्छी तरह देख कर पड़ताल करें। अच्छे बछड़े बछड़ी वाली गाय ही खरीदी जावे।

गाय खरीदते समय नीचे लिखी वातों का उत्तर लिख लें :—

१ नाम जिस से गाय खरीदो २ पिता का नाम ३ जाति ४ गांव ५ गाय खरीदने की तारीख तथा मिती ६ किस मूल्य में खरीदी ७ घर की बछड़ी थी या उस ने किसी और से मोल ली थी। मोल ली हुई थी तो पहिले मालिक का पता गांव इत्यादि ८ गाय का हुलिया ६ रंग, सींग, उमर, पूंछ, कौथे व्याई है। १० पहिले व्यातों में बछड़े दिये या बछड़ी अलग २, ११ अब किस मिती या तारीख को व्याई है।

यह गाय पिछले व्यांतों में कितना तथा कितने दिन तक दूध देती रही, घी कितना था, यह बछड़ा किस नसल के सांड से पैदा हुआ है उस सांड की पैदा की हुई बछड़ियां कितना तथा कितने दिन दूध देती हैं। बछड़े कैसे होते हैं। यह गाय पिछले व्यांतों में व्याने से पीछे कितने २ दिन वाद ग्याभन होती रही। पिछले व्यांतों में क्या क्या कितना दाना दिया जाता

रहा। इस गाय की मां कितने दिन तक कितना २ दूध [illegible] रही। मालूम हो सके तो इसकी नानी का भी।

यह गाय किस नसल के सांड से पैदा हुई, उस सांड की अन्य बछड़ियां कितना तथा कितने दिन दूध देती हैं। इस गाय के खरने या अन्य बातों की बाबत जो गुण दोष हों। सब [illegible] तरह सच-सच लिखें।

सांड के लिये बछड़ा खरीदते हुये कुछ बातें!

१ नाम मालिक, २ पिता का नाम, ३ जाति, ४ गांव, ५ तारीख तथा मिति, ६ बछड़े की उमर ठीक ठीक, ७ रंग, ८ सींग, ९ खास २ अच्छी बातें तथा निशान, १० इस बछड़े की मां कितने दिन तक कितना २ दूध देती है, ११ यह बछड़ा किस नसल के सांड का है, १२ उस सांड की बछड़ियां कितना तथा कितने दिन तक कितना २ दूध देती रहती हैं। १३ इस बछड़े को कितने दिन दूध कितने २ समय तक पिलाया गया, १४ इस गाय के पहिले ब्यांतों के बछड़े बछड़ियों का हाल दूध [illegible] आदि। १५ सांड छोड़ा जावे तो मूल्य का अनुमान, १६ इस [illegible] के अनुसार जो बछड़ा ठीक निकले वही अच्छी नस्ल [illegible] हैं। [illegible] का शरीर ढीला नहीं गठा हुआ हो, [illegible] छोटा न हो। सिर छोटा, माथा चौड़ा, गर्दन भारी हो, पर लम्बी न हो, [illegible] और मोटी हों। सिर [illegible] [illegible] [illegible] हो। [illegible] लम्बी हो। दांत तेज हों गिनती में आठ हों या कम हों। [illegible]

लम्बे और उनमें रूयें कम हों। सींग की नोक मूंगे जैसी हो। मूतना बड़ा न हो।

पारस्कर गृह्य सूत्र के तीसरे काण्ड की नवीं कंडिका में लिखा है :—

सांड एक या दो रंग का हो, सर्वाङ्ग में सम्पूर्ण हो, दीन तथा अधिक अङ्गों वाला भी न हो। जो बहुत दुधार गाय का बछड़ा हो। इसी सूत्र के हरिहर भाष्य में लिखा है। सांड का कन्धा और डील (ककुत) ऊंचे और विशाल, जांघ बड़ी, पूंछ सीधी, और आखें वैडूर्य मणि के समान हों, सींग की नोक मूंगे के समान हो, पूंछ लम्बी और सीधी हो दांत तेज और आठ नौ या दस हों। कान लम्बे और रोयें के न हों। पूंछ जमीन तक पहुँचती और उसके ऊपर घने बाल हों। नील सांड खास तौर पर अच्छा होता है नील सांड रंग का लाल होता और उस के पांव, मुंह और पूंछ सफेद होते हैं। सांड तीन वर्ष का अच्छा होता है।

जिस सांड का तालू ओठ और दांत काले हों, खुर सींग रूखे। दांत निर्बल और कद ठिगना हो जो काना या कुब्जा हो गधे या शेर के रंग का हो ऐसा सांड नहीं छोड़ना चाहिये।

का तीन महीने के बाद का दूध पित्तकारक खरास लिये हुए मधुर और शोषन करनेवाला होता है। पहली बार ब्यायी हुई गाय का दूध निःसार और गुणहीन होता है। नयी ब्यायी हुई गाय का दूध रूखा, दाहकारक और रक्त दोषकारक तथा पित्त-कारक होता है। ब्याने के अधिक दिन बाद गाय का दूध मधुर दाहकारक और खट्टा होता है। तुरन्त का दुहा हुआ धारोष्ण दूध वृष्य, धातुवर्द्धक, निद्राकारक, कान्तिप्रद, पथ्य, स्वादिष्ट अग्नि प्रदीप्त करने वाला, अमृतसदृश और सर्वरोगनाशक होता है। ठंडा दूध (दुहने के एक पहर बाद) त्रिदोषकारक होता है, गरम पितनाशक होता है, उबाले हुए दूध को पीने से कफ का और बिना गर्म किया हुआ ठंडा दूध बलवर्द्धक वृष्य दोषोत्पादक अबाच और मलस्तम्भक होता है। प्रातःकाल गाय का दूध शक्कर डालकर पीने से हितकारक होता है।

दूध की मलाई—शीतल स्निग्ध वृष्या, बलकारक शुक्रप्रद, तृप्तिकर, रुचिकर, कफवर्द्धक और धातुवर्द्धक है। तथा पित्त, वायु रक्तपित्त दाह और रक्त रोगों का नाश करती है।

गाय के दूध का ओषधि में उपयोगी

१—आधाशीशी में—गाय के दूध खोआ खाना या गाय के दूध में बादाम के टुकड़े डालकर बनायी हुई खीर में शक्कर डालकर पिलाना चाहिए।

२—धतूरा अथवा कनेर के विष पर—पाव भर दूध में एक तोला शक्कर डाल कर पिलाना चाहिये।

३-संखिया तूतिया बछनाग, मुर्दासंख इत्यादि के विषपर—जबतक उलटी न हो जाय तब तक दूध या दूध में शक्कर डालकर पिलाना चाहिये।

४-मैनसिल के विषपर—दूध में मधु डालकर तीन दिन पिलाना चाहिये।

५-कोदों के विषपर—ठंडा दूध पिलाना चाहिये।

६-कांच का चूर्ण—अन्न के साथ पेटमें चला गया हो तो ऊपर से दूध पिलाना चाहिए।

७-गन्धक के विष पर—दूध में घी डालकर पिलाना चाहिए।

८-पुष्टि, बल और वीर्य की वृद्धि के लिये—गरम किये हुए दूधमें गाय का घी और शक्कर डालकर पिलाना चाहिये। इसके जैसा पथ्य, तेजोवर्द्धक और बलवर्द्धक प्रयोग दूसरा कोई नहीं है।

९-जीर्ण ज्वर पर—दूधमें गायका घी, सोंठ, छुहारा और काली दाख डालकर उसे आग पर उबालकर पिलाना चाहिये।

१०-मूत्रकृच्छ्र और मधुमेह पर—दूध में गुड़ अथवा घी डालकर उसे थोड़ा गरम करके पिलाना, अथवा गरम किया हुआ दूध घी के साथ बराबर शक्कर डालकर पिलाना चाहिए।

११-आंख उठी हो या जलती हो—तो गाय के दूध

में रूई को भिगोकर और उसके ऊपर फिटकिरी का चूर्ण डालकर आंख के ऊपर पट्टी बांध देनी चाहिये।

१२-पुष्टिके लिए—गायका दूध घी और मधु मिलाकर पिलाना चाहिए।

१३-पित्त विकारके ऊपर—सात तोला दूध लेकर उस में आधा तोला से एक तोला तक सोंठ उबाल कर खोआ बनावे, उसमें शक्कर डालकर गोली बना ले और रातको सोने के पहले प्रतिदिन खिलावे। खाने के बाद पानी न पीने दे। इस प्रकार कुछ अधिक दिनों तक इसका सेवन कराना चाहिये।

१४-चेचक अथवा छोटी माता होने के कारण बालक के शरीर में आने वाले ज्वर के ऊपर—तुरन्त दुहे हुए दूध और घी को मिलाकर मिश्री डालकर पिलावे।

१५-छाती तथा हृदय रोग पर—दूध में शुद्ध भिलावे का तेल १० बूंद तक डालकर पिलाना चाहिये।

१६-रक्तपित्त के ऊपर—दूधमें पांच गुना पानी डालकर अच्छी तरह उबाले और सारा पानी जल जाने के बाद दूध पिला दे।

१७-हड्डी टूटने पर-प्रातःकाल बाखड़ी गाय का दूध शक्कर डालकर गरम करे। उसमें घी और लाख का चूर्ण डालकर ठंडा होने पर पिलावे, इससे टूटी हड्डी ठीक हो जाती है।

१८–कफ पर—गर्म दूधमें मिश्री और काली मिर्चका चूर्ण डालकर पिलाना चाहिये।

१९–सिरके रक्तज और पित्तज रोगों पर—रूई की मोटी तह करके गायके दूध में भिगोकर सिरके ऊपर रक्खे, उसके ऊपर पट्टी बांध दे और बारम्बार दूध देता रहे। इस प्रकार सवेरे से शाम तक रक्खे। शामको सिर धोकर मक्खन लगावे—इस प्रकार २-३ दिनों तक करे।

२०–प्रवाहिका और रक्त-पित्तादि के ऊपर—आधा दूध और आधा पानी मिलाकर उबाले, जब पानी जल जाय तो बचे दूध का उपयोग शूल, प्रवाहिका और रक्तपित्त रोग के ऊपर करे।

२१–पॉडुरोग, क्षय और संग्रहणी के ऊपर—लोहे के बर्तन में गरम किया हुआ दूध सात दिन पिलाना और पथ्य सेवन कराना चाहिये।

२२–हिचकी के ऊपर—औटा हुआ दूध पिलाना चाहिए।

२३–मूत्रावरोध से हुए उदावर्त वायु के ऊपर—दूध और पानी एक साथ मिलाकर पिलाना चाहिए।

२४–मेहनत करके थके हुए मनुष्य को दूध गरम करके पिलावे, इससे थकावट दूर हो जायगी और स्फूर्ति आ जायगी। थकावट के लिए यह अद्वितीय औषधि है।

२५–सिरदर्द के ऊपर—गाय के दूध में सोंठ घिस कर सिर पर उसका लेप करे और ऊपर से रुई बांध दे। इस प्रकार सात आठ घन्टे में भयङ्कर से भी भयङ्कर सिर दर्द दूर हो हो जाता है।

गाय का दही

स्वादिष्ट, बलवर्द्धक, रुचिकर, तेजस्वी, दीपन, पौष्टिक, मीठा, ग्राहक, ठंडा और वातजन्य अर्श (बवासीर) का नाश करने वाला है। दही मन्द, स्वादिष्ट, स्वाद्वम्ल, (स्वादिष्ट खट्टा), खट्टा, और अति खट्टा-पांच प्रकार का होता है। मन्द दही भारी, स्वादिष्ट दूध के समान मूत्रकारक, सारक, दाहक और त्रिदोपनाशक है। स्वादिष्ट दही भी भारी, मीठा, वृष्य, पाक-काल में मधुर, अभिष्यन्द कारक, मेद, वायु और कफका नाश करनेवाला, रक्त शुद्ध करनेवाला और पित्तको शमन करनेवाला है। स्वादिष्ट (स्वाद्वम्ल) खट्टा दही भारी, मीठा, किञ्चित् खट्टा और तुर्श होता है। दूसरे गुण स्वादिष्ट दही के ही समान हैं। खट्टा दही रक्त, पित्त और कफ बढ़ाने वाला और दीपन है। अत्यन्त खट्टा दही दीपन, गलेमें दाह करनेवाला, रोंगटे खड़ा करनेवाला, रक्तपित्त पैदा करनेवाला और दांत के लिए हानिकारक है। औंटे हुए दुध का दही शीतल, लघु विष्टम्भकारक, वातकारक, दीपन, मधुर, रुचिकर और थोड़ा पित्तकारक होता है। औंटाकर मलाई निकाले हुए दूधका दही ठंडा, लघुविष्टम्भकारक, वातकारक, ग्राहक, दीपन, मधुर, रुचिकर और थोड़ा पित्तकारक होता है। शक्कर मिला हुआ दही खाने से पित्त, दाह, तृषा और रक्त दोष का नाश होता है। गुड मिला हुआ दही तृप्तिकर, धातुवर्द्धक, गुरु, और वातका नाश

करने वाला होता है। दही का निचोड़ा हुआ पानी बल बढ़ाने वाला, तुर्श, पित्ताकारक, सारक, गरम, रुचिकर खट्टा, लघु, स्रोतशोधक और प्लीहोदर, तृषा, कफकी बवासीर, वायु, विष्टम्भ, पांडुरोग, शूल और श्वासरोग का नाश करने वाला है। दहीके ऊपर का जल सारक, गुरु, और रक्तपित्त, कफ और वीर्य को बढ़ाने वाला, और जठराग्नि को मन्द करने वाला तथा वात-नाशक है। दूसरे गुण दूध जैसे ही हैं।

गाय के दही का उपयोग

१—अजीर्णजनित विषूचिका पर—गाय का दही या छाछ समान भाग पानी डालकर पिलावे।

२—कांचका चूर्ण अनाजके साथ खाया गया हो तो गाय का दही पिलावे।

३—तृष्णा रोगके ऊपर—पुरानी ईंट साफ धोकर आग मे डाले, खूब लाल हो जाय तब तक गरम करे, फिर उसे गायके दही में डालदे और उस दही को थोड़ा-थोड़ा खिलावे।

४—कनेर के विषपर —गायका दही शक्कर डालकर पिलावे।

५—सूर्यावर्त (आधाशीशी) रोगपर—सूर्योदय होनेके पहले दही और भात तीन रोज तक खिलावे।

६—तृष्णा रोगपर – गायका मधुर दही १२८ भाग, शक्कर ६४ भाग, घी ५ भाग, मधु ३ भाग, काली मिर्चका चूर्ण २ भाग, सोंठका चूर्ण २ भाग, इलायची २ भाग—ये सब चीजें एक साथ कलई किए हुए बर्तन में मिलाकर रख दे

और उसमें से थोड़ा-थोड़ा खिलावे। दूसरा प्रकार यह है कि दही का तमाम पानी वस्त्रसे छानकर उसमें शक्कर वगैरह सब मसाले डालकर घोल कर पिलावे। इसे श्रीखण्ड कहते हैं। वह तृषा, दाह और पित्त नाशक तथा मधुर होता है।

७-सर्पके विषके ऊपर—दही, मधु और मक्खन—इन तीनों को तीन-तीन तोले ले तथा पीपल, सोंठ, काली मिर्च, वच और सेंधा नमक समभाग लेकर बारीक चूर्ण बनाकर वस्त्रसे छान ले। यह चूर्ण तीन तोला लेकर बारह तोले मिश्रण तैयार करे। उसमें से चार तोले पिलावे। एक मिनटके बाद वमन और विरेचन न हो तो फिर दूसरी बार दे। जरूरत पड़े तो तीसरी बार भी पिलावे। इस प्रकार तीन मात्रा लेने पर अवश्य ही वमन-विरेचन होकर रोग से मुक्ति मिलेगी। काष्ठौषधि नयी होनी चाहिये। नयी वनस्पति हो तो शास्त्रकार लिखते हैं कि तक्षक, वासु की या उस से भी बलवान् सर्पका विष इस औषधिसे दूर हो जाता है। सर्प काटने के बाद तुरन्त ही दवा देनी चाहिये।

८-सूजन, व्रणकी तीक्ष्ण पीड़ा और दाहके ऊपर—दहीको कपड़े में बांधकर पानी निकालकर उसे दर्दवाली जगह पर बांधने से दर्द दूर होता है, शूल तथा दाह मिट जाता है, निकलता हुआ फोड़ा बैठ जाता है, और निकला हुआ फोड़ा फटकर भर जाता है।

गाय का मक्खन

शीतल, धातुवर्द्धक, वृष्य, कान्ति बढ़ानेवाला, ग्राहक, बलप्रद, बालक और वृद्ध के लिए ठोस, रुचिकर, मधुर, सुखकारक, आंखकी ज्योति बढ़ानेवाला, पुष्टिकारक, वात, पित्त, कफ, अर्श, क्षय, रक्त-विकार, सर्वांङ्गशूल, थकावट और तन्द्रा का नाश करता है।

ठंडा मक्खन—बल बढ़ाने वाला, वीर्यकारक, भारी, कफ करनेवाला, मेदाको बढ़ानेवाला, आंखोंके लिए हितकर, धातुवर्द्धक, अप्रिय, अनभिष्यन्दी तथा दो तीन दिनों का हो तो खारा, खट्टा, तीखा और वान्ति, अर्श, कोढ़—इन दोषों के सिवा नेत्ररोग और दूसरे सब रोगों का नाश करनेवाला होता है।

गाय के मक्खन का उपयोग

१—क्षयका नाश करके शक्ति देने के लिये—गायका मक्खन, मिश्री, मधु और सोने का वर्क सबको एकत्र करके खिलावे।

(२) आंखों के दाह पर—मक्खन आंखों के ऊपर चुपड़ देवे।

(३) शरीर में मन्दज्वर हो—तो मक्खन और (मिश्री) खिलावे।

(४) शीतला अथवा छोटी माता के कारण लड़कों के मन्दज्वर के ऊपर—गाय का मक्खन और मिश्री मिला कर इस

में जीरे का चूर्ण डाले और छोटी सुपारी के बराबर गोली बनाकर रोज सवेरे खिलावे।

(५) कान में बहुत जलन होने पर—गाय का मक्खन थोड़ा गरम करके कान में डाल दे।

(६) भिलावा आदि उड़कर आंख में पड़ गया हो—तो गाय का मक्खन लगा दे। भिलावे के कारण शरीर में दाह उत्पन्न होता हो तो मक्खन पुष्कल परिमाण में खिलावे।

(७) कनेर के विष पर—गाय का मक्खन थोड़ा उष्ण करके खिलावे।

(८) रक्तातिसार पर—मक्खन में मधु और मिश्री डालकर खिलावे।

(९) अर्श व्याधि पर—मक्खन और तिल खिलावे।

गाय की छाछ

जठराग्नि को प्रदीप्त करने वाली और त्रिदोष तथा अर्श का नाश करने वाली होती है। साधारण छाछ स्वादिष्ट, ग्राही, खट्टी, तुर्श, लघु, गरम, पाक के समय मधुर, तीखी, रूखी, अवृष्य, बलप्रद, तृप्तिकर हृदय को विकसित करने वाली, रुचिकारक और शरीर को कृश बनाने वाली होती है। और प्रमेह, मेद, अर्श, पांडु, संग्रहणी, मलस्तम्भ, अतिसार, अरुचि, भगन्दर, उदर, प्लीहा, गुल्म, सूजन, कफ, कोढ़, कृमि, पसीना, घी का अजीर्ण, वायु, त्रिदोष, विषमज्वर और शूल का नाश करती है। छाछ मधुरपाकी होती है, इस से पित्तका कोप नहीं करती। रूखी गर्म

और तुर्श होती है इसलिये कफ का नाश करती है। खट्टी और मधुर होती है, इसलिये वात का नाश करती है। मधुर छाछ कफ करने वाली और वातपित्तनाशक होती है। खट्टी छाछ रक्त पित्त और कृमि का नाश करती है। खट्टी छाछ मीठे के साथ पीने से वायु का नाश करती है। मीठी छाछ शक्कर के साथ पीने से पित्त का नाश होता है। मीठी छाछ नमक, सोंठ, काली मिर्च और पीपल के साथ मिला कर पीने से रूक्षता और कफ का नाश करती है। पेट मे वायु हो तो पीपल और नमक डाल कर मीठी छाछ पीने से वायु का नाश होता है। पित्त के रोगी को शक्कर और काली मिर्च मिलाकर मीठी छाछ दे। मक्खन वाली छाछ तन्द्रा तथा शरीर में जड़ता पैदा करने वाली और भारी होती है। मक्खन निकाली हुई छाछ लघु और पथ्य करने वाली होती है। घोल (पानी डाल कर हिलाया हुआ दही का मट्ठा) उष्ण और त्रिदोषनाशक होता है।

गाय की छाछ का उपयोग

(१) कफोदर के ऊपर—त्रिकुट, अजवाइन, जीरा और सैंधव डाल कर छाछ पिलावे। त्रिकटु, सैन्धव, जवखार वगैरह डाल कर छाछ को सन्निपातोदर में देना चाहिये। क्षय, दौर्बल्य, मूर्च्छा, भ्रम, दाह तथा रक्तपित्त में कभी छाछ नहीं पिलानी चाहिये।

(२) दाह के ऊपर—गाय की छाछ में कपड़ा भिगोकर उस से रोगी के शरीर का स्पर्श कराता रहे, इस से दाह का नाश हो जाता है।

(३) संग्रहणी, अतिसार और अर्श के ऊपर—छाछ पिलावे; इस से शरीर का रक्त शुद्ध होकर रस, बल, पुष्टि और वर्ण सरस होता है तथा वात और कफ के दोषों का शमन होता है। छाछ कल्प (४० दिनों तक केवल छाछ पर रहे) कराने से कठिन से कठिन संग्रहणी और उदर-रोग मिट जाते हैं।

(४) कोष्टबद्धता के ऊपर—अजवाइन और बिड नमक डाल कर छाछ पिलावे।

(५) अर्श के ऊपर—चित्रमूल की छाल पीस कर उसके रसको एक बर्तन में डाले, उस में गाय का दही या छाछ डाल कर पिलावे। अथवा सोंठ, मिर्च, बिड नमक और छोटी पीपल डाल कर गाय की छाछ पिलावे।

(६) सग्रहणी के ऊपर—गाय की छाछ में एक तोला सफेद मुसली पीसकर पिलावे और छाछ-भात का पथ्य दे। अथवा गाय की छाछ में सोंठ और छोटी पीपल का चूर्ण डाल कर पिलावे। संग्रहणी रोग के लिये छाछ दीपन, ग्राहक और लघु होती है और बहुत ही लाभदायक है।

(७) मूंगफली खाकर छाछ पी लेने से—कोई नुकसान नहीं होता, तथा उस से होने वाले अजीर्ण के लिए भी छाछ लाभदायक होती है।

गाय का घी

रस और पाक में स्वादिष्ट, शीतल, भारी, जठराग्नि को प्रदीप्त करने वाला, स्निग्ध, सुगन्धित, रसायन, रुचिकर, नेत्र

की ज्योति बढ़ाने वाला, कान्तिकारक, वृष्य और मेधा, लावण्य, तेज और बल देने वाला, आयुप्रद, बुद्धिवर्द्धक, शुक्रवर्धक, स्वरकारक, हृदय, मनुष्य के लिये हितकारक और बाल, वृद्ध तथा क्षतक्षीण के लिये ठोस और अग्निदग्ध व्रण, शस्त्रक्षत, वात, पित्त, कफ, दम, विष और त्रिदोष का नाश करता है। सतत ज्वर के लिए हितकारक और आम ज्वर वाले के लिये विष समान है। मक्खन में से ताजा निकाला हुआ घी तृप्ति-कारक, दुर्बल मनुष्य के लिये हितकारक और भोजन में स्वादिष्ट होता है। नेत्ररोग, पाण्डु और कमला के लिये प्रशस्त है। हैजा, अग्नि मान्द्य, बाल, वृद्ध, क्षयरोग, आम व्याधि, कफरोग, मदात्यय, कोष्ठबद्धता और ज्वर में घी कम ही देना चाहिये। पुराना घी तीक्ष्ण, सारक, खट्टा, लघु, तीखा, उष्ण वीर्य, वर्ण-कारक, छेदक, सुनने की शक्ति बढ़ाने वाला, अग्निदीपक, व्राणसंशोधक, व्रणको सुखाने वाला और गुल्म, योनिरोग, मस्तकरोग, नेत्ररोग, कर्णरोग, सूजन, अपस्मार, मद, मूर्छा ज्वर, श्वास, खांसी, संग्रहणी, अर्श, श्लेष्म, कोढ़, उन्माद, कृमि, विष, अलक्ष्मी और त्रिदोष का नाश करता है। यह वस्तिकर्म और नस्य में प्रशस्त है। दस वर्ष का पुराना घी 'जीर्ण', १०० से १००० वर्ष का 'कौम्भ' और ११०० वर्ष के ऊपर का 'महाघृत' कहलाता है। यह जितना ही पुराना होता जाता है, उतना ही इसका गुण अधिक बढ़ता जाता है। सौ बार धोया हुआ घी घाव, दाह, मोह और ज्वर का नाश करता है। घी में दूसरे गुण दूध जैसे होते हैं।

गाय के घी को धोये बिना फोड़े आदि चर्म रोगों पर लगाने से जहर के समान असर होता है, वैसे ही धोये हुए घी को खाने से विषवत् असर होता है। यानी फोड़े पर धोया हुआ घी लगाना चाहिये, पर धोया हुआ घी कभी खाना नहीं चाहिये। ज्वर, कोष्ठबद्धता, विषूचिका, अरुचि, मन्दाग्नि और मदात्यय रोग में नया घी अपकारी है। पुराना घी यदि एक वर्ष से ऊपर का हो तो मूर्च्छा, मूत्रकृच्छ्र, उन्माद, कर्णशूल, नेत्रशूल, शोथ, अर्श, व्रण और योनिदोष इत्यादि रोगोंमें विशेष हितकारी है।

गाय के घी का उपयोग

(१) आधा शीशी के ऊपर—गाय का अच्छा घी सवेरे शाम नाक में डाले, इस से ७ दिन में आधाशीशी बिल्कुल दूर हो जायगी। अथवा प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व एक तोला गाय का घी और और एक तोला मिश्री मिलाकर तीन दिन तक खिलावे तो निश्चय ही आराम होता है।

(२) नाक से खून गिरने पर—गाय का अच्छा घी नाकमें डाले।

(३) पित्त सिरमें चढ़ जाने पर—अच्छा घी माथेपर चुपड़ दे, इससे चढ़ा हुआ पित्त तत्काल उतर जाती जाता है।

(४) हाथ पैर में दाह हो तो गाय का अच्छा घी चुपड़ दे।

(५) ज्वर के कारण शरीर में अत्यन्त दाह होता हो तो घी को १०० या १००० बार धोकर शरीर पर लेप करे।

(६) धतूरा अथवा रसकपूर के विषके ऊपर—गायका घी खूब पिलावे।

(७) शराब का नशा उतारने के लिये--दो तोला घी और दो तोला शक्कर मिलाकर खिलावे।

(८) गर्भिणी के रक्तस्रावके ऊपर--१०० वार धोया हुआ घी शरीर पर लेप करे।

(९) चौथिया ज्वर, उन्माद और अपस्मार पर--गाय का घी, दही, दूध और गोवर का रस इनमें घी को सिद्ध करके पिलावे।

(१०) जले हुए शरीर पर—गाय के धोये हुए घी का लेप करे।

(११) सिर दर्दके ऊपर—गायका दूध और घी इकट्ठा करके अञ्जन करे। इससे नेत्र की शिराएं लाल हो जाती हैं और रोग चला जाता है।

(१२) बालकों की छाती में—कफ जम गया हो तो गाय का पुराना घी छाती पर लगा कर उसे मालिश करे।

(१३) शरीर में गर्मी होने से रक्त खराब होकर शरीर के ऊपर तांबे के रंग के काले चकत्ते हो जायं और उन की गांठ शरीर के ऊपर निकल आवे तब पहले जोंक से रक्त निकलवा दे, पीछे पीतल के बर्तन में गाय का घी १० तोला अथवा आधा गाय और आधा बकरी का घी लेकर उसमें पानी डालकर हाथ से खूब फेंटे और वह पानी

निकाल कर दूसरा पानी डाले। इस प्रकार १०० वार पानी से धोवे। उसमें २॥ तोला फुलायी हुई फिटकिरी का चूर्ण डालकर घोटे और उसे एक मिट्टी के वर्तन में रक्खे। इसे नित्य सोते वक्त गांठ बने हुए सब स्थानों पर लेप करने से शरीर में जमी हुई गरमी कम हो जाती है, कुछ ही दिनों में शरीर से दाह मिट जाता है, रक्त शुद्ध हो जाता है और यह दुष्ट रोग नष्ट हो जाता है।

(१४) तृष्णा-रोगके ऊपर—घी और दूध मिलाकर पिलावे।

(१५) दाह के ऊपर—१०० से १००० वार धोये हुए घी को शरीर पर चुपड़े।

(१६) हिचकीपर— गाय का घी पिलावें।

(१७) सन्निपातज विसर्प के ऊपर—१०० वार धोये हुए घीका वारम्वार लेप करे।

(१८) गरमी के ऊपर—गाय के घीमें सीप का भस्म डालकर उसे खरल करके लेप करे।

(१९) सर्प के विष के ऊपर—पहले २० से ४० तोला घी पीवे, उसके पाव घंटे वाद थोड़ा उष्ण जल जितना पी सके उतना पीवे। इससे उलटी और दस्त होकर विषका शमन हो जाता है। जरूरत हो तो दूसरे वक्त भी घी और पानी पिये।

गौमूत्र

तुर्श, कड़वा, तीख, लघु, खारा, गरम, तीक्ष्ण, पाचन, अग्निदीपन, भेदक, पित्तकारक, मेधाप्रद, किन्चित, मधुर, सारक, लेखन, और बुद्धिवर्द्धक होता है। और कफ, वायु, कुष्ट, गुल्म, उदर, पाण्डु, चित्रि, शूल, अर्श, कण्डु, दमा, आम, भ्रम, ज्वर, आनाह वायु, खांसी, मलस्तम्भ, सूजन, मुखरोग, नेत्ररोग, त्वचा-रोग, स्त्रियों का अतिसार और मूत्र रोग-इन सबका नाश करता है। सब मूत्रों की अपेक्षा गोमूत्र में अधिक गुण होते हैं।

गौमूत्र का उपयोग

(१) कफरोग पर—केवल गोमूत्र पिलावे।

(२) रेचन के लिये—जितनी वार रेचन देना हो उतनी बार गोमूत्र कपड़े में निचोड़ कर पिलाना चाहिये।

(३) उदररोग और भारपर—गोमुत्र में शक्कर और नमक महीन पीसकर समभाग डालकर पिलावे अथवा गोमूत्र मे सेंधा नमक और राई का चूर्ण डालकर पिलाना चाहिये।

(४) बराध (बच्चों के उदरोग) पर—गोमूत्र दो वक्त लेकर उसमे हल्दी डालकर पिलावे।

(५) उदर रोग और बच्चों के पेट के आफरे या डब्बे पर—गोमूत्र ४ तोला लेकर उसमे नारियल को गिरी पैसा भर और खरवत (फल्गु) का सूखा पत्ता पैसा भर घिसकरके पिलादे इससे पेट के सब रोग अलग होकर मलद्वारा से निकल जाते हैं। बालकों को यह ओषधि १/४ और १/८ प्रमाण में दे।

(६) पाण्डु रोग पर—प्रतिदिन सवेरे शक्ति के अनुसार गोमूत्र वस्त्र से छानकर रोग के न्युनाधिक जोर के अनुसार २१ या ४२ दिन तक सेवन करावे।

(७) कान बहने पर—गरम गोमूत्र से कान धोवे।

(८) स्त्रियों के प्रसूतिरोग होने के—बाद अथवा किसी कारण से गर्भाशय गाँठ हो गयी हो अथवा शरीर में सूजन आ गया हो तो गोमूत्र रोज दिन में दो बार चार चार तोले पिलावे।

(९) जीर्णज्वर,पाण्डु तथा सूजनके ऊपर—गोमूत्र चिरायते के फांट में मिलाकर ७ दिन तक दिन में दो बार पिलावें।

(१०) उदर रोग पर—गोमूत्र का क्षार एक माशा दिन में दो वक्त घीके साथ दें। इससे पुराना उदर रोग भी निश्चयपूर्वक दूर हो जायगा।

(११) मूत्रकृच्छ्रके ऊपर—रोज सवेरे दो तोला गोमूत्र जल में मिलाकर पिलाना चहिये।

(१२) आंखों में दाह, सुस्ती, कब्जियत और अरुचिके ऊपर—गोमूत्र में थोड़ी शक्कर मिलाकर पिलाना चाहिये।

(१३) सफेद दाग और चकत्तों के ऊपर—हरताल पत्र, बावची तथा मालकांगनी गोमूत्र में दिन भर भिगोकर पीछे खरल करके बटोरकर छाया में डाल दे। बाद को नीबू के रस में घिस कर लेप करे।

गोबर

दुर्गन्धनाशक, शोधक, सारक, शोषक, वीर्यवर्द्धक, पोषक, रसयुक्त कान्तिप्रद और लेपन के लिए स्निग्ध तथा मल वगैरह को दूर करने वाला होता है।

गाय के गोबर का उपयोग

(१) मृतगर्भ बाहर निकालने के लिये—गोबर का रस ७तोला गायके दूध में पिलावे।

(२) गुदभ्रंश के लिये—गोबर गरम करके सेंक करे।

(३) पसीना बन्द करने के लिये—सुखाये हुए गोबर और नमक के पुराने बर्तन इन दोनों के चूर्ण का शरीर पर लेप करे।

(४) खुजली के लिये—गोबर शरीर में लगाकर गरम पानी से स्नान करे।

गाय के गोबर की राख

शोधक, व्रण को दूर करने वाली, दुर्गन्धिनाशक, धान्य-वर्द्धक, कृमि-कीटनाशक और शीतनिवारक होती है।

गाय के गोबर की राख का उपाय

(१) शीतला से फूट निकले छालों पर—राख को कपड़े से छानकर उससे भरदे। इस पर यही उपाय मुख्यतः श्रेष्ठ है।

(२) साधारण व्रणके ऊपर—घी में राख मिला कर लेप करे।

(३) अन्न को राखमें भरकर रखने से घुन आदि नहीं पड़ते।

(४) पेटमें छोटे छोटे कृमि हुए हों तो गोवर की सफेद राख २ तोला लेकर १० तोला पानी में मिलाकर पानी कपड़े से छान ले। ३ दिन तक सवेरे शाम इस पानी को पिलावे।

(५) दांतकी दुर्गन्धि, जन्तु और मसूड़े के दर्द पर—गायके गोवर को जलावे, जब उसका धुआं निकल जाय तब उसे पानी में डालकर बुझा ले, फिर कोयला करे। पीछे चूर्ण करके कपड़छान करे, इस मंजन को डिब्बे में रख दें। रोज इस मंजन से दांत साफ करने से दांतके सब रोग नष्ट होते हैं। 'श्रीजीवदया'

——— 1221

प्रान्त वारभैंसों की संख्या तथा जन संख्या और एक सौ आदमियों पर भैंसें

नं०	नाम प्रान्त	जनसख्या १६४०	भैंसोंकी संख्या १६४०	एकसौ मनुष्यों पर भैंसें	जनसंख्या अनुमान १६४५	भैंसोंकी सं० १६४५	एकसौ मनु० पर भैंसें
१	मद्रास	४६३४२०००	६१२२३०७	१२	५११६१०५००	६३१५३८०	१२
२	बम्बई	२०८५८०००	२४८५०८४	१२	२२२६१०००	२३५३७६४	७
३	बंगाल	६०३१४०००	१०७६२६६	११	६४७८५०००	११३६२२४	२
४	यू० पी०	५५०२१०००	६२६२२२६	१७	८८०८१०००	८५२३२४३	१०
५	पंजाब	२८४१६०००	६१६१८६५	२२	३०८३८०००	६६२६६२०	२१
६	बिहार	३६३४००००	२८६१७०८	८	३८३२४५००	२६६२०००	७
७	सी० पी०	१६८२२०००	२१३६३१५	१३	१७६७१५००	२१६८५६०	१२
८	आसाम	१०२०५०००	५४४००२	५	१०६६६०००	५४४००२	३
६	सीमाप्रान्त	३०३८०००	२७१०६१	६	३३४४५००	२८६३०२	६
१०	उड़ीसा	८७२६०००	३८००७८	४	६०८०५००	३८००७८	४
११	सिंध	४५३७०००	६२२००८	२०	४८६२०००	७०१६१७	१५
१२	अजमेर मा.	५८४०००	५०१०७	६	६२२५००	८२५४१	१३
१३	ब्रिलोचि०	५०२०००	६८७८	१	५२१०००	८८८३	२
१४	कुर्ग	१६६०००	२८७४५	१७	१७५०००	२४७५६	१४
१५	देहली	६१७०००	५१७३६	६	१०५७५००	७२२१८	७
	कुल जोड़	२६५८२७०००	३२०६४६६६	११	३४४५६०५००	३१८७६१८८	६

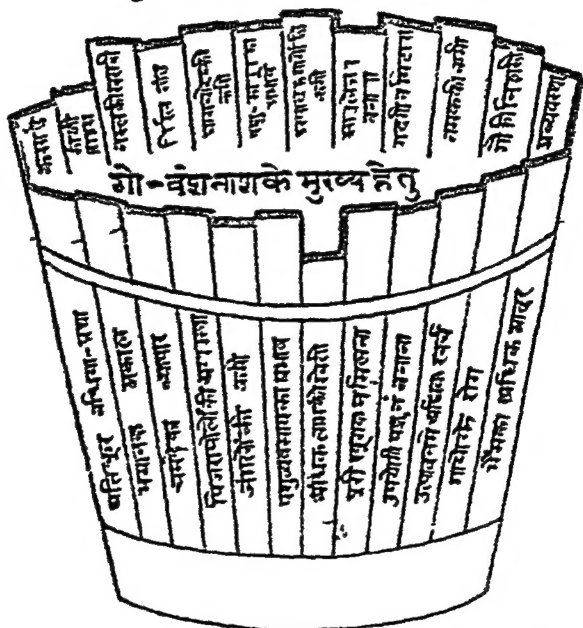
प्रांत वार गौवंश संख्या तथा जन संख्या और एक सौ जन संख्या पर गौवंश

नं०	नाम प्रान्त	जन संख्या १९४०-४१	गोसंख्या १९४०-४१	एक सो मनुष्यों पर गायें	जन संख्या १९४५ अनुमान	गोसंख्या १९४५	एक सौ मनुष्यों पर गायें
१	मद्रास	४९३४२०००	१५९९७०९५	३२	५१९१०५००	१६३५८५६१	३१
२	बम्बई	२०८५८०००	७२४८६११	३४	२२२९१०००	६९२२९२४	३१
३	बंगाल	६०३१४०००	२२६२३३६७	३६	६४७८५०००	२१४०६३७०	३१
४	यु० पी०	५५०२१०००	२३१७७३३६	३२	८८०८१०००	२१०९८२४०	२४
५	पंजाब	२८४१९०००	९२५२५६२	३३	३०८३८०००	९४८३५३८	३०
६	विहार	३६३४००००	१२५६४२५९	३४	३८३२४५००	११२८९०००	२९
७	सी० पी०	१६८२२०००	१११३९५४५	६६	१७६७१५००	११३९८६४३	६५
८	आसाम	१०२०५०००	५९५१२१९	५८	१०९९६०००	५९५१२१९	५४
९	सीमा प्रांत	३०३८०००	७६१६९९	२५	३३४४५००	८११५३२	२४
१०	उड़ीसा	८७२९०००	४४८३२१८	५१	९०८०५००	४४८३२१८	४९
११	सिंध	४५३७०००	१७८२७३३	३९	४८६२०००	१९५९३३४	४०
१२	अजमेर मा०	५८४०००	१४८०८२	२४	६२२५००	२६२७६९	४२
१३	बिलोचिस्तान	५०२०००	१८१३९७	३६	५२१०००	१५९९६८	३१
१४	कूर्ग	१६९०००	११४५०६	६८	१७५०००	१२२५१०	७०
१५	देहली	९१७०००	९१०८७	१०	१०५७५००	१०८७१९	१०
	कुल जोड़	२९५८२७०००	११५५१६७१६	३९	३४४५६०५००	१११८१६४४६	३७

महात्मा गांधी जी की सम्मति

मेरे विचार के अनुसार गोरक्षा का सवाल स्वराज्य के सवाल से छोटा नहीं। कई बातों में मैं इसे स्वराज्य के सवाल से बड़ा मानता हूँ। जब तक हम यह नहीं जान लें कि गोरक्षा किस तरह करनी चाहिये तब तक स्वराज्य जैसी कोई चीज नहीं क्योंकि उसमें हिन्दू धर्म की कसौटी है।

गोवंश के नाश के कारणों पर विचार करके दूर करने का उपाय करें।



गौवंश रक्षिणी सभा, हिसार के प्रकाशन

१. गाय हैं क्यों (उर्दू) ।=)
२. चमड़े के लिए पशुओं का भयङ्कर वध ।) सचित्र ।।)
३. गौ संकट निवारण ≤)　　४. दूध की नदी ।–)
५. गायों का क्रन्दन =)　　६. गाय या भैंस ।)
७. गौ-वंश नाश का हेतु =)　　८. दवाओं का सहारा (उर्दू) =
९. गौरक्षा का राज मार्ग १) (छप रही है)